नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन
मार्च '९१
होली अंक
४ रुपए

डायमण्ड कॉमिक्स में

डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट

चाचा चौधरी -I	पिंकी -III	मामा भांजा -I	लम्बू मोटू -I	मोटू पतलू -III	तेनाली राम -I	फैण्टम -II
चाचा चौधरी -II	बिल्लू -I	मामा भांजा -II	लम्बू मोटू -II	मोटू पतलू -IV	तेनाली राम -II	फैण्टम -III
चाचा चौधरी -III	बिल्लू -II	राजन इकबाल -I	लम्बू मोटू -III	मोटू पतलू -V	फौलादी सिंह -I	फैण्टम -IV
चाचा चौधरी -IV	बिल्लू -III	राजन इकबाल -II	लम्बू मोटू -IV	मोटू पतलू -VII	फौलादी सिंह -II	फैण्टम -V
चाचा चौधरी -V	बिल्लू -IV	राजन इकबाल -III	लम्बू मोटू -V	मोटू पतलू -VIII	फौलादी सिंह -III	फैण्टम -VI
चाचा चौधरी -VI	ताऊजी -II	राजन इकबाल -IV	छोटू लम्बू -I	मोटू पतलू -IX	फौलादी सिंह -IV	फैण्टम -VII
चाचा चौधरी -VII	ताऊजी -III	चाचा भतीजा -II	छोटू लम्बू -II	महाबली शाका -I	फौलादी सिंह -V	फैण्टम -VIII
पिंकी -I	ताऊजी -V	चाचा भतीजा -III	मोटू पतलू -I	महाबली शाका -II	फौलादी सिंह -VI	फैण्टम -IX
पिंकी -II	ताऊजी -VI	चाचा भतीजा -IV	मोटू पतलू -II	महाबली शाका -III	फैण्टम -I	

डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज नई दिल्ली-110 002

एकता परेड
हम सब, पुरुष, स्त्री और बच्चे हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी.... पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से हजारों की संख्या में, गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होते हैं।
और एक बार फिर प्रदर्शित करते हैं अपनी एकता की भावना।
जाति, धर्म, क्षेत्रीय और भाषायी बंधन तोड़ने के लिये समर्पित करते हैं अपने आपको, और करोड़ों भारतीयों के उत्थान के लिये प्रेरणा देते हैं पूरे राष्ट्र को।
एकता परेड की इस भावना को सफल बनायें
एक जुट होकर आगे बढ़ें
डीएवीपी 90/751
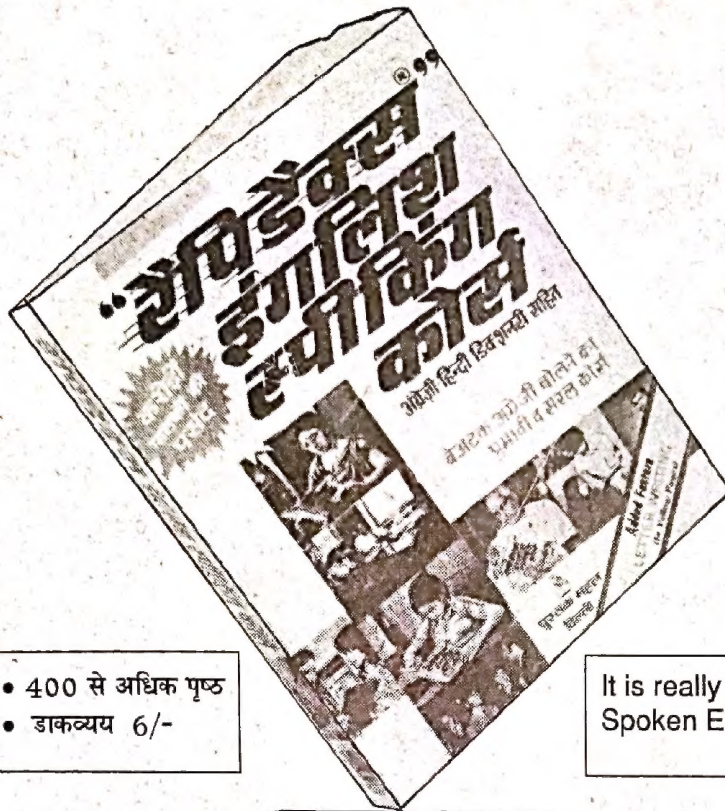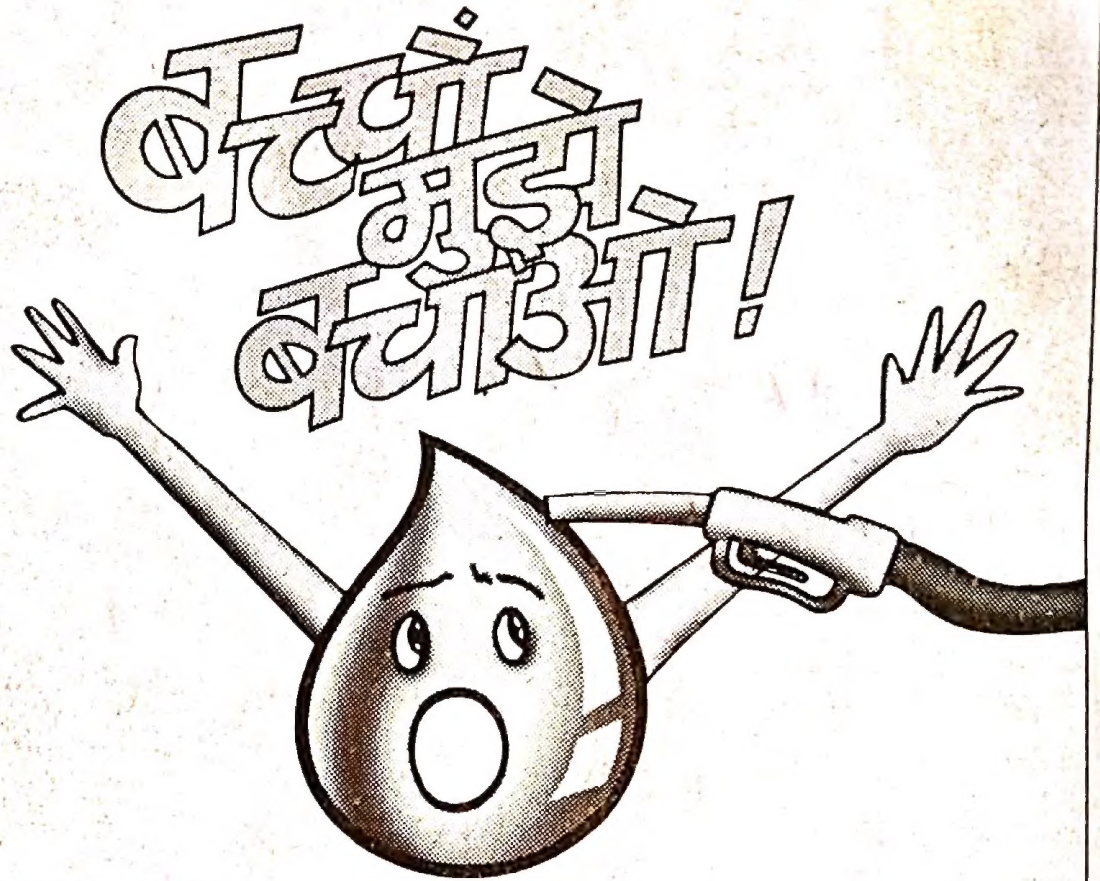
मैं बहुत कीमती हूँ लेकिन लगता है कि बहुत से लोग उसकी परवाह ही नहीं करते। तरह-तरह से मुझे बर्बाद कर रहे हैं – सड़कों पर, खेतों में, रसोईघरों और कारखानों में। हर जगह।

मुझे (तेल) तुम्हारी मदद चाहिए ताकि लोगों को मैं यह बता सकूं कि उन्हें मुझे संजो कर रखना होगा। क्योंकि तभी हमारा देश तेल संकट से उबर सकेगा। इससे उन्हें भी धन की बचत करने में मदद मिलेगी।

तुम ऐसे नए और आकर्षक नारे लिख कर यह काम कर सकते हो, जिसमें हर व्यक्ति से यह कहा जाय कि वह समझदारी और सावधानी के साथ मेरा उपयोग करे।

– पहला इनाम 5000/- रुपये
– दूसरा इनाम (2) 2,000/- रुपये प्रत्येक
– तीसरा इनाम (10) 1,000/- रुपये प्रत्येक
– सांत्वना इनाम (100) 100/- रुपये प्रत्येक

नियम :–

1. हर बच्चा अंग्रेजी/हिन्दी मे ज्यादा से ज्यादा दो प्रविष्टिया भेज सकता है, इन विषयो पर, डीजल, किरोसन, पेट्रोल, कुकिंग गैस
2. प्रतियोगिता के लिए उम्र की अधिकतम सीमा सोलह वर्ष है। उम्र का प्रमाण देने के लिए जन्म के प्रमाण पत्र की एक प्रति या स्कूल से प्रमाण-पत्र देना होगा।
3. प्रविष्टिया 28/2/91 तक नीचे लिखे पते पर पहुँच जानी चाहिए।
4. इस प्रतियोगिता मे पी सी आर ए के कर्मचारियों के आश्रितों एव उनकी विज्ञापन एजेंसियो के कर्मचारियों के आश्रितों को छोड़कर सभी भारतीय बच्चे भाग ले सकते हैं।
5. निर्णायक मडल का फैसला अंतिम होगा और इस बारे में कोई पत्र-व्यवहार नही किया जाएगा।
6. जो प्रविष्टिया पढ़ी नहीं जा सकेंगी, वे अयोग्य समझी जाएंगी।
7. विजेताओ को व्यक्तिगत रूप मे रजिस्टर्ड डाक द्वारा सूचना भेजी जाएगी।

प्रविष्टियां इस पते पर भेजिए : पी सी आर ए. 603, न्यू दिल्ली हाऊस 27, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली-110 001

कृपया लिफाफे पर 'स्लोगन प्रतियोगिता' जरूर लिखें

पेट्रोलियम कन्सरवेशन रिसर्च ऐसोसिएशन

R K SWAMY/BBDO PCRA 6016 HIN

नंदन मार्च '९१

वर्ष : २७ अंक : ५

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : मेजर सी. प्रकाश;
एलबम : सूरज एन. शर्मा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
मुख्य उप-सम्पादक : देवेंद्र कुमार
वरिष्ठ उप-संपादक : रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा
उप-संपादक : डा. चंद्रप्रकाश, नरेन्द्र कुमार
चित्रकार : प्रशांत सेन

आओ बात करें

दर्जी का लड़का था अलादीन। बड़ा आलसी। बाप चल बसा, अलादीन और भी आलसी हो गया। मां की मदद न करता। एक अफ्रीकी जादूगर वहां आया। उसने सोचा कि अलादीन जमूरे का काम तो कर ही सकता है। बोला अलादीन से—"मैं तेरा चाचा हूं। बहुत दिनों पहले परदेस चला गया था। अब लौटा हूं। तू मेरे साथ रहेगा, तो मौज करेगा।"

वह जादूगर अलादीन को शहर से दूर ले गया। वहां गुफा के दरवाजे से पत्थर हटाया। बोला—"बेटे अलादीन, ले यह जादुई अंगूठी और चला जा भीतर। डरियो मत। मुसीबत में अंगूठी तेरे काम आएगी। गुफा के भीतर एक जादुई चिराग है, वह ले आ। फिर तुझे मालामाल कर दूंगा।"

अलादीन गुफा में उतर गया। वहां हीरे-मोती का अकूत खजाना था। उसने अपनी सारी जेबें भर लीं। पुराना जादुई चिराग भी ले लिया। पर जादूगर चाचा तो चालाक था। उसने चिराग मांगा, तो अलादीन ने नहीं दिया। बोला—"मुझे बाहर तो निकालो, तभी दूंगा यह चिराग।"

जादूगर ने अलादीन को गुफा में ही बंद कर दिया। बोला—"अब तू बाहर नहीं निकल पाएगा।"

अलादीन गुफा में बैठा-बैठा परेशान। तभी उसे अंगूठी का ध्यान आया। उसने अंगूठी को रगड़ा, तो तुरंत जोरदार आवाज हुई। अंगूठी का जिन्न आ खड़ा हुआ। बोला—"मालिक, हुक्म दो मुझे।"

पहले तो अलादीन घबराया। फिर बोला—"अरे, भई! मुझे गुफा से बाहर तो निकालो।"

"जो हुक्म मेरे मालिक।"—जिन्न बोला।

क्षण भर बाद ही अलादीन गुफा से बाहर था। वह घर पहुंचा। पुराना-सा चिराग लेकर। मां बोली—"ला बेटा, मैं इसे साफ कर दूं।"

चिराग को रगड़ना था कि जोरदार धमाका हुआ। इस बार अंगूठी वाले जिन्न से भी अधिक जबर्दस्त जिन्न हाजिर हो गया। बोला—"मुझे हुक्म दो मेरे मालिक! मैं इस चिराग को रगड़ने पर हाजिर हो जाता हूं। कोई भी काम मेरे लिए असम्भव नहीं।"

मां-बेटा दोनों भूखे थे। जिन्न से कहा तो पलक झपकते ही उसने तरह-तरह के पकवान-मिठाइयों का ढेर लगा दिया।

कुछ ही दिनों में अलादीन खूब मालदार हो गया। उसने सुल्तान और शहजादी के लिए बेशकीमती उपहार भेजे। फिर शहजादी से शादी कर ली। शानदार महल में रहने लगा।

जादूगर को पता चल गया था कि अलादीन तो गुफा से बच निकला। जादुई चिराग की बदौलत मौज से दिन काट रहा है। उसके तन-बदन में आग लग गई। उसने भेस बदला और अलादीन के महल के चक्कर लगाने लगा। एक दिन अलादीन कहीं गया हुआ था। जादूगर आवाज लगाने लगा—"पुराने चिराग के बदले, नया ले लो।"

अलादीन की बीवी ने सोचा कि पुराना चिराग देकर क्यों न नया ले ले। उसे करामाती चिराग के बारे में कुछ भी पता न था। बस, उसने जादुई पुराना चिराग दे दिया और नया ले लिया। अब क्या था, जादूगर ने चिराग रगड़ा। जिन्न हाजिर हुआ। उसे हुक्म दिया—"ले चल महल और शहजादी को अफ्रीका में दूर देश।"

जिन्न तो उसी का हुक्म बजाता जो चिराग रगड़ता। जादूगर, महल और शहजादी वहां से बहुत दूर जा पहुंचे। जब अलादीन लौटा, तो हक्का-बक्का—सब कुछ छूमंतर हो गया था। अलादीन ने हार नहीं मानी। अंगूठी के जिन्न की मदद से जादूगर के देश में जा पहुंचा। गुपचुप शहजादी से मिला। उसे सब कुछ बताया और उसकी मदद से जादूगर को खूब पटखनी दी। इसके बाद शहजादी और अलादीन सुख से रहे।

सैकड़ों साल पहले अरब देशों में ऐसे किस्से खूब गढ़े गए। बगदाद का नाम दुनिया भर में लिया जाता था। आज वही बगदाद झुलस रहा है। कहां है वह जादुई चिराग, जो दुनिया को शांति दे।

अगला अंक प्राचीन-कथा विशेषांक है। उसमें खाड़ी देशों पर भी कुछ सामग्री देंगे।

—तुम्हारे भइया

फिर आया बसंत

—संजीव अग्रवाल

दीरम अनोखा गांव था ऊंचे पर्वतों के बीच एक छोटी-सी घाटी में बसा हुआ। वहां जैसे हर समय बसंत का मौसम रहता। पेड़ों के पत्ते कभी पीले न पड़ते, फूल कभी न मुरझाते।

लोग दीरम को देवताओं का वरदान कहते। सचमुच उस जैसा सुखी सम्पन्न गांव दूसरा न था। आस-पास थींऊबड़-खाबड़ चट्टानें, जहां हरियाली का एक तिनका न उगता। कोई दूसरी बस्ती भी नहीं थी।

किसी की समझ में न आता कि यह क्या चमत्कार था। जो एक बार दीरम आ जाता, वहां से जाना न चाहता। दीरम के अनोखे मौसम की चर्चा दूर-दूर तक थी। लोग कहते—'भई गांव हो,तो दीरम जैसा !'

असल में दीरम पर एक परी की कृपा थी। हर रात परी अपने हंसरथ पर बैठकर आती। हंस गांव के पास वन में उतरते, अपनी थकान मिटाते। परी फूलों के बिछौने पर आराम करती। फिर अपनी राह चली जाती।

जब परी आती, तो गांव नींद में डूबा होता। किसी को कुछ पता न चलता। हां, फूलों की सुगंध और बढ़ जाती। फल अधिक रसीले हो जाते। अमर बसंत का वरदान देकर जाती थी परी दीरम गांव को।

परी का रथ वन में उतरता, तो एक तरफ हल्का प्रकाश फैल जाता। संगीत गूंजने लगता। लेकिन यह सब देखने के लिए कोई गांव वाला वहां न होता। परी सब पर अपनी मोहिनी डाल देती थी।

एक-दो बार रात में वहां से गुजरते हुए कुछ लोगों ने वह विचित्र रोशनी देखी थी। संगीत की आवाज सुनी थी। वे डरकर भाग गए थे। उन्होंने लोगों से कहा था—'दीरम के पास जंगल में भूत-प्रेतों का वास है।' बेचारे ! इसके अलावा और वे समझ भी क्या सकते थे !

एक रात की बात, परी का हंस रथ दीरम गांव के पास नहीं उतरा। उतरता कैसे ? परी का रथ खींचने वाले हंस बीमार हो गए थे। अब क्या हो। उस रात हंस रथ परी लोक से नहीं चला। परी अपने महल में उदास बैठी रही। वह हर रात अपनी सखी से मिलने जाती थी। उसकी सखी जलपरी नील समुद्र में रहती थी। उस रात जलपरी समुद्र से निकलकर सखी की प्रतीक्षा करती रही, बहुत देर हो गई। पर परी न आई। आती कैसे !

अगली रात परी ने नया रथ लिया। उसे हिरन खींच रहे थे। हिरन, जिनके बदन से इंद्रधनुष का प्रकाश फूटता था। हिरन जो आकाश में बहुत तेज दौड़ते थे।

तो परी हिरन रथ में बैठकर चली। रथ तेजी से उड़ा और उड़ता चला गया। नदियां, पर्वत, घाटियां लांघता हुआ बात की बात में समुद्र तट पर जा पहुंचा। वहां जलपरी अपनी सखी की प्रतीक्षा में थी। दोनों बातें करने लगीं। परी भूल गई। उसे याद न रहा कि वह आज दीरम गांव नहीं गई थी।

उस रात दीरम के निवासियों को ठीक से नींद न आई। फूल मुरझाने लगे। फिर तो अगली रात भी वैसा ही हुआ। हिरन परी का रथ दूसरे रास्ते से समुद्र तट पर ले गए। इसी तरह दिन बीतते गए। परी ने दीरम गांव की तरफ आना ही छोड़ दिया।

दीरम गांव की तो जैसे आफत आ गई। न जाने कहां चला गया बसंत ! सदा सुगंध बिखेरने वाले फूल मुरझा गए। पत्ते पीले पड़कर झड़ गए। न फूल रहे, न हरियाली। अब उस घाटी का मौसम भी

आस-पास के दूसरे स्थानों जैसा हो गया— कठिन, कठोर, बरफीला। हर समय सर्द हवाएं बहने लगीं। फसलें चौपट हो गईं। फलों के बाग सूने हो गए।

गांव के बड़े-बूढ़े कहते—'न जाने क्या आफत आने वाली है ? ऐसा तो कभी नहीं देखा।' सबसे पहले बच्चे बीमार हुए। फिर बड़ों ने खाट पकड़ ली। गांव के लोग जरा-जरा-सी बात पर आपस में झगड़ने लगे। स्वर्ग को नरक बनते देर न लगी।

एक सुबह कुछ लोग गांव छोड़कर चले गए। गांव की चौपाल में बैठे बूढ़े मुखिया ने उदास स्वर में पूछा—"कहां जा रहे हो? कब आओगे ?"

जवाब मिला—"जहां भाग्य ले जाए। यहां अब कभी नहीं आएंगे। दीरम गांव अब रहने लायक नहीं रहा।" फिर तो रोज ही कुछ परिवार दीरम गांव छोड़कर जाने लगे।

रात को गांव में कुत्तों के भौंकने का स्वर सुनाई देता। इक्के-दुक्के मकानों में ही रोशनी दिखाई पड़ती। लोग कहते— 'दीरम को किसी की नजर लग गई।'

थोड़े ही दिन में सुख-सम्पन्न दीरम गांव खंडहर बन गया। सब चले गए। रह गए —दो जने, बूढ़ा मुखिया धनराज और उसकी बीमार पत्नी बंतो। धनराज ने लोगों को समझाकर रोकना चाहा। लेकिन, वह हर जाने वाले से कहता —"अरे, सुख भोगा, तो दुःख भी सहो। कायरों की तरह भागते क्यों हो ? मेरा मन कहता है, जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा।" पर धनराज की बात पर भला कौन विश्वास करता ?

एक रात दीरम में केवल एक घर में हल्का उजाला था। वहां थे धनराज और बंतो। वह रो रही थी। धनराज पत्नी को समझा रहा था। फिर वह लाठी लेकर निकला। पूरे गांव का चक्कर लगा आया। कहीं कोई नहीं था। सब जा चुके थे।

रोज बंतो धनराज से गांव छोड़ देने को कहती। वह कहता—"अच्छा, आज भर और रुक जाओ। शायद स्थिति ठीक हो जाए।" आखिर बंतो समझ गई कि धनराज गांव छोड़कर नहीं जाएगा। फिर उसने भी कहना छोड़ दिया।

उन्हीं दिनों एक रात की बात है, परी के बीमार हंस स्वस्थ हो गए। उस रात परी काफी समय बाद हंस रथ पर बैठी। हंस उसे फिर से दीरम गांव के पास ले आए। वन में हल्का प्रकाश छा गया। संगीत गूंजने लगा। लेकिन परी के बिछौने के लिए फूल कहां थे ? सब तरफ नंगी डाली वाले पेड़ चुप खड़े थे। बरफीली हवा तेजी से बह रही थी।

परी ने सोचा, ध्यान लगाया और वह समझ गई कि ऐसा क्यों हुआ है ? उसने एक सूखे पेड़ को छुआ। पेड़ तुरंत हरे पत्तों से लद गया। सब तरफ फूल खिल उठे। हवा में सुगंध तैरने लगी। बर्फ गिरनी बंद हो गई। थम गई तूफानी हवा।

परी धनराज के घर के बाहर जा खड़ी हुई। उसे दोनों पर दया आ रही थी। मन ही मन अपनी भूल पर क्रोध आ रहा था। उसी की गलती से हरा-भरा दीरम गांव उजड़ गया था।

उस रात धनराज और बंतो को गहरी नींद आई। सुबह धनराज घर से बाहर आया, तो हैरान रह गया। सब कुछ बदल गया था। पेड़, पौधे हरे-भरे हो उठे थे। सब तरफ फूल खिले थे।

धनराज जोर से चिल्लाया—"बंतो, जल्दी से बाहर आ। मैंने कहा था, एक दिन सब ठीक हो जाएगा। पर मेरी बात किसी ने नहीं मानी। सब चले गए। अब मैं उन्हें कैसे बुलाऊं। कहां से लाऊं !"

लेकिन धनराज को अधिक परेशान नहीं होना पड़ा। दूसरे दिन कुछ गांव वाले लौट आए। फिर एक-एक करके बाकी लोग भी वापस आ गए। धनराज हरेक से पूछता—"तुम्हें किसने बुलाया? क्यों आए ?

सबका एक ही जवाब था--"हमें रात को सपने में अपना गांव पहले जैसा दिखाई दिया। आवाज सुनाई दी—लौट आओ, चले आओ।" उनकी बात सच थी। परी ने उसी रात सब गांव वालों को यही सपना दिखाया था।

दीरम का खोया बसंत लौट आया था। परी ने प्रण किया—अब कभी दीरम आना नहीं भूलेगी।
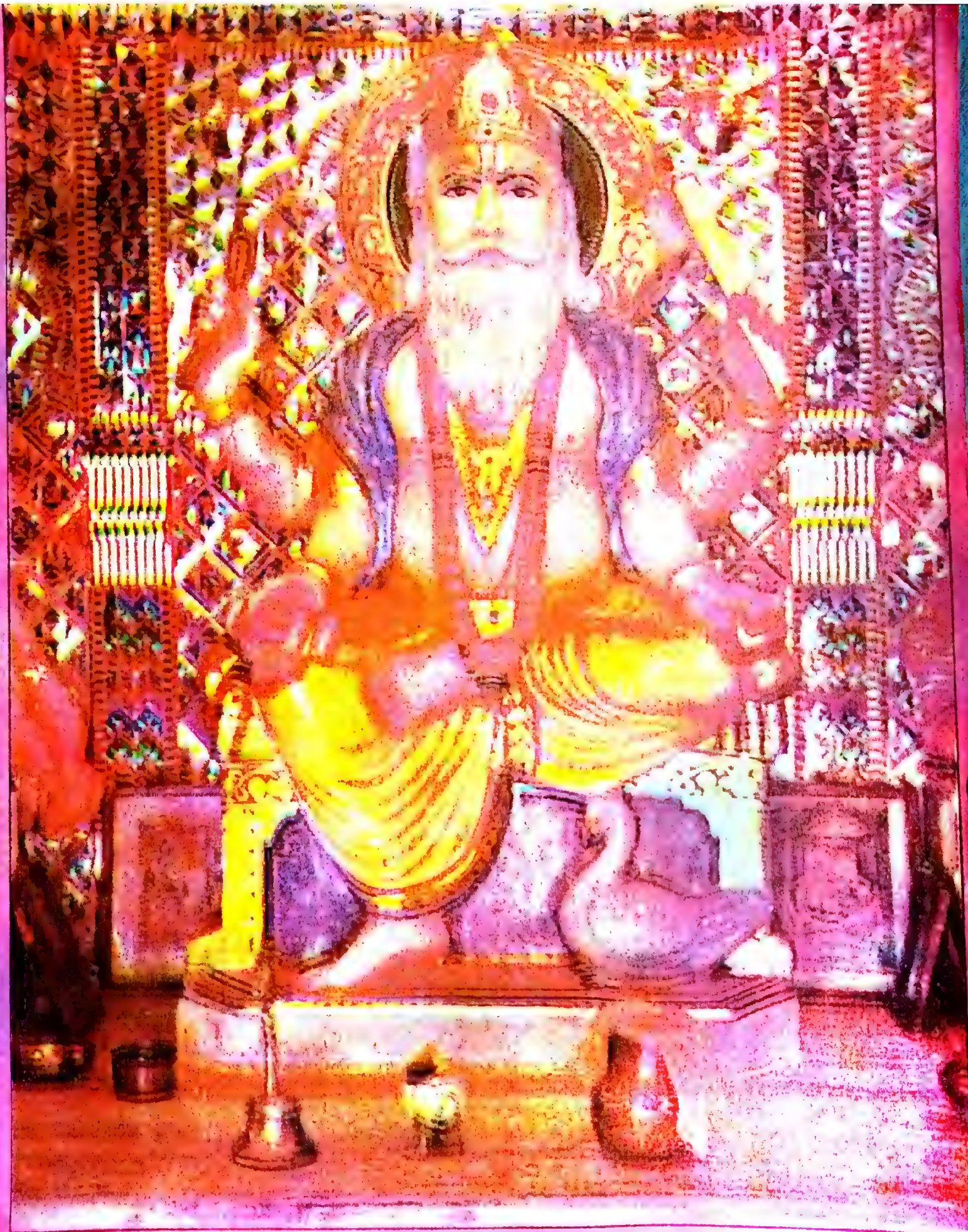
नंदन एलबम :८६

विश्वकर्मा

देवताओं के शिल्पी

बोराक का शैतान

—देवेन्द्रकुमार

उसका नाम था बोराक द्वीप। हरा-भरा सुंदर। वहां थे घने वन, जिनसे खूब फल-फूल मिलते। धरती उपजाऊ थी। मौसम हर समय सुहावना रहता। समुद्र में उठने वाले तूफान बोराक को कभी परेशान न करते। जो भी वहां एक बार आ जाता, जाने का नाम न लेता। क्योंकि बोराक जैसा द्वीप दूसरा न था।

वहां काफी बड़ी बस्ती थी। लोग हेलमेल से रहते। हर काम मेल-जोल से करते। बोराक में कोई राजा न था। वहां था मुखिया। वह बोराक के बड़े-बूढ़ों की मदद से वहां का शासन चलाता था। शायद इसीलिए आसपास के दूसरे द्वीपों के लोग बोराक को 'समुद्र का स्वर्ग' कहकर पुकारते थे।

हर पूर्णिमा की रात को बोराक के निवासी एक बड़े मैदान में आ जुटते। वहां बड़ी धूमधाम से पूरे चांद का पर्व मनाया जाता। क्या बच्चे, क्या बड़े मस्ती से झूम उठते। बोराक की हवा नृत्य-संगीत से गूंज उठती।

ऐसी ही एक रात थी पूर्णिमा की। सब लोग मैदान में जमा थे। नृत्य-संगीत चल रहा था। हवा में हंसी-खुशी के स्वर उभर रहे थे। तभी एक दैत्य वहां से गुजरा। ताड़ के पेड़ जैसा ऊंचा। बड़ी-बड़ी आंखें। मुंह खोलता, तो गड़गड़ की आवाज होती।

नाचने-गाने की आवाज सुनकर दैत्य ठिठक गया। समुद्र में खड़े-खड़े उसने मैदान की ओर देखा। लोगों को प्रसन्न देखकर दैत्य जल उठा। वह किसी को खुश नहीं देख सकता था। चाहता था, सब उसके सामने चीखें-चिल्लाएं, रोएं और घरों में छिप जाएं।

दैत्य जोर से दहाड़ उठा। आकाश में जैसे बिजली-सी कौंध गई। लगा,जैसे कहीं बादल गरजे हों। मैदान में चलता समारोह रुक गया। बच्चे चीख उठे। स्त्रियां कांपने लगीं। यह देख, दैत्य अट्टहास कर उठा। लोगों की घबराहट देख, उसे मजा आ रहा था।

अंधेरे में किसी को कुछ दिखाई न दिया। बस, गरजदार आवाज सुनाई दी। आकाश में दैत्य की लाल-लाल आंखें चमक उठीं। सब लोग डरकर अपने-अपने घरों में चले गए। मैदान सूना हो गया। पूरे चांद का पर्व बीच में ही भंग हो गया था।

दैत्य समुद्र से निकलकर द्वीप पर आ गया। सूने मैदान में धम-धम करता घूमता रहा। बीच-बीच में रह-रहकर हंसता, तो पेड़ थरथरा उठते। मकानों की छतें कांप उठतीं। यह तो अनहोनी हुई थी। पर्व वाली रात द्वीप एकदम उदास और खामोश हो गया था, उस शैतान दैत्य के कारण।

रात को दैत्य बोराक के बीचों-बीच फैली पहाड़ी पर जा बैठा और इधर-उधर देखने लगा।

तभी एक नौका तट पर आकर लगी। एक आदमी तट पर उतरा। वह था बोराक के मुखिया का बेटा सूरम।

मैदान में पहुंचकर सूरम ठिठक गया। वहां छाया सन्नाटा देखकर उसका मन घबरा गया।

वह वहां से बस्ती की तरफ आ गया। मकानों के दरवाजे बंद थे। धीरे-धीरे सूरम पूरी बस्ती में घूम आया। फिर उसने अपने घर का दरवाजा खटखटा दिया।

दरवाजा खुला। सामने सूरम की मां खड़ी थी। बेटे को देखकर उसने कहा—''जल्दी से अंदर आ जा।''

सूरम की मां ने जल्दी-जल्दी पूरी घटना कह सुनाई। फिर बोली—''ऐसा तो कभी नहीं हुआ था।''

''कुछ आवाजें सुनकर सब डरकर भाग आए। चलो, बाहर चलो। मैं देखता हूं, क्या बात है?''—कह कर सूरम मकानों के दरवाजे खटखटाने लगा। साथ ही पुकार रहा था—''बाहर आओ, बाहर आओ।''

सूरम के कहने पर बस्ती वाले फिर से मैदान में आ जुटे। समारोह शुरू हो गया। सूरम ने अपने कुछ साथियों को इधर-उधर खड़ा कर दिया। उनके हाथों में धनुष-बाण थे।

पहाड़ी पर बैठे दैत्य ने हैरानी से देखा—बस्ती वाले फिर आ जुटे थे। समारोह शुरू हो गया था। तभी कड़कदार आवाज हुई। लोग कांप उठे। सूरम ने जान लिया कि गरज किस दिशा से आई थी। उसने उधर ही तीर छोड़ दिया। तीर सनसनाता हुआ गया और दैत्य के गाल में धंस गया।

सूरम ने फिर तीर चलाया। यह भी निशाने पर जा लगा। दैत्य फिर दहाड़ा। सूरम ने फिर तीरों की बौछार कर दी। उसके इशारे पर बस्ती के कई युवकों ने भी उधर ही तीर छोड़े। सूरम के अचूक तीरों से वह कुछ विचलित हो उठा।

दैत्य अब चुपचाप उधर ही घूर रहा था। चिल्लाया या गरजा नहीं। वह सोच रहा था—'मुझे कोई और तरकीब करनी होगी।'

दिन निकला। थके-मांदे बस्ती वाले सो गए। एक मछुआरा अपना जाल उठाने के लिए जा रहा था। तभी उसने देखा—सामने एक चमकदार जाल पड़ा था। मछुआरे ने जाल उठाया, तो सुनाई दिया—'यह उपहार तुम्हारे लिए है, पर इसके बारे में किसी से कुछ मत कहना।'

मछुआरा हैरान था कि आवाज सुनाई दे रही है, पर कोई दिखता नहीं। फिर वह घर की ओर लौट चला।

उसी समय एक चरवाहा ढोरों के साथ ढलान पर चढ़ रहा था, तभी उसने रंगीन कपड़ों का ढेर जमीन पर पड़ा देखा।

उस दिन द्वीप पर अलग-अलग स्थानों पर ऐसी कई घटनाएं हुईं। किसी को सोने-चांदी के बर्तन मिले, तो किसी को सिक्कों की थैलियां। एक आदमी को रंग बदलने वाले सुंदर खिलौनों की पेटी मिली।

यह सब दैत्य का छल था। उसने द्वीप पर जगह-जगह अपनी माया का जाल फैलाया था। वह इस तरह द्वीप के लोगों में फूट डालकर उन्हें नष्ट कर देना चाहता था। जब कोई आदमी उसकी रखी चीजें उठाता, तो दैत्य अदृश्य रहकर कहता—'किसी से मत कहना।'

दो-तीन दिनों में ही द्वीप के कई लोग दैत्य के चक्कर में आ गए। अब वे चुप रहते। घरों से न निकलते। कोई कुछ पूछता, तो टाल जाते।

और एक दिन तो हद ही हो गई। सूरम का छोटा भाई अरम अपने कमरे में गया और दरवाजा बंद कर लिया। सूरम ने पुकारा, तो अरम ने कहा—"मैं जरूरी काम कर रहा हूं।"

सूरम ने खिड़की से झांक कर देखा। अरम के हाथ में कोई चमकदार चीज थी। उसने दरवाजा खटखटाया, तो अरम हड़बड़ा गया। वह चीज छिपाने लगा। लेकिन वह हाथ से गिर गई। वह थी सोने की एक मूर्ति। उसमें से संगीत की आवाज आ रही थी।

सूरम ने बहुत पूछा, पर अरम चुप रहा। अंत में उसने कह दिया—"इस तरह की चीजें द्वीप पर बहुत लोगों को मिली हैं। तुम्हें नहीं मिलीं, इसीलिए नाराज हो।"

अब मामला सूरम की समझ में आने लगा था। वह जल्दी-जल्दी कई घरों में गया, बड़े-बूढ़ों से मिला। उनसे कहा—"अगर जल्दी कुछ न किया गया, तो द्वीप बरबाद हो जाएगा।"

उस शाम मुखिया के घर द्वीप के बड़े-बूढ़े जमा हुए। फैसला हुआ, जिसे द्वीप पर जो चीज मिली है, लाकर जमा कर दे।

पहले लोगों ने इंकार किया, पर फिर उन्हें मानना पड़ा। मैदान में दैत्य की मायावी वस्तुएं वहां लाकर डाल दी गईं।

मुखिया ने कहा—"ये वस्तुएं हमारा नाश कर देंगी। हम इन्हें घरों में नहीं रखेंगे।"

सूरम ने कहा—"हम इन्हें नष्ट कर देंगे।"

वहां जमा बस्ती वाले खामोश थे। मुखिया के इरादे पर उस ढेर पर तेल छिड़क कर आग लगा दी गई।

आग लगते ही पहाड़ी की गुफा में बैठा दैत्य बेचैन हो उठा। उसे गरमी लगने लगी। वह बाहर निकल आया।

दैत्य को देखकर सब लोग घबरा गए। पर सूरम जरा भी न डरा। उसने दैत्य की ओर तीर छोड़ दिया। कुछ लोगों ने निशाना साधकर उधर पत्थर फेंके। सब निशाने सही बैठे। दैत्य पीड़ा से बिलबिला उठा। वह चिल्लाया—"मैं तुम सबको खा जाऊंगा।"

जवाब में सूरम और उसके साथियों ने फिर तीर चला दिए। दैत्य की मायावी वस्तुएं धू-धू करके जल रही थीं। सब तरफ एक आवाज गूंज रही थी—'चुप रहना, किसी से कुछ न कहना।'

मुखिया ने कहा—"तो यह चाल थी दैत्य की। वह सबको एक-दूसरे के खिलाफ भड़का रहा था।"

"भाग जाओ, यह मेरा द्वीप है।"—दैत्य फिर दहाड़ा। वह बेचैन था। उसकी चाल विफल हो चुकी थी। जैसे-जैसे उसकी मायावी वस्तुएं जल रही थीं, उसके शरीर में जलन बढ़ती जा रही थी। सूरम और उसके साथी दैत्य को अपने तीरों का निशाना बना रहे थे।

पहाड़ी पर खड़ा दैत्य लड़खड़ा रहा था। नीचे मैदान में जमा बोराक वासी अब डर नहीं रहे थे।

तभी सूरम का एक तीर दैत्य के माथे पर जा लगा। वह लड़खड़ाया। पीछे हटा, तो चट्टान अपने स्थान से खिसक गई। दैत्य पहाड़ी से नीचे समुद्र में जा गिरा। उसकी चीख देर तक हवा में गूंजती रही।

बोराक का शैतान मर चुका था। ●

खिलौना नगर

—चन्द्रदत्त 'इन्दु'

नगर से दूर एक पहाड़ी थी। उस पर गर्म पानी के चश्मे थे। खूब हरियाली थी। स्कूल के कुछ बच्चे वहां पिकनिक पर आए थे। खूब शोर-शराबा था। आदित्य अपनी बहन अनुपमा के साथ घूमता-घूमता कुछ दूर निकल गया। वहां दोनों झाड़ियों में लगे हरे-गुलाबी फूल तोड़ने लगे। आसपास छोटे-बड़े पत्थर के टुकड़े पड़े थे। आदित्य ने पत्थर के एक टुकड़े को गेंद की तरह लुढ़काना चाहा। वह फिसलकर ढलान से नीचे उगी पीली झाड़ी की ओर लुढ़कने लगा।

अचानक वे चौंके। पीली झाड़ी में से एक अनोखा बौना निकला। देखने में वह खिलौने जैसा लग रहा था। नीचे लुढ़कता हुआ पत्थर बौने की बांह से टकराया। वह चीखता हुआ झाड़ी में जा छिपा।

—"लगता है, बेचारे बौने को बहुत चोट आई है। चलकर देखना चाहिए।"

बौने को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे झाड़ी से कुछ दूर निकल गए। वहां खड़ी काठ की छोटी-सी गाड़ी को देखकर चकित रह गए। गाड़ी बिल्कुल परियों के उड़न खटोले जैसी थी। उसमें काठ के दो घोड़े जुते थे। उन्होंने गाड़ी के अंदर झांककर देखा। अंदर मखमली गद्दी लगी थी। दो बच्चों के बैठने लायक जगह थी। अनुपमा अपने को रोक नहीं पाई। बोली—"भइया, यह खिलौना गाड़ी यहां कौन खड़ी कर गया? कितनी खूबसूरत है! घोड़े बिल्कुल असली लग रहे हैं। जरा इसमें बैठकर तो देखें।"

दोनों उसके अंदर जा बैठे। मगर यह क्या! उनके बैठते ही काठ के घोड़े हिनहिनाने लगे, जैसे अजनबी को देखकर बिदक गए हों। फिर बात की बात में गाड़ी को लेकर दौड़ने लगे। दोनों बच्चे घबराए। उन्होंने घोड़ों को रोकना चाहा, मगर रोकते कैसे! लगाम तो घोड़ों के लगी नहीं थी। उनकी रफ़्तार भी बेहद तेज थी। गाड़ी को लेकर घोड़े दौड़ते रहे, दौड़ते रहे। दौड़ते-दौड़ते पहुंचे पहाड़ी की गुफा के सामने।

वहां पहुंचकर घोड़े हिनहिनाने लगे। गुफा में एक दरवाजा अपने आप खुल गया। उसी दरवाजे में से गाड़ी को लेकर घोड़े फिर भागने लगे।

गुफा बहुत संकरी थी। रास्ते पर जगह-जगह लकड़ी के बने हंडे लटके थे। उनकी रोशनी से सारा रास्ता जगमगा रहा था। गुफा में भागते-भागते घोड़े एक जगह रुके। सामने लकड़ी का बना एक कमरा था। गाड़ी उसी के अंदर आ गई थी। दोनों बच्चे गाड़ी से उतरकर बाहर जाने का रास्ता ढूंढ़ने की सोच रहे थे, तभी वह कमरा ऊपर की ओर उठने लगा।

आदित्य को आनंद आ रहा था। बेचारी अनुपमा सहमी हुई खड़ी थी। कुछ ही क्षण में ऊपर उठता कमरा एक जगह आकर रुक गया। रुकते ही दरवाजा फिर अपने आप खुल गया। घोड़े बाहर निकल आए। गाड़ी को लेकर फिर से बाहर बनी लकड़ी की सड़क पर दौड़ने लगे।

खुले में आकर दोनों बच्चों ने इधर-उधर देखा। अब उनकी समझ में आया। वे इस समय एक खिलौना नगर में थे। सड़क के चारों ओर सुंदर बाजार था। वहां गुड्डे-गुड़ियों जैसे खिलौने खड़े हुए सामान बेच रहे थे।

तभी एक चौराहा आया। वहां रंग-बिरंगी वरदी पहने एक खिलौना सिपाही खड़ा था। उसने भागते हुए घोड़ों को देखा। रुकने के लिए हाथ का इशारा करते हुए जोर से सीटी बजाई। सीटी की आवाज सुनकर घोड़े रुक गए। सिपाही आदित्य और अनुपमा के पास आया। बोला—"तुम इस नगर में किसकी अनुमति से आए? इतनी तेज रफ़्तार से घोड़ा गाड़ी चलाना यहां जुर्म है।"

इसके बाद सिपाही ने उनके आगे लकड़ी से बनी तख्ती बढ़ाते हुए कहा—"तुम इसमें अपना नाम और

पता लिख दो। तुम पर मुकदमा चलाया जाएगा। वह सामने जो किला दिखाई दे रहा है, उसी में अदालत बैठेगी। हमारे कप्तान और अदालत के दूसरे न्यायाधीश जो फैसला करेंगे, वह तुम्हें मानना होगा।"

आदित्य ने देखा—कुछ दूरी पर लकड़ी का एक किला बना था। वह और अनुपमा चुपचाप गाड़ी में बैठ गए। तभी सिपाही ने तीन बार जोर-जोर से सीटी बजाई। किले से खिलौना सिपाहियों की एक टुकड़ी आती दिखाई दी। सभी खिलौना सिपाहियों के हाथों में लकड़ी की बंदूकें थीं। वे टोप ओढ़े, कदम मिलाते बढ़े चले आ रहे थे। आते ही उन्होंने चारों ओर से दोनों बच्चों को घेर लिया। फिर उन्हें गाड़ी से उतारकर अपने साथ किले में ले गए। वहां जाकर सभी एक जगह खड़े हो गए। कुछ ही देर बाद सेना का एक खिलौना कप्तान वहां आया। बोला—"अभी थोड़ी देर में मुकदमा शुरू होगा। तुम हमारे प्रमुख बैंडमास्टर की गाड़ी चुराकर भागे हो।"

अचानक आदित्य को याद आया कि वे अपने साथ दोपहर का खाना भी लाए थे। खाना अभी भी थैले में उनके साथ था। उन्होंने खाने का डिब्बा खोला। उसमें गुलाब जामुन, बिस्कुट, केक, चॉकलेट की बर्फी और समोसे भरे थे। उनकी मां ने थैले में कुछ फल भी रख दिए थे। खाने से फूटती सुगंध से खिलौना सिपाहियों का मन भी ललचा गया। वे ललचाई नजरों से उधर देखने लगे। अनुपमा सारी बात ताड़ गई। बोली—"भइया! लगता है, ये सिपाही भी भूखे हैं। इन्हें भी थोड़ा-थोड़ा खाना क्यों न दे दिया जाए?"

आदित्य ने सिपाहियों से पूछा—"क्या आप हमारे साथ खाना पसंद करेंगे?"

पहले तो सिपाही चुप रहे। फिर बोले—"क्यों नहीं? हमें ऐसा स्वादिष्ट खाना यहां नसीब नहीं होता। हम लकड़ी के खिलौनों को तो बस, लकड़ी का बुरादा ही खाने के लिए मिलता है।" सारे सिपाहियों ने उनके साथ खाना खाया।

अचानक कमरे में घंटी बजी। एक सिपाही भागता हुआ गया। वापस आकर उसने आदित्य और अनुपमा से कहा—"आपको अंदर बुलाया है। मुकदमा शुरू होने वाला है।"

वे दोनों कमरे के अंदर गए। वहां का दृश्य देखकर हंसी फूटने को हुई, मगर चुप रहे। अंदर पांच कुर्सियां पड़ी थीं। बीच की कुर्सी पर खिलौना कप्तान बैठा था। उसके अगल-बगल में एक कुर्सी पर बैठा था तोता। उसकी बगल बैठी थी मैना। दूसरी ओर सिर खुजलाता बंदर और उसके पास लोमड़ी बैठी थी।

तभी कप्तान कुर्सी से उठा। उसने पास खड़े सिपाही से कहा—"बैंडमास्टर को बुलाया जाए।"

दूसरे कमरे से बैंडमास्टर बाहर आया। उसके दाहिने हाथ पर पट्टी बंधी थी। उसे देखते ही आदित्य ने धीरे से कहा—"अनुपमा, यही है वह बौना, जो पत्थर से घायल हुआ था। हम तो इसे सचमुच का आदमी समझे थे, मगर यह भी खिलौना नगर का रहने वाला लगता है।"

बैंडमास्टर मेज के पास आकर खड़ा हो गया। आदित्य और अनुपमा भी खड़े थे। कप्तान ने मुकदमा शुरू करते हुए यातायात पुलिस के सिपाही की तख्ती उठाई। उसमें नाम पढ़ते हुए बोला—'आदित्य और अनुपमा! आपने तीन संगीन अपराध किए हैं। पहला, आपने बेबात हमारे बैंडमास्टर को पत्थर से जख्मी किया। दूसरा, आपने उसकी गाड़ी चुराई। तीसरा, इतनी तेज गाड़ी चलाकर खिलौना नगर के नियमों को तोड़ा। क्या आपको इन अपराधों के बारे में कुछ कहना है?"

आदित्य बोला—"माननीय जज महोदय, ये सारे अपराध बेबुनियाद हैं। पत्थर हमने नीचे नहीं
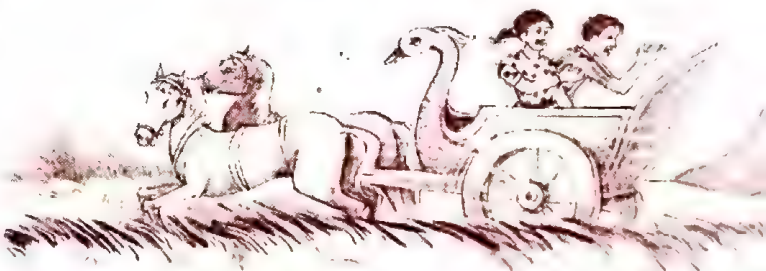
फेंका, बल्कि वह अनजाने में लुढ़कता हुआ नीचे आया। उसी से बैंडमास्टर घायल हुए। फिर भी हमने मरहमपट्टी करने के लिए इन्हें ढूंढ़ा, मगर यह झाड़ी में ऐसे छिपे कि दिखाई न पड़े। दूसरी बात रही गाड़ी चुराने की, हमने गाड़ी खड़ी देखी। वह सुंदर थी। बस, मन में आया कि जरा इसमें बैठकर देखा जाए। हम समझे थे कि यह खिलौना गाड़ी है। भागेगी नहीं, पगर जैसे ही हम बैठे, घोड़े सरपट दौड़ने लगे। हम तो खुद परेशान थे? क्या करें। कैसे गाड़ी रोककर उतरें। अब आप ही सोचें, हम पर चोरी का अपराध कैसे लग सकता है? तीसरा अपराध भी हमने नहीं किया। गाड़ी के घोड़े ही तेजी से गाड़ी भगा रहे थे। हमने उनसे गाड़ी भगाने के लिए नहीं कहा।" कहकर आदित्य चुप हो गया। तभी कप्तान ने बैंडमास्टर से कहा—"अब अपनी सफाई में तुम क्या कहना चाहते हो?"

बैंडमास्टर क्रोध से बोला—"ये निर्दयी बच्चे हैं। इन्होंने मेरे घोड़ों को परेशान किया। इन्हें सजा मिलनी चाहिए।"

"घोड़ों को बुलाया जाए।"—कप्तान ने सिपाही से कहा।

तुरंत घोड़ा गाड़ी वहां आ गई। कप्तान ने पूरी बात बताते हुए घोड़ों से पूछा—"क्या इन बच्चों ने तुम्हें परेशान किया था?"

—"नहीं, बिल्कुल नहीं। ये हमारे लिए अनजान थे। जैसे ही गाड़ी में बैठे, हम घबरा गए। बस, भागने लगे। गाड़ी तेज हमने भगाई।"

यह सुनकर वहां खड़े दोनों सिपाही बोले—"बैंडमास्टर की बात गलत है। ये दोनों दयालु बच्चे हैं। अभी-अभी इन्होंने अपने खाने में से बहुत-सा खाना हम सबको खिलाया।"

यह सुनकर कप्तान ने कहा—"क्या सचमुच इन्होंने हमारे सिपाहियों को खाना खिलाया? सारे सिपाहियों को बुलाया जाए।"

कप्तान का आदेश पाकर सारे सिपाही कदम मिलाते हुए वहां आ गए। कप्तान के पूछने पर उन्होंने कहा—"इन्होंने हमें बहुत स्वादिष्ट खाना खिलाया। ये बहुत दयालु हैं।"

कप्तान ने अपने साथ जज के रूप में बैठे खिलौनों से पूछा—"आपकी क्या राय है?"

बंदर ने कहा —"इनका अपराध सिद्ध नहीं हुआ।"

तोता बोला—"बैंडमास्टर ने झूठ बोला।"

लोमड़ी बोली—"बैंडमास्टर को सजा देनी चाहिए।"

मैना ने भी उनकी हां में हां मिलाई। कप्तान से सबको चुप कराते हुए बच्चों से पूछा—"बच्चो, तुम बताओ, बैंडमास्टर को क्या दंड दिया जाए?"

अनुपमा बोली—"इन्हें क्षमा कर दिया जाए। यदि यह नहीं मिलते, तो हम इतने अद्‌भुत नगर की सैर कैसे कर पाते!"

अनुपमा की बात सुनकर बैंडमास्टर की आंखें बड़ी-बड़ी हो गईं। उसे ऐसी आशा न थी। उसे भी मानना पड़ा कि बच्चे कठोर नहीं, दयालु हैं। वह बोला—"मैं बच्चों की दयालुता और साहस से बड़ा प्रभावित हूं। मैं अपनी घोड़ा गाड़ी में इन्हें इनके घर छोड़कर आऊंगा।"

आदित्य ने कहा—"हम फिर खिलौना नगर में आएंगे। इस बार बहुत-सी मिठाइयां लाएंगे।" फिर गाड़ी में बैठकर, दोनों बच्चों ने वहां खड़े खिलौनों से हाथ मिलाकर विदाई ली। धूल उड़ाती गाड़ी तेजी से भागी। सांझ की ढलती रोशनी में गाड़ी उन दोनों को लेकर उनके घर के दरवाजे पर पहुंची। अनुपमा अपनी मम्मी को यह चमत्कारी गाड़ी दिखाना चाहती थी। जैसे ही वह अपनी मम्मी को लेकर बाहर आई—गाड़ी जा चुकी थी। ●

धमा-चौकड़ी

लाला जी को तंग करती थी
चूहेमल की धमा-चौकड़ी,
दाएं-बाएं हर थैले में
हर डिब्बे में, हर मटके में
जहां चाहते, वहां घूमते
चूहे जी की पहुंच बड़ी थी।
लाला जी जब दोपहरी में
ऊंघा करते,
मित्रों से घुस-पैठ कराते
मिल-बांटकर मौज उड़ाते।
लाला जी को चैन नहीं था
छुटकारे की राह सोचते
बीत रही थीं रातें उनकी,
तभी अचानक
लाला जी की आंखें चमकीं।

एक दोपहरी
लाला जी ने खोल दिए सब
डिब्बे, मटके, थैले, बोरी।
ढेर अन्न का लगा देखकर
चूहेमल की खुली लाटरी।
पानी मुंह में भर-भर आया
लाला जी को सोता पाकर,
झपट पड़े चूहे खाने पर
टूट पड़े दाने-दाने पर।
कोई डिब्बे में घुस बैठा
कोई बोरी में जा बैठा।
अब, बारी थी लाला जी की
दबे पांव उठकर धीरे-से
बंद किए ढक्कन डिब्बों के
मुंह बोरी के।
चूहे सारे
फंसे बिचारे,
किसे पुकारें!
बिन मेहनत के चोरी-चोरी
खाने का फल उन्हें मिला था।

—इंदिरा मोहन

रंगों की पिचकारी

रंग-बिरंगी होली आई,
रंगों में खुशियां भर लाई।

रंगों वाली प्यारी-प्यारी,
छोटी-बड़ी लिए पिचकारी,
कपड़े सभी रंग से भीगे—
रंगी हुई धरती इतराई।

रंग भरे लेकर गुब्बारे,
निकल पड़े हैं बालक सारे,
घर-आंगन रंगीन हो गए
गली-गली जैसे मुसकाई।

होली जली, ठंड अब भागी,
खुशबू नववसंत की जागी,
आओ मिल, त्योहार मनाएं—
खाएं हम पकवान, मिठाई।

—मधुर शास्त्री

उछल-कूद

वे मीठी बातें बचपन की,
वे सुंदर बातें जीवन की।
याद दिलातीं, मन में आतीं,
फिर से बचपन में ले जातीं।
पेड़ों पर चढ़, जामुन खाना,
खेतों पर जा दौड़ लगाना।
खूब खेलना, हंसना-पढ़ना,
कभी-कभी गलती से लड़ना।
झूला डाल झूलना जीभर,
गेंद खेलना प्रति दिन मिलकर।
उछल-कूद बरसा में करना,
कभी-कभी पढ़ने से डरना।
चली गईं ये बातें सारी,
बचपन की ये बातें न्यारी।
प्यारा बचपन, भोला बचपन,
कैसा था वह बचपन का मन।

— डा. श्रीप्रसाद

बाग में

हरा-भरा हम
देश बनाएं,
आओ चलकर
पौध लगाएं—बाग में।

हम सब बालक
कदम मिलाएं,
सारे मिलकर
गाना गाएं—राग में।

देखो कैसे
हंसता जाए,
झरना गिरकर
कलकल गाए—झाग में।

राग-रंग में
धूम मचाएं,
किलकारी भर,
दौड़ लगाएं—बाग में।

—गोपीचन्द श्रीनागर

कल बताऊंगा

— डा. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

तेजी से उड़ता जा रहा था एक सुनहरा पक्षी। अचानक उसकी चोंच से कुछ गिरा। गिरकर वह चीज सीधी एक ज्वालामुखी के अंदर चली गई। तभी एक अजब बात हुई। उस ज्वालामुखी से जलते लावे के साथ आग की भयंकर लपटें उठीं। साथ-साथ ढेर-सारा धुंआ उठकर आसपास, चारों तरफ छा गया। देखते-देखते उस धुएं ने बादल का रूप लेना शुरू किया। आसमान पूरी तरह बादलों से ढक गया। फिर थोड़ी देर बाद, आसमान से टप-टप बूंदें गिरने लगीं। देखते-देखते बारिश ने भयंकर रूप ले लिया। लगा, जैसे आकाश-पाताल सब एक हो जाएगा। पहाड़ों से पानी बहकर, नीचे मैदानों में इकट्ठा होने लगा।

वहीं मछेरों की एक बस्ती थी। वे खेती-बाड़ी करते और मछलियां पकड़कर अपना पेट भरते। चानी मछेरे के खेत में लबालब पानी भर गया था। नदी में उफान आ जाने से मछलियां बहकर चानी के खेत में आने लगी थीं। चानी को अब नदी जाकर मछलियां पकड़ने की जरूरत नहीं थी। वह खेत से ही मछलियां पकड़ने लगा।

एक दिन संयोग से एक बड़ी मछली बहते-बहते चानी के खेत में आ गई। मछली को पकड़कर चानी ने उसका पेट चीरा। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मछली के पेट में सोने की अंगूठी थी। उस पर राजा का निशान बना था। चानी ने सोचा— 'यह तो राजा की अंगूठी है। राजा को वापस कर देनी चाहिए।'

अगले दिन एक पोटली में कुछ सूखी मछलियां लेकर उसने नाव निकाली, फिर राजा से मिलने चल पड़ा। अपने साथ खाने-पीने का सामान भी लेता गया। नदी के उस पार राजा की नगरी थी।

नदी पार करके चानी राजा की नगरी में जा पहुंचा। नदी किनारे एक झाड़ी के पीछे अपनी नाव छिपाकर चानी राजा से मिलने चल पड़ा। लोगों से पूछता हुआ, वह राजमहल जा पहुंचा। पहरेदार ने चानी को रोका। चानी यह बात पहले से ही जानता था। तभी वह उसके लिए तैयार होकर चला था। पहरेदार को एक तरफ ले जाकर उसने सूखी मछलियों की पोटली उसे पकड़ा दी।

चानी राजा के सामने पेश हुआ। राजा की तरफ अंगूठी बढ़ा दी। अंगूठी देखकर राजा चकित हुआ। बोला—"अरे, यह अंगूठी तो अचानक गायब हो गई थी। तुम्हें कहां से मिली?"

तब मछुआरे ने सारी बात बता दी। मछली के पेट से अंगूठी मिलने की बात सुनकर राजा को बहुत अचम्भा हुआ। उसने सोचा— 'मेरी नगरी से इतने दूर के गांव में, अंगूठी मिलने के पीछे भला क्या रहस्य हो सकता है?' राजा गहरे सोच में डूब गया।

चानी बोला— "महाराज, आपकी सम्पत्ति मैंने आप तक पहुंचा दी। अब आप मुझे जाने की आज्ञा दें।" सुनकर राजा का ध्यान टूटा। उसने चानी को ढेर सारा इनाम देकर विदा किया।

चानी तो चला गया, पर राजा को सोचता छोड़ गया। वह दिन राजा का बेचैनी से कटा। अगले दिन दरबार लगा। राजा ने सभी सभासदों के आगे अपनी मुश्किल रखी। चानी के गांव से अंगूठी मिलने की पहेली से सभी चकित थे। सब सोच में पड़ गए।

राजा ने कहा— "क्या इस भरे दरबार में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है,जो इस रहस्य को सुलझा सके ?" पर तब भी कोई नहीं बोला। लगता था, जैसे सभी को सांप सूंघ गया हो। यह देखकर राजा क्रोध में आकर बोला— "क्या इसका मतलब यह है कि हमारे इतने बड़े दरबार में अब बुद्धिमानों और विद्वानों का अकाल पड़ गया है ?"

तभी अचानक शुंगभद्र नाम का दरबारी उठ खड़ा हुआ। बोला— "महाराज, मैं सुलझाऊंगा इस रहस्य को। आप मुझे दो दिन का समय दें।"

राजा बोला— "ठीक है, तुम दो दिन बाद बताना। मगर याद रहे, न बता पाने की सूरत में तुम्हें कड़ा दंड मिलेगा।" दरबार उस दिन के लिए उठ गया।

शुंगभद्र बुद्धिमान दरबारी था। इससे पहले भी कई गुत्थियां सुलझा चुका था। मगर इस बार मामला जरा पेचीदा था। वह सोच-सोचकर हार गया। पर उसे समस्या का कोई ओर-छोर मिलता नजर नहीं आया। उसे परेशान देखकर उसकी पत्नी रत्ना ने पूछा— "क्या बात है ? मैं आपको कल से ही कुछ परेशान देख रही हूं।"

शुंगभद्र ने सारी बात अपनी पत्नी को बता दी। दुखी होकर बोला— "कल मोहलत खत्म हो रही है। मैंने अगर कल दरबार में राजा को अंगूठी का रहस्य नहीं बताया, तो वह मुझे दंड देगा।"

रत्ना को पति की हालत पर दुःख हुआ। अचानक कुछ याद आ जाने पर वह एक थैली उठा लाई। उसमें से कुछ जड़ी-बूटियां निकालकर वह अपने पति को दिखाते हुए बोली— "हिमालय की कंदरा में रहने वाले एक पहुंचे हुए संत ने मेरी सेवा-सत्कार से प्रसन्न होकर मुझे यह जड़ी-बूटी दी थी। यह चमत्कारी है। इसका काढ़ा पीकर रात को सोने पर सपने में अपने आप ही समस्या का समाधान मिल जाता है। आज रात आप यह काढ़ा पीकर सोएं। सपने में ही अंगूठी का भेद मिल जाएगा।"

शुंगभद्र को विश्वास नहीं हुआ। लेकिन कुछ और नहीं सूझा, तो उसने इसी को आजमाने का निश्चय कर लिया। वह काढ़ा पीकर सोया, तो सचमुच नींद में उसने एक विचित्र सपना देखा। उसने देखा कि राज उपवन में राजा,रानी के साथ बैठे हैं। रानी के साथ बातचीत करते-करते राजा यूं ही अपनी अंगूठी के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं। कभी उसे अंगुली से निकाल रहे हैं, तो कभी पहन रहे हैं। ऐसे में अनजाने में ही वह अंगूठी अंगुली से खिसककर दूर घास पर जा गिरी। बातों में खोए, राजा को इसकी खबर ही नहीं हुई।

अचानक झाड़ियों के पीछे से एक सुनहरा उकाब धीरे-धीरे आया। अंगूठी को चुपचाप अपनी चोंच में दबाकर उड़ गया। उड़ते-उड़ते वह उकाब ज्वालामुखी की पहाड़ियों से होकर जाने लगा। अचानक उसकी चोंच से छूटकर वह अंगूठी एक ज्वालामुखी के अंदर जा गिरी। संयोग से ठीक उसी समय ज्वालामुखी फटा। उसके अंदर से लावा और धुआं निकलकर चारों तरफ फैल गया।

धुएं के साथ वह अंगूठी भी छिटककर वेग से ज्वालामुखी के बाहर निकली। और तब धुएं ने बादल का रूप लिया और आसपास बरस पड़ा। बारिश के साथ वह अंगूठी भी नीचे जाकर नदी में जा गिरी। एक बड़ी मछली ने उस अंगूठी को निगल लिया। नदी का पानी जब बस्ती के खेतों में गया, तो पानी के साथ बहकर वह मछली भी खेतों में जा पहुंची। फिर चानी ने वह मछली पकड़ी, उसके पेट से अंगूठी निकाल ली।

सपना पूरा होते ही शुंगभद्र की नींद खुल गई। खुशी से चहकते हुए, उसने पत्नी को सारा सपना कह सुनाया।

अगले दिन राजदरबार में जाकर शुंगभद्र ने अंगूठी का भेद खोला। सुनकर राजा ने उसकी बड़ी तारीफ की। उसे ढेर-सारे इनाम दिए और मंत्री बना लिया। ■
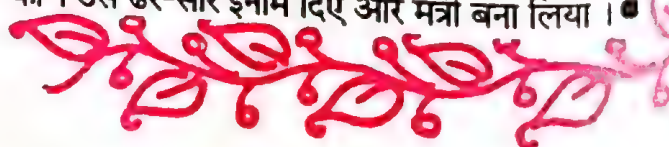
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट।**
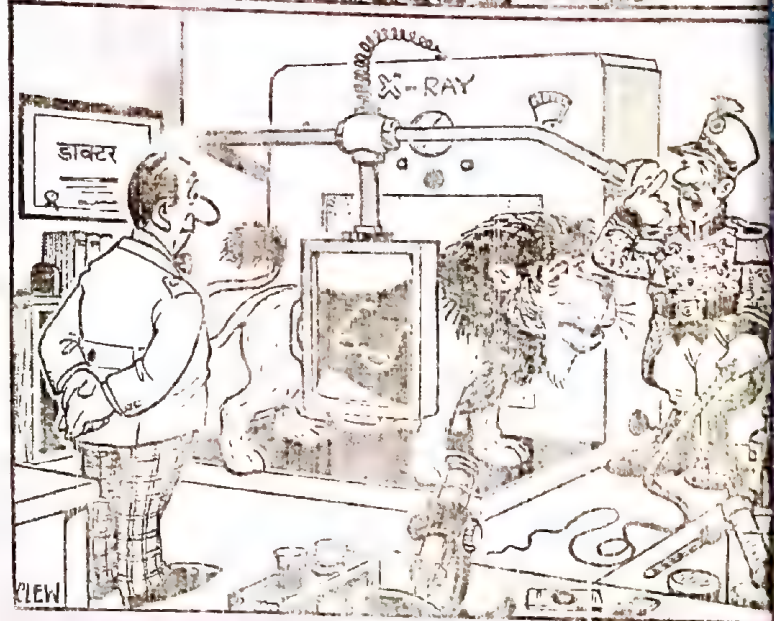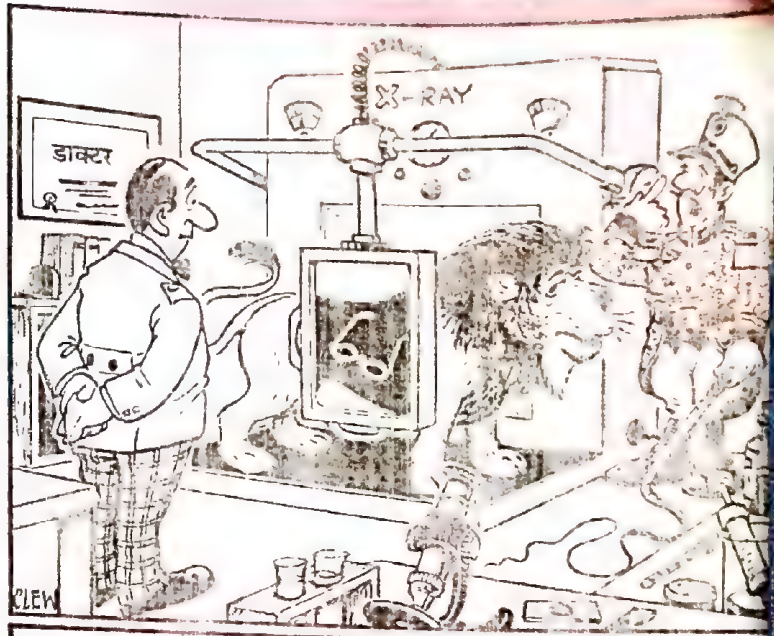
कहानी लिखो : ८८

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए। उसे १० मार्च '९१ तक सम्पादक, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। उसे प्रकाशित भी किया जाएगा।

परिणाम-मई '९१

चित्र पहेली : ८८

'होली आई' विषय पर चित्र बनाकर १० मार्च '९१ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा आयु स्पष्ट शब्दों में लिखिए। चित्र चटख रंगों से ही बनाकर भेजिए।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा।

परिणाम-जून '९१

दिन आए
रंग-उमंगों के

चित्र : राजेन्द्रकुमार वधवा, आर.के. गोयल
एडवेंचर

विश्व की महान कृतियां : बंगला

अपू हारा नहीं

—विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय

अपू की मां सर्वजया जमींदार के यहां रसोई बनाकर अपना गुजारा करती थी। पहले वे लोग निश्चिंदपुर गांव में रहते थे। अपू के पिता की मृत्यु के बाद घर की हालत बिगड़ने लगी थी। एक दिन सर्वजया के ताऊ जी आकर दोनों को अपने साथ ले गए। वह पुरोहिताई का काम करते थे। चाहते थे कि अपू भी यह काम सीख ले।

मगर अपू को पुरोहिताई का काम पसंद नहीं था। वह पढ़ना चाहता था। अपू की जिद के आगे मां को झुकना पड़ा। अपू रोज चार मील का सफर तय करके स्कूल आने-जाने लगा।

वह बोर्ड की परीक्षा में पूरे जिले में अव्वल आया था। उसे पढ़ाई जारी रखने के लिए वजीफा भी मिला।

आगे पढ़ने के लिए अपू को गांव छोड़ना पड़ा। वह दीवानपुर के गवर्नमेंट मॉडल इंस्टीट्यूशन में भरती हो गया। वहां के बोर्डिंग में रहने की जगह मिल गई। अपू पढ़ने में बहुत तेज था। हेडमास्टर मिस्टर दत्त उसे बहुत चाहते थे। हाई स्कूल का इम्तहान खत्म होने के बाद एक दिन मिस्टर दत्त ने अपू को बुलाकर पूछा—"अपू, पास हो जाने के बाद क्या करोगे?"

—"सर, कालेज में पढ़ने की बड़ी इच्छा है।"

—"अगर स्कालरशिप न मिले?"

अपू चुप रहा।

हेडमास्टर ने कहा—"भगवान पर भरोसा रखना। कलकत्ता जाकर पढ़ना।"

अपू ने घर लौटकर मां से कलकत्ता जाकर पढ़ने की बात कही। मां डर से कांप गई। कलकत्ता का उसने सिर्फ नाम ही सुना था। 'अपू इतने बड़े शहर में कैसे रहेगा ? कैसे उसका खर्च चलेगा ?' उस बेचारी के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी।'—यही सोचकर परेशान हो उठी।

अपू ने मां को दिलासा दिया। कलकत्ता के लिए रवाना होने से पहले वाली रात वह सो न पाया। अपू के एक दोस्त देवव्रत ने अपने एक रिश्तेदार अखिल बाबू का पता देकर उनसे मिलने के लिए कहा था।

कलकत्ता पहुंचकर उसे अखिल बाबू का घर ढूंढ़ने में बड़ी दिक्कत हुई। किसी तरह वह अखिल बाबू के पास पहुंचा। अखिल बाबू ने मेस में उसके रहने का इंतजाम कर दिया।

अपू दूसरे दिन से ट्यूशन और किसी अच्छे कालेज की खोज में कलकत्ता घूमने लगा। आखिरकार एक दिन अपने बचे-खुचे रुपयों से फीस देकर उसने रिपन कालेज में नाम लिखा लिया।

कुछ दिनों बाद अखिल बाबू ने उसके लिए पंद्रह रुपए महीने के एक ट्यूशन का इंतजाम कर दिया। मेस में पढ़ाई की दिक्कत होती थी। अपू ने मेस बदल लिया। कुछ दोस्तों के साथ एक किराए के कमरे में रहने लगा। एक दिन उसकी ट्यूशन छूट गई। यूरोप में लड़ाई छिड़ जाने से कलकत्ते में चीजें महंगी होती जा रही थीं। अपू को बहुत तकलीफ हो रही थी।

अपू को फाइनल परीक्षा में बैठने के लिए अपनी बकाया फीस चुकानी थी। किराए वाला कमरा भी खाली करना था। उन्हीं दिनों मां की चिट्ठी आई। वह गिर पड़ी थी। पैरों में चोट आई थी। उसके पास पैसे नहीं थे। अपू मां के अभाव के बारे में सोचकर परेशान हो गया। क्या पता मां उपवास कर रही हो।

दरबान शम्भूदत्त तिवारी की पत्नी अपू को अपने बेटे की तरह मानती थी। दुःख-सुख में वह अपू की मदद करती। अपू के मना करने के बावजूद उसके जूठे बर्तन साफ कर देती। कभी-कभी कपड़े भी धो देती। अपू सोचता—'किसी दिन वह लायक बन जाएगा, तो तिवारी की पत्नी की जरूर मदद करेगा।'

अपू के लिए अपना पेट भरना मुश्किल होता जा रहा था। ट्यूशन उसे मिल नहीं रही थी। एक दिन उसने अपना प्रिय जापानी कपड़े का परदा बेचकर भात खाया। फिर एक दिन अपने एक पैसे वाले दोस्त के यहां मांगने गया। मगर मौके पर संकोच वश मांग नहीं पाया। इधर-उधर की बातें करके लौट आया।

एक दिन बाजार में उसे पुराना होटल वाला मिला। अपू ने सप्ताह भर उसके यहां उधार पूरियां खाई थीं। उसने पैसे चुकाने के लिए अपू को खूब खरी-खोटी सुनाई। अक्सर अपू सोचता—'इससे अच्छा है, मैं वापस मां के पास गांव लौट जाऊं।' फिर सोचता—'वहां जाकर क्या होगा! मां तो खुद भूखी रहती है। मुझे कौन खिलाएगा ?'

सालाना परीक्षा में, साइंस सेक्शन में गणित और फिजिक्स में अपू अव्वल आया। छुट्टियों में वह गांव लौटा। मां ने उससे पूछा कि शहर में वह सुबह-शाम क्या खाता है ? अपू ने झूठमूठ अपने भोजन की एक लिस्ट बता दी। मां बहुत खुश हुई। अपू वायदे के मुताबिक मां को कभी रुपए नहीं भेज पाया था। मगर

विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय—(१२-९-१८९४—१-११-१९५०) बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकार। पचास से अधिक पुस्तकें लिखीं। 'पथेर पांचाली' 'अरण्यक' 'अशनि संकेत' आदि प्रसिद्ध रचनाएं हैं। यहां हम 'अपूर संसार' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं।—सं.

मां ने अपू से इस बारे में कुछ नहीं कहा।

अपू कलकत्ता लौट आया। अब वह कमरा छोड़कर अपने एक दोस्त के साथ मेस में रहने लगा था। मगर पैसा न रहने के कारण उसे बड़ी दिक्कत होती थी। दोस्त का स्वभाव भी अच्छा नहीं था। परेशान होकर अपू ने रोज सुबह अखबार बेचना तय किया। तिवारी की पत्नी से कुछ रुपए उधार मांग लाया। शुरू-शुरू में वह संकोचवश ज्यादा अखबार नहीं बेच पाया। फिर किसी तरह गाड़ी चल निकली। मगर फीस के पैसे फिर भी न जुट सके। उसके दोस्तों ने इधर-उधर चंदा किया। वाइस प्रिंसिपल से रियायत दिलाकर फीस की समस्या हल कर दी।

इम्तहान से पांच दिन पहले उसे मां की बीमारी का समाचार मिला। वैसे मां काफी दिनों से बीमार थी। मगर बेटे की पढ़ाई में हर्ज न हो, इस डर से उसने खबर नहीं दी थी। उसकी पड़ोसिन ने जबरदस्ती अपू को खबर भिजवाई। अपू मां को देखने गांव गया। चार दिन बाद कलकत्ता वापस चला आया, क्योंकि परीक्षाएं सिर पर थीं।

मां से फिर मिलना उसके भाग्य में नहीं था। मां की मृत्यु की खबर पाकर वह गांव आया। सब कुछ बड़ा सूना लगने लगा। इसी तरह तीन महीने बीत गए। एक दिन सेना में भरती होने के लिए गया, मगर वहां उसे लिया नहीं गया।

इस बार भी इम्तहान में वह अव्वल आया। साहित्य में उसके अंक सबसे अधिक थे। पदक भी मिलने वाला था। मगर इतनी बड़ी खुशी में शामिल होने के लिए अपू के पास अपना कोई नहीं था।

अपू ने आगे पढ़ाई के लिए फार्म नहीं भरा। उसके एक शिक्षक ने उसे पढ़ने के लिए कहा।

उसे नौकरी की सख्त जरूरत थी। किसी ने उसे सलाह दी—'लड़ाई का जमाना है। लोहे की दलाली करो। उसमें काफी पैसा मिल सकता है।' अपू ने वह भी किया। पर अनाड़ी होने के कारण लोगों ने उसे ठग लिया।

उन्हीं दिनों अचानक पुराने दोस्त प्रणव से मुलाकात हुई। प्रणव क्रांतिकारी बन गया था। वह अपनी ममेरी बहन अपर्णा की शादी में जा रहा था। अपू से कहा, तो वह भी साथ चल दिया।

प्रणव की मामी उन दोनों को देखकर बहुत खुश हुई। प्रणव ने अपर्णा से भी अपू का परिचय करवाया।

शादी के दिन एक दुर्घटना हो गई, जिससे अपर्णा की शादी हो रही थी, वह लड़का पागल था। बारात के वक्त यह भेद खुला। लोग समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें? इस तरह शादी टूट जाने से अपर्णा पर भी दाग लग जाता। तुरंत दूसरा वर कहां से मिलता? किसी ने जाकर अपू से यह कहा। अपू को अपर्णा का चेहरा याद आया। उसे अपर्णा के इस हाल पर दुःख हुआ। उसने बिना सोचे-समझे अपर्णा से शादी करना मंजूर कर लिया। अपू देखने में सुंदर था। योग्य था। प्रणव की मामी बहुत खुश हुई। इन दोनों का विवाह हो गया।

कुछ दिन बाद अपू अपर्णा को अपने गांव के सूने घर में ले आया। अपर्णा ने उस मकान को चमका दिया। अभाव के बावजूद दोनों का जीवन सुखी था। अपू कलकत्ते से आता-जाता रहता। एक दिन वह

अपर्णा को भी अपने साथ कलकत्ता ले गया।

कुछ दिन उसने एक अखबार के दफ़्तर में काम किया। फिर दूसरे दफ़्तर में। डेढ़ साल इसी तरह गुजर गया। अपर्णा ही उसकी एकमात्र खुशी रह गई थी।

अपर्णा मां बनने वाली थी। कलकत्ता में अकेले कौन उसकी देखभाल करता। वह अपर्णा को अपनी ससुराल पहुंचा आया।

एक दिन दफ़्तर से शाम को अपू घर लौटा। ससुराल से भेजा गया एक आदमी उसका इंतजार कर रहा था। उसने अपू को एक चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ़कर अपू का सिर घूम गया। उसकी पत्नी अपर्णा बच्चे को जन्म देने के बाद इस दुनिया में नहीं रही थी। अपू फिर से बेसहारा हो गया—एकदम अकेला रह गया था।

इसी दुःख में अपू का मन अपने बच्चे को देखने का भी नहीं हुआ। वह कलकत्ता की नौकरी छोड़कर गांव के स्कूल में पढ़ाने लगा। प्रणव उसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वहां जा पहुंचा। उसने अपू को अपने साथ चलने के लिए कहा।

अपू ने एक उपन्यास लिखना शुरू किया था। मगर तभी उस पर झूठा आरोप लगाकर स्कूल की नौकरी से हटा दिया गया। स्कूल के छात्र अपू को बहुत चाहते थे। हेडमास्टर की चेतावनी के बावजूद उन्होंने विदाई सभा आयोजित की। अपू को मानपत्र दिया और गाड़ी तक विदा करके आए।

अपू का मन हुआ कि वह खूब घूमे। बेटे को देखने की इच्छा भी हुई। बेटे का नाम काजल था। काजल से मिलकर वह बहुत खुश हुआ। कुछ दिन बेटे के साथ बिताकर अपू फिर कलकत्ता लौट गया। काफी समय यूं ही बीत गया।

कई साल बाद काजल को देखने वह फिर अपनी ससुराल गया। काजल अपनी शरारतों के कारण नाना से पिटता रहता था। नानी का देहांत हो चुका था। काजल अपने पिता से मिलकर बहुत खुश हुआ।

अपू काजल को कलकत्ता ले आया। काजल ने साथ चलने की बहुत जिद की थी। अब वह ननिहाल में नहीं रहना चाहता था।

काजल को लेकर पहले वह अपने गांव आया। अपर्णा का लगाया चम्पा फूल का पौधा अब पेड़ बन चुका था। काजल खुश होकर चम्पा के फूल तोड़ने लगा। इस दृश्य को देखकर अपू को अपर्णा की याद आ गई। गांव से वे दोनों कलकत्ता लौट आए।

अपू का उपन्यास अब लोग पढ़ने लगे थे। कुछ लोग अपू से मिलने भी आते। एक पत्रिका में अपू का उपन्यास छपना शुरू हो गया। कहानी संग्रह भी छपा, लेखक के तौर पर उसका नाम हो गया। हाथ में कुछ पैसे भी आ गए। मगर अपू का मन अब कलकत्ता में नहीं लग रहा था। लिखने के सिलसिले में एक अंग्रेज से उसकी दोस्ती हो गई। उसके साथ उसने देश भ्रमण किया।

यात्रा से लौटकर एक दिन अपू काजल को अपने पुरखों के गांव निश्चिंदपुर ले गया।

अपू का मन धीरे-धीरे उचाट होता जा रहा था। गृहस्थी में उसका मन नहीं लग रहा था। अचानक उसे फिजी और समोआ जाने का मौका मिल गया। वह अपनी एक रिश्ते की बहन रानू के पास काजल को छोड़कर विदेश यात्रा पर चल दिया।

काजल रानू के पास रहने लगा। एक दिन रानू ने महसूस किया, काजल बिल्कुल नन्हे अपू की तरह लग रहा है। उसे लगा, अपू कहीं गया नहीं है। सामने ही है— बचपन का शरारती अपू।●

प्रस्तुति : अमर गोस्वामी

भभूत लगाओ

—सूर्य मंगल

रामेश्वर व्यापारी का बेटा था। उदार और विनम्र। पिता जयदेव का अच्छा कारोबार था। उसकी मां यशोदा देवी धार्मिक विचारों की थी।

एक रात रामेश्वर के घर चोर घुस आए। घर का सारा कीमती माल लेकर चले गए। जयदेव यह सदमा बरदाश्त न कर सका। वह बीमार हो गया और एक दिन चल बसा।

इस चोरी से व्यापार पर बुरा असर पड़ा। रामेश्वर को व्यापार का कर्जा चुकाना मुश्किल हो गया। काम-धाम भी सारा रुक गया। अब रामेश्वर ने दूर ज़ाकर काम-धंधा करने की सोची, लेकिन मां को घर पर अकेला छोड़ कैसे जाए? इसी वजह से वह परेशान था। उसकी मां परेशानी समझ रही थी। मगर उपाय उसे भी नहीं सूझ रहा था।

एक दिन घर पर एक ज्योतिषी आए। वह दूर शहर में रहते थे। अक्सर वहां आते रहते थे। ज्योतिषी को देख, यशोदा सोचने लगी—'यह ठीक समय पर आए। अब कोई न कोई हल निकल ही आएगा।'

यशोदा ने ज्योतिषी से अपनी परेशानी बताई। ज्योतिषी ने यशोदा का हाथ देखा। कुछ देर तक वह गणना करते रहे। फिर बोले—"रामेश्वर, तुम मां की फिक्र न करो। बहुत भाग्यशाली मां है। यह अपनी बहू की गोद में सिर रखकर लेटेगी। बहू उसकी सेवा करेगी और..."कहते हुए वह चुप हो गए। रामेश्वर कुछ और पूछता, पर मां ने टोका—'बेटे, तुम ज्योतिषी जी की बात पर विश्वास करो। मेरी चिंता छोड़, कल ही परदेश चले जाओ।"

रामेश्वर क्या कहता? अगले दिन वह घर से चल पड़ा। चलते-चलते किसी नगर के पास पहुंचा। वहां एक बाग में जाकर आराम करने लगा। वह आम का बाग था। रामेश्वर को भूख लगी थी। उसने दो-चार आम तोड़कर भी खा लिए। आम खाकर पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उधर से बाग का मालिक आया। किसी अजनबी को देखकर रुक गया। वह बाग का मालिक नगर सेठ लक्ष्मीचंद था। लक्ष्मीचंद ने पूछा कि वह कौन है। रामेश्वर बोला—"आप बाग के मालिक लगते हैं। मैं राही हूं। भूख लगी थी, इसलिए दो-चार फल मैंने खा लिए। क्षमा करें।" रामेश्वर की बात से लक्ष्मीचंद बहुत प्रभावित हुआ। वह सोचने लगा—'यह सरल स्वभाव का है। ईमानदार भी लगता है। क्यों न इसे अपने साथ कारोबार में लगा लूं। मेरे कोई लड़का भी नहीं है।' इसके बाद रामेश्वर से पूछताछ की। जब पता चला कि वह भी व्यापारी का लड़का है, तो लक्ष्मीचंद उसे अपने साथ ले गया। रामेश्वर भी खुश था। बिना ढूंढ़े उसे काम मिल गया था।

लक्ष्मीचंद ने रामेश्वर को काम-धाम समझा दिया। रामेश्वर मेहनती तो था ही। कुछ ही दिन में वह लक्ष्मीचंद का विश्वासपात्र बन गया।

लक्ष्मीचंद की इकलौती बेटी थी—राधा। वह उसे बहुत प्यार करता था। सेठानी अधिकतर बीमार रहती। घर का सारा काम-काज राधा ही देखती थी।

गंगा स्नान का पर्व आया। राधा ने गंगा स्नान की जिद की। लक्ष्मीचंद तैयार हो गया। चलने लगा, तो उसने रामेश्वर को समझाते हुए कहा—"मैं दो-चार दिन में लौटूंगा। घर का ख्याल रखना।" यह कहकर लक्ष्मीचंद चला गया।

दो-चार दिन बाद लक्ष्मीचंद घर लौटा, तो देखा, चारपाई पर रामेश्वर लेटा है। सिर में पट्टी बंधी है। उसकी पत्नी ने बताया—"कल रात घर में लुटेरे घुस आए थे। रामेश्वर ने बड़ी बहादुरी से उनका सामना किया, इसीलिए वह घायल हो गया। इसी के कारण लुटेरे घबराकर भाग गए।"

लक्ष्मीचंद ने कृतज्ञता भरी नजरों से रामेश्वर को

देखा। लक्ष्मीचंद उसे अपने बेटे के समान चाहने लगा।

कुछ दिनों में रामेश्वर ठीक हो गया। उसे घर से आए काफी दिन हो गए थे। उसका मन घर जाने को कर रहा था। रह-रहकर मां की याद आती थी। एक दिन रामेश्वर ने लक्ष्मीचंद से मन की बात कही। लक्ष्मीचंद बोला—"रामेश्वर, मैं बूढ़ा हो चला हूं। चाहता हूं, कि तुम मेरे दामाद बनकर यहीं रहो।"

रामेश्वर यह सुनकर, गम्भीर हो गया। रह-रहकर उसे ज्योतिषी की अधूरी भविष्यवाणी याद आ रही थी। वह मन में उसके कुछ और ही अर्थ लगा रहा था। वह सोच रहा था—'शायद बहू की गोद में सिर रखते ही मां चल बसेगी।' लक्ष्मीचंद ने जोर देकर अपनी बात कही, तो रामेश्वर ने मन की शंका बता दी।

लक्ष्मीचंद मन में कुछ सोचने लगा। दूसरे दिन वह रामेश्वर को एक सिद्ध महात्मा के पास ले गया। दोनों महात्मा को प्रणाम कर बैठ गए। महात्मा के पूछने पर लक्ष्मीचंद ने रामेश्वर के मन की शंका बताई और पूछा—"क्या यह ठीक सोच रहा है ?"

महात्मा ने कहा—"रामेश्वर, तुम क्या सोच रहे हो ?"

रामेश्वर बोला—"महात्मन, मैं विवाह कर मां को खतरे में नहीं डालना चाहता। मैं साधु बनकर दीन-दुखियों की सेवा करना चाहता हूं। बहू लाकर, मां की जीवन-लीला समाप्त क्यों करूं ?"

"मां से तुम्हें इतना प्यार है। यह तो अच्छी बात है ? मगर ज्योतिषी आगे क्या कहना चाहते थे, यह तुम्हें क्या पता? अपने मन की शंका को सच्चाई में बदलकर परेशान न हो। अपनी मां की दीर्घायु के लिए भगवान से प्रार्थना करो। मातृभक्त की प्रार्थना बेकार

नहीं होगी। लो, यह भभूत अपने मस्तक पर लगाओ। मन शांत हो जाएगा। जाओ, विवाह कर, अपनी मां की सेवा करो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"—कहते हुए महात्मा ने उसे भभूत दे दी।

दोनों ने महात्मा को प्रणाम किया। फिर घर लौट आए। लक्ष्मीचंद ने राधा का विवाह रामेश्वर से कर दिया। विवाह के बाद रामेश्वर अपनी पत्नी को लेकर मां के पास आया। तीनों आराम से रहने लगे।

राधा सास की खूब सेवा करती। एक दिन यशोदा के सिर में दर्द उठा। राधा ने सास के सिर में तेल डाला। फिर उसका सिर अपनी गोद में रखकर धीरे-धीरे सहलाने लगी।

अचानक वही ज्योतिषी वहां आ पहुंचे। ज्योतिषी ने यशोदा को बहू की गोद में लेटे देखा। यह देखकर वह सोच में पड़ गए।

यशोदा और रामेश्वर ने उठकर ज्योतिषी को प्रणाम किया। रामेश्वर ने पूछा—"किस चिंता में पड़ गए ?"

ज्योतिषी बोला—"याद है, मैं कुछ बताते-बताते रुक गया था। मेरी भविष्यवाणी के अनुसार तुम्हारी मां की मृत्यु बहू की गोद में होनी चाहिए थी। लेकिन आश्चर्य है कि वह अभी भी जीवित है। मेरी भविष्यवाणी गलत कैसे हो गई ? यह समझ में नहीं आता।"

रामेश्वर बोला—"सोचा तो मैंने भी यही था, मगर एक सिद्ध महात्मा की भस्मी मस्तक पर लगाकर मेरा यह डर जाता रहा। उसी दिन से लगातार मैं मां की दीर्घायु के लिए भगवान से प्रार्थना करता रहा हूं, शायद उसी का यह परिणाम हो।"

तभी वह सिद्ध महात्मा भी वहां आ गए। उन्हें देखकर रामेश्वर चकित था। महात्मा बोले—"तुमने ठीक ही कहा रामेश्वर। ज्योतिष विद्या की सही गणना को बदलने वाला और कोई नहीं, एक मातृभक्त की प्रार्थना ही थी। अब चिंता छोड़ो। दोनों बेटे-बहू मां की सेवा करो।" इतना कह महात्मा जी लौटे और गायब हो गए। ●

सीढ़ी पर फूल

—क्षमा शर्मा

सैकड़ों वर्ष पहले की बात है । पोमलाकराई स्थान पर एक गुफा थी । इसे वहां के लोग माराई नाम से पुकारते थे । माराई के पास एक ऊंची चट्टान सीधी खड़ी थी ।

दिन में चरवाहे वहां पशुओं को लेकर आते । पशु इधर-उधर चरने लगते । चरवाहे वहां बैठकर अपने सुख-दुःख की बातें करते । वर्षों से वे चरवाहे माराई के पास आकर बैठते थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी चट्टान पर चढ़ने का साहस आज तक नहीं किया था ।

एक बार की बात, हर रोज की तरह चरवाहे वहां आए । अपने-अपने जानवरों को छोड़, वे बातचीत करने लगे । तभी एक चरवाहा बोला—"अरे, देखो वहां कौन है ?"

"कहां-कहां ?"—कई लोग एक साथ बोले और इधर-उधर देखने लगे ।

—"उधर, चट्टान के ऊपर ।"

सब ने चट्टान के ऊपर देखने की कोशिश की । सूरज की रोशनी उनकी आंखों पर पड़ रही थी । वे खड़े होकर देखने लगे ।

—"वहां तो कोई लड़की है ।"

—"मगर वहां कैसे पहुंच गई !"

—"अगर जरा-सा भी पैर आगे बढ़ाया, तो नीचे गिर जाएगी ।"

चरवाहे आपस में इस तरह बात करते हुए उसे जोर-जोर से आवाजें देने लगे । लेकिन लड़की ने किसी की आवाज नहीं सुनी ।

वह चरवाहा, जिसने लड़की को सबसे पहले देखा था, बोला—"देखो, वहां खड़ी वह लड़की किसी परी जैसी लगती है । जैसे परी रानी स्वयं हमें आशीर्वाद देने उतरकर आई हो ।"

"आशीर्वाद की बात बाद में । पहले उसे चट्टान से नीचे उतारो ।"—दूसरे चरवाहे ने कहा ।

वे सब सोचने लगे—'इस लड़की को नीचे कैसे उतारें ? रात होने के बाद ठंड में इस लड़की का क्या होगा ?' उनमें से एक ने कहा—"हमें गांव वालों को खबर देनी चाहिए ।"

दो-तीन चरवाहे मिलकर गांव वालों के पास गए । उन्हें रास्ते में जो भी मिला, उसी को उन्होंने चट्टान पर खड़ी लड़की के बारे में बताया ।

देखते-देखते वहां गांव वालों की भीड़ लग गई । वे माराई गुफा की तरफ चल दिए ।

लड़की अभी तक वहीं खड़ी थी । सब उसे देखकर चकित थे । कह रहे थे—'वह जरूर कोई देव कन्या है ।'

गांव के एक अमीर आदमी ने कहा—"क्यों न दो-चार लोग चट्टान के ऊपर जाएं और लड़की को जबरदस्ती उतार लाएं ।"

लेकिन आज तक कोई उस चट्टान पर नहीं चढ़ा था । इतने लोगों को अपनी ओर आते देख लड़की घबराकर, यदि इधर-उधर भागती, तो गिर भी सकती थी । कोई उपाय न सूझा, तो सब लोग गांव के सबसे बुद्धिमान आदमी के पास गए । उसका नाम उमायलम था ।

उमायलम ने सारी बात ध्यान से सुनी । फिर उसने गांव वालों से कहा कि वे बहुत सारे बांस इकट्ठे कर लें । लोग बांस काटने चल दिए । जल्दी ही बांसों का ढेर लग गया । अब उमायलम और गांववालों ने मिलकर एक बहुत लम्बी सीढ़ी तैयार की । सीढ़ी तैयार करते-करते शाम हो गई । फिर सबने मिलकर सीढ़ी उठाई और माराई गुफा की तरफ चल दिए ।
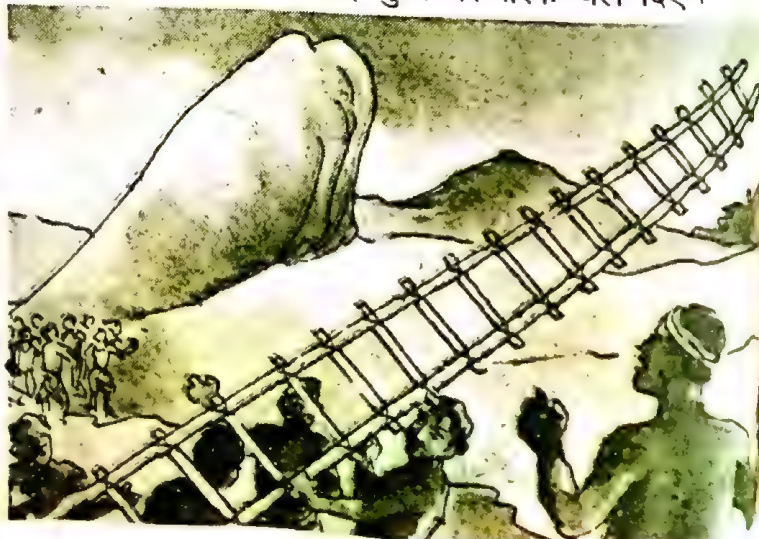
सबसे आगे उमायलम था।

वहां पहुंचकर उन लोगों ने सीढ़ी को चट्टान से टिका दिया, ताकि लड़की सीढ़ी के सहारे नीचे उतर सके। मगर यह क्या ! लड़की ने सीढ़ी की तरफ देखा तक नहीं। न जाने उसके मन में क्या था !

यह देख उमायलम भी सोच में पड़ गया। अंधेरे से पहले लड़की को चट्टान से नीचे उतारना जरूरी था। गुफा के चारों ओर लाल-पीले, नीले फूल खिले थे। फूलों को देख उमायलम को एक उपाय सूझा। उसने गांव वालों की मदद से लाल फूलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा बनाया। फिर गुच्छे को एक बांस के सिरे से बांध दिया गया। अब उस बांस के साथ कई बांस और बांधे गए। और इस तरह फूलों के गुच्छे को धीरे-धीरे लड़की के पास तक पहुंचा दिया गया।

फूलों को देखकर अचानक लड़की के चेहरे के भाव बदल गए। उसने मुसकराकर हाथ आगे बढ़ाया। पर उमायलम ने बांस थोड़ा नीचे खिसका लिया। लड़की थोड़ा आगे आई, बांस फिर थोड़ा नीचे खिसका लिया गया। और उसे सीढ़ी के सिरे पर टिका दिया। इस तरह लड़की फूलों के पीछे नीचे उतरती गई।

लड़की नीचे आ गई। यह देख, गांव वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। वे सब उस पर फूलों की वर्षा करने लगे। उमायलम की कोई संतान नहीं थी। उसने लड़की को अपनी बेटी बना लिया। लड़की को उसने नाम दिया—का पाह शिन्यू यानी 'फूलों द्वारा लाई हुई लड़की।'

शिन्यू बेहद बुद्धिमान थी। गांव वाले अपनी सारी समस्याओं के बारे में उससे राय लेते। चतुर शिन्यू पलक झपकते ही उनकी समस्याओं का समाधान कर देती। धीरे-धीरे वे लोग उसे 'का सिएम' कहकर पुकारने लगे, जिसका अर्थ था—'पटरानी।' शिन्यू के विवाह के बाद उसके बच्चों को भी 'सिएम' कहा गया। इन्हीं 'सिएम' लोगों ने शिलांग में अपना पहला राज्य स्थापित किया था।

(मेघालय की लोक-कथा)

हवाई महल

—पी.आर. शुक्ल

दो भिखारी थे। उनके न कोई घर-द्वार था, न नाते-रिश्तेदार। दोनों दिन भर इधर-उधर से भीख मांगकर खाते और रात में किसी कुएं, तालाब या मंदिर के पास सो जाते।

दोनों भिखारियों में आपस में भारी मित्रता थी। वे साथ-साथ भीख मांगते, साथ ही खाते और हर समय साथ रहते थे। एक दिन उन्हें किसी धनी सेठ ने घी चुपड़ी गेहूं की रोटियां व मट्ठा दिया। दोनों ने खूब छककर खाया और डकार ली। रात में सोते समय भी भोजन की याद करते-करते उनके मुंह में पानी आ जाता था।

"यार, गेहूं की रोटी तो बड़ी स्वादिष्ट होती है।"—एक भिखारी से न रहा गया, तो वह बोल पड़ा।

"और मट्ठे के साथ तो गेहूं की रोटी का मजा दोगुना हो जाता है।"—दूसरा बोला। "सुनो दोस्त, मैं तो अब एक काम करूंगा। मैं खेत खरीदूंगा। गेहूं की खेती करूंगा, जिससे हमेशा गेहूं की रोटियां खा सकूं।"—पहले भिखारी ने बहुत सोच-समझकर

अपनी योजना बताई।

"ठीक है यार, तुम खेत खरीदो। गेहूं की खेती करो। मैं तो एक भैंस खरीदूंगा। उसके दूध से घी और मट्ठा बनाऊंगा। तुम मुझे गेहूं की रोटियां खिलाना और मैं तुम्हें घी और मट्ठा।"—दूसरे भिखारी ने कहा।'

दोनों एक दूसरे की बातें सुनकर बहुत खुश हुए।

दूसरे दिन काफी धूप निकलने पर उनकी आंखें खुलीं। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। उन्हें फिर रात की बातें याद आ गईं।

"तो तुम खेत खरीदोगे और गेहूं की खेती करोगे। यह पक्की बात है?"—दूसरे भिखारी ने पहले भिखारी से पूछा।

"हां दोस्त, बिल्कुल पक्का है और तुम भी भैंस खरीदोगे। दूध से घी, मट्ठा बनाओगे। हम दोनों जिंदगी भर गेहूं की घी चुपड़ी रोटी और मट्ठा खा सकेंगे।"—कहते-कहते पहले भिखारी के मुंह में पानी आ गया।

"हां दोस्त।"– दूसरा भिखारी बोला—"मैं भैंस अवश्य पालूंगा, लेकिन उसे चराने कहीं नहीं जाऊंगा। मेरी भैंस तुम्हारे खेत के आसपास ही चरा करेगी।"

"वाह, यह कैसे हो सकता है? तुम्हारी भैंस मेरे खेत के पास कैसे चर सकती है? मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।"—पहले भिखारी को क्रोध आ गया।
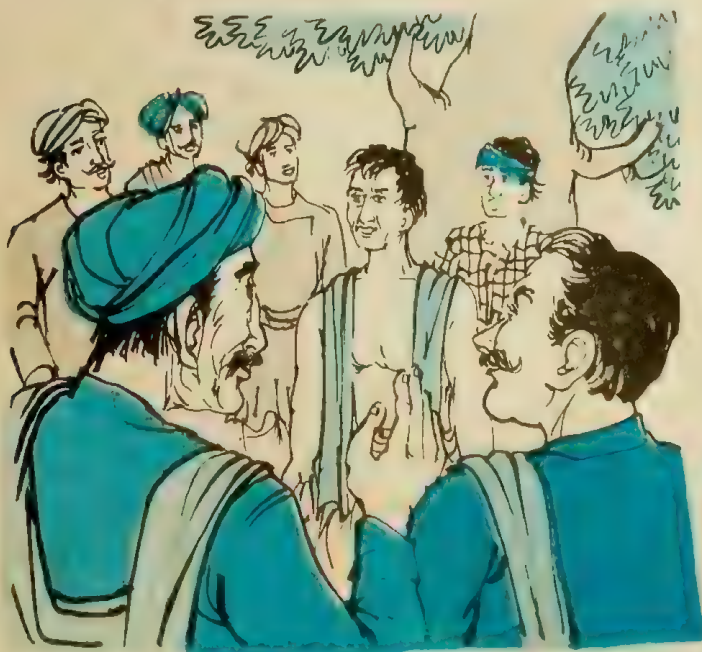
दोनों भिखारी इस बात को लेकर झगड़ने लगे। उनकी चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग इकट्ठे हो गए।

दोनों भिखारी एक साथ बोल रहे थे। एक दूसरे को अपशब्द भी कहने लगे थे। उनकी बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी। तभी एक वृद्ध व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा—"देखो भाई, तुम लोग आपस में झगड़ा बंद करो। पंचायत बैठा लो। पंच तुम्हारा न्याय करेंगे।"

दोनों भिखारी पंचायत के लिए तैयार हो गए। दोपहर हो रही थी। एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। दोनों भिखारी अपनी-अपनी जिद पर अड़े थे। एक भिखारी कह रहा था—"मैं तुम्हें अपने खेत में भैंस नहीं चराने दूंगा।" और दूसरा भिखारी कह रहा था—"मैं तुम्हारे खेत में ही अपनी भैंस चराऊंगा।" पंच भी कुछ समझ न पाए कि माजरा क्या है।

तभी एक पंच ने दोनों को चुप कराया और एक भिखारी से पूरी बात बताने के लिए कहा। पहले भिखारी ने सेठ द्वारा गेहूं की घी चुपड़ी रोटी व मट्ठा दिये जाने से लेकर अंत तक की बात बता दी। पंच ने दूसरे भिखारी से पूरी बात बताने के लिए कहा। उसने भी वही कहानी दुहरा दी। पंच सब कुछ समझ गया। उसने गम्भीर स्वर में पहले भिखारी से पूछा —"तुम्हारे खेत कहां हैं?"

"अभी कहां हैं? लेकिन मैं खरीदूंगा।"—पहले भिखारी ने उत्तर दिया।

"तुम्हारी भैंस कहां है?"—पंच ने दूसरे भिखारी से पूछा।

"अभी कहां है?—पर मैं खरीदूंगा।"—दूसरे ने उत्तर दिया।

पंचायत ने निर्णय दिया—"अभी न तुम्हारे पास खेत हैं और न भैंस। जब हों, तब झगड़ना। अभी जाओ और प्रेम से रहो।"

और पंचायत उठ गई। •

बाग के आम

एक था माधो । सोचता ज्यादा, काम करता कम । एक दिन...

बाजार जा रहे हो । आम लेते आना ।

उफ, हमेशा खर्चे की बात । मगर लाने होंगे...

बाजार में आम तुलवाए

माधो ने सोचा —'अरे हां, बाग में मुफ्त मिल जाएंगे, वहीं चलूं ।' जा पहुंचे बाग में...

माधो ने अपनी परेशानी बताई, तो

सीढ़ी की तलाश में माधो बाग से बाहर आया। कुछ दूर पर...

बस, माधो सीढ़ी उठा चल दिया।

माधो ने सोचा —'सीढ़ी छिन गई, तो आम खरीदकर ही ले जाने पड़ेंगे।' बस, वह भी भागने लगा। आगे...

छप्पर कमजोर था। माधो ने उस पर चढ़कर सीढ़ी ऊपर खींची, तो...

झोंपड़ी में रहती थी एक बुढ़िया । वह खाना बना रही थी । माधो सीढ़ी सहित ऊपर से नीचे टपका, तो...
बाप रे ! यह कहां आ गया ?

तभी बाहर शोर मचा —पकड़ो, पकड़ो । माधो झोंपड़ी का दरवाजा खोल बाहर भागा...
सत्यानाश जाए तेरा नासपीटे !
सीढ़ी मिल गई । अब उसके पीछे क्यों भागें !
ये सब लंगड़े हो जाएं, तो अच्छा हो ।

भागता-भागता माधो किसी दूसरे बाग में पहुंच गया...
कमबख्त ! शैतान...
बुढ़िया पीछे ही पड़ गई । क्या करूं ? भैंस पर चढ़, पेड़ पर बैठ जाऊं ।

और कुछ न सूझा, तो माधो भैंस पर चढ़ गया । भैंस बिदक कर भागी, तो...
अच्छा हुआ । भैंस गई । बुढ़िया अब कैसे पकड़ेगी मुझे ? ऊपर आई, तो नीचे गिरा दूंगा ।

पेड़ पर आम देखे, तो माधो उन्हें तोड़ जेबों में भरने लगा। उधर शोर सुन माली भी वहां आ गया...
क्या बात है ?
पहले मेरा छप्पर तोड़ा। अब तेरे आम तोड़ रहा है।
मुफ्त के आम। इतने सारे! मेरे रुपए बचे।

माली भड़क उठा। तुरंत लट्ठ दिखाकर माधो से उतरने को कहा...
कैसे उतरूं ? मैं नहीं जानता। गिर पड़ा तो...
मैं नीचे खाट बिछाता हूं। खाट पर कूद पड़ो। सारे आम मुफ्त में ले जाना।

माधो जैसे ही खाट पर कूदा, वह टूट गई। पैर टूटे बानों में उलझ गए...
अब भाग! चोरी करके आम खाएगा ? जुर्माने के दे बीस रुपए। वर्ना यह चादर..
हाय हाय! मुसीबत गले पड़ गई। क्या करूं ?
मेरा छप्पर तोड़ा। खाट भी तोड़ी। दे हरजाने के रुपए। वर्ना ला कुर्ता...

और फिर...
मुफ्त के आमों के चक्कर में कुर्त्ता, चादर गए। दस नकद भी गए। फिर भी आम एक न मिला।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष १७, अंक ५, नई दिल्ली; मार्च '९१ माघ-फाल्गुन, शक सं. १९१२

बच्चों के बीच हिन्दुस्तान टाइम्स के कार्यकारी अध्यक्ष श्री नरेश मोहन। 'नंदन' सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती (बाएं)।

बहादुर बच्चों का अभिनंदन किया नंदन ने

नई दिल्ली। प्रधान मंत्री श्री चंद्रशेखर ने वीर बच्चों को पुरस्कार दिए। पुरस्कार पाने के बाद बच्चे सीधे 'नंदन' कार्यालय में आए। 'नंदन' की ओर से साहस और वीरता के राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाले बच्चों का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर हिन्दुस्तान टाइम्स के कार्यकारी अध्यक्ष श्री नरेश मोहन बच्चों के बीच बैठे। बच्चों को रेशमी स्कार्फ बांधे। ढेर सारे उपहार दिए। बच्चों के साहस और बहादुरी को सराहते हुए उन्होंने घोषणा की-संस्थान की ओर से हर वर्ष ऐसे बहादुर बच्चों का सम्मान किया जाएगा।

भारतीय बाल कल्याण परिषद की अध्यक्ष श्रीमती विद्याबेन शाह ने कहा कि हिन्दुस्तान टाइम्स जैसे बड़े पत्र समूह और 'नंदन' जैसी लोकप्रिय पत्रिका द्वारा सम्मान प्राप्त करना इन बच्चों के लिए गौरव की बात है। इस देश को अपने बहादुर बच्चों पर नाज है।

'नंदन' के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने बच्चों को बधाई दी। कहा कि ये बच्चे हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस में पहली बार आए हैं। लेकिन एक तरह से यह बच्चों का अपना घर ही है। क्योंकि यहां से उनकी सबसे प्रिय पत्रिका 'नंदन' का प्रकाशन होता है, जिसे देश-विदेश में पंद्रह लाख बच्चे पढ़ते हैं। इस पत्रिका ने देश की पूरी पीढ़ी का निर्माण किया है।

इस अवसर पर बच्चों ने अपने संस्मरण भी सुनाए। पंजाब के सात वर्षीय ध्रुव कौल के साथ जो बीती, उसे सुन सभी की आंखें भर आईं।

सिपाही को इनाम

नई दिल्ली। सिपाही राजीव कुमार को दिल्ली पुलिस के आयुक्त अरुण भगत ने पुरस्कृत किया है। राजीव कुमार कहीं जा रहा था। उसने दो छोटे-छोटे बच्चों को सड़क पर बेहोश पड़े देखा। उसने उन बच्चों को अस्पताल पहुंचाया। बच्चों के माता-पिता को खबर की। जब तक माता-पिता नहीं आ गए, वह अस्पताल में रहा।

बच्चा हूं, लड़की हुई तो क्या

दिल्ली के ही नहीं, देश के कई नगरों से बाल-कवि एकत्र हुए। उन्होंने जोरदार शब्दों में अपनी कविताएं पढ़ीं। विषय थे—मैं बच्चा हूं, लड़की हुई तो क्या; हम बच्चे हैं, हम खेलेंगे; ईश्वर एक है, एक है मानव।

श्रम तथा कल्याण मंत्री श्री रामजीलाल सुमन ने तेइस बच्चों को पुरस्कार दिए। इन बच्चों ने बालकनजी जी बारी इंटरनेशनल की 'राष्ट्रीय बाल कविता प्रतियोगिता' में इनाम जीते थे। कु. आरती अय्यर को मैथिलीशरण गुप्त बाल-कवि पुरस्कार दिया गया।

सभी बाल-कवियों को 'नंदन' की प्रतियां भेंट की गईं।

चांदी निकालेंगे

दुबई। अमरीका से १९४४ में भारत और सऊदी अरब के लिए दो हजार टन चांदी भेजी गई थी। अब उसका मूल्य पचास करोड़ डालर है। जो जहाज इस चांदी को ला रहा था, वह समुद्र में डूब गया था। अब उसे समुद्र से निकाला जाएगा।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

तुम्हारा पड़ोसी भूखा हो और तुम पकवान खाओ, यह अधर्म है।
—आदि शंकराचार्य

लड़ाई से तबाही

इन दिनों खाड़ी क्षेत्र में लड़ाई चल रही है। लड़ाई शुरू हुई थी तो समझा जा रहा था—एक सप्ताह भी नहीं चलेगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इराक और कुवैत में भारी नुकसान हुआ है। बहुत-से परिवार मुसीबत में फंस गए हैं। हजारों बालक भी तरह-तरह से कष्ट उठा रहे हैं। अभी न जाने कितना विनाश और होगा!

लड़ाई छिड़ती है तो उसमें बच्चों का कोई दोष नहीं होता। पर लड़ाई के कारण सबसे अधिक मुसीबतें उन को झेलनी पड़ती हैं। किसी का पिता लड़ाई में मरता है। कितने ही बेघर-बेसहारा हो जाते हैं। अन्य मुसीबतें भी आती हैं। राजधानी दिल्ली में हजारों बच्चों ने प्रदर्शन किया। उनकी मांग थी कि लड़ाई तुरंत रोकी जाए। आज के बच्चे इससे सबक ले सकते हैं। वे जब बड़े होंगे,तो इस धरती पर लड़ाइयां नहीं होने देंगे।

सोने के बुद्ध

टोक्यो। उत्तरी कोरिया में सन १४२५ की तीन बुद्ध की मूर्तियां पाई गई हैं। इन पर सोने का पानी चढ़ा है। ये जिस स्तम्भ पर खड़ी हैं, वह तांबे का बना है, लेकिन कागज जैसा पतला है।

बाल-साहित्य पुरस्कार

कलकत्ता। वर्ष १९८८ या इसके बाद की प्रकाशित पुस्तकें पुरस्कार के लिए आमंत्रित की जाती हैं। एक पुस्तक की चार प्रतियां भेजें। भेजी गई पुस्तकों पर पहले कोई पुरस्कार न मिला हो। विषय हैं—१. प्रेरक बाल गीत;२. बाल नाटक; ३. बच्चों की समस्याओं का विवेचन एवं समाधान करने वाली पुस्तकें;४. भारतीय धर्म और संस्कृति। प्रत्येक वर्ग की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर १००१ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। अंतिम तिथि ३० अप्रैल १९९१। पुस्तकें भेजने का पता—**निदेशक-मनीषिका, २१६ गोपाल भवन, ४३ कैलाश बोस स्ट्रीट, कलकत्ता।**

प्रगल्भ जी सम्मानित

नई दिल्ली। कवि श्री राधेश्याम प्रगल्भ बच्चों के प्रिय कवि हैं। 'बालकनजी बारी इंटरनेशनल' ने वर्ष के श्रेष्ठ बाल साहित्यकार के रूप में उन्हें सम्मानित किया है।

रेल या हवाई जहाज

बॉन। जर्मनी में नई रेलगाड़ियां चलाई जाएंगी। इनकी रफ़्तार होगी पांच सौ किलोमीटर प्रति घंटा। इन रेलगाड़ियों में सभी सुविधाओं के साथ टेलीफोन भी होंगे।

हाथियों की लैफ्ट-राइट

त्रिवेंद्रम। यहां पर्यटकों के लिए एक अद्‌भुत परेड का आयोजन किया गया। इसमें इक्यावन हाथियों ने भाग लिया। हाथियों को खूब सजाया गया था।

सिगरेट के ख़िलाफ

स्टाकहोम। स्वीडन में सिगरेट के खिलाफ नए तरह का प्रचार शुरू किया गया है। इसमें सिगरेट पैकेटों पर कंकालों के चित्र छापे जाएंगे। साथ ही उन लोगों की कहानियां भी, जो सिगरेट पीने के कारण जल्दी मर गए।

युद्ध नहीं फिर भी

वाशिंगटन। अमरीका में इन दिनों गैस मास्क खरीदने की होड़ लगी है। ये मुखौटे विशेष रूप से बनाए गए हैं। इन्हें पहनने के बाद मस्तिष्क पर रासायनिक हथियारों से होने वाला विषैला प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि अमरीका में अभी युद्ध नहीं हो रहा है। फिर भी वहां के लोग डरे हुए हैं।

होटल में चौपाल

नई दिल्ली। यहां के पांच सितारा होटल 'अशोक' में 'चौपाल' खोली गई है। इसका उद्‌घाटन उप-प्रधानमंत्री श्री देवीलाल ने किया। चौपाल का पूरा वातावरण गांव जैसा है। यहां थाली में भोजन परोसा जाएगा। इसमें ग्रामीण लोग भोजन कर सकेंगे।

सिर्फ चाकलेट

बर्न। सबसे ज्यादा चाकलेट कहां खाई जाती है? स्विट्‌जरलैंड में। यहां के लोग चाकलेट को वैसे ही खा जाते हैं, जैसे हम रोटी खाते हैं।

बाल-कवि सम्मेलन

इलाहाबाद। आकाशवाणी केंद्र ने बच्चों का कवि सम्मेलन किया। इसमें भाग लेने वाले बीस कवियों की उम्र ८ से १४ वर्ष थी। बच्चों ने पशु-पक्षियों से लेकर देश और दुनिया के हालात पर कविताएं पढ़ीं। सम्मेलन का संचालन सुपर्णा और रवि ने किया।

रमेश कौशिक पुरस्कृत

जाने-माने कवि श्री रमेश कौशिक को बुलारिया का सबसे बड़ा पुरस्कार मिला है। बुलारिया के राजदूत श्री बोगोमिल दोज्देव्सकी ने उन्हें यह स्वर्ण पदक भेंट किया। किसी भारतीय को यह पुरस्कार पहली बार दिया गया है। इस पदक पर उड़ने वाला घोड़ा बना है। 'नंदन' के पाठक श्री कौशिक की कविताएं पढ़ते रहे हैं।

बिल्लियों को लाखों

टानब्रिज (इंग्लैंड)। एडा पौंटन का निधन हुआ। उनकी वसीयत में काफी धन अपनी पालतू बिल्लियों के लिए छोड़ा गया है। यह राशि पांच लाख रुपए है। श्रीमती पौंटन ने पशुओं पर अत्याचार रोकने वाली संस्थाओं के लिए भी काफी धन छोड़ा है।

सबसे बड़ा कम्बल

पेरिस। फ्रांस की एक कम्पनी ने विश्व का सबसे बड़ा कम्बल बनाया है। यह इक्कीस फुट चौड़ा और इकत्तीस फीट लम्बा है। इसे दो हजार, एक सौ साठ टुकड़े जोड़कर बनाया गया है। वजन है, दो सौ बहत्तर किलोग्राम।

दुनिया भर के नोट

पुणे। श्रीकृष्ण परांजपे का शौक दुनिया भर के नोट इकट्ठे करना है। उनके पास एशिया का सबसे बड़ा और हांगकांग का सबसे छोटा नोट भी है। तरह-तरह के नोट इकट्ठे करने में पर्यटकों ने उनकी खूब मदद की है। परांजपे नोटों का एक संग्रहालय बनाना चाहते हैं।

नं. बा. स. ३६ ज

भारत रत्न मोरारजी

बम्बई। प्रसिद्ध गांधीवादी नेता और भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई को इस वर्ष 'भारत रत्न' से सम्मानित किया है। श्री देसाई 'नंदन' से भी वर्षों तक जुड़े रहे हैं। वह 'ज्ञानवार्ता' स्तम्भ में बच्चों के सवालों के जवाब देते थे।

बूढ़े बच्चे

उत्तरी कैरोलिन। अमरीका की १०४ वर्ष की दो जुड़वां बहनों ने अपना जन्म-दिन मनाया। इन दोनों के परिवार में पौने दो सौ लोग हैं।

बड़ी शिव प्रतिमा

नई दिल्ली। दिल्ली-गुड़गांव मार्ग पर दुनिया की सबसे बड़ी शिव प्रतिमा का निर्माण किया जा रहा है। यह बिरला कानन में बन रही है। इसकी ऊंचाई होगी—अस्सी फीट। मूर्ति को बनाने वाले हैं जाने-माने मूर्तिकार श्री मातुराम वर्मा। मातुराम वर्मा रामायण के प्रमुख पात्रों की सुंदर मूर्तियां बना चुके हैं।

पिछला वर्ष गर्म

वाशिंगटन। एक सौ दस वर्षों में १९९० ऐसा वर्ष था जब पृथ्वी सबसे ज्यादा गर्म रही। वैज्ञानिकों ने राष्ट्रपति बुश को पत्र लिखकर चेतावनी दी है। यदि वातावरण में कार्बन-डाई-आक्साइड इसी तरह बढ़ती रही, तो धरती रहने लायक नहीं रहेगी।

बेचारे कहां जाएंगे

जयपुर। हर वर्ष सर्दी शुरू होने से पहले लाखों प्रवासी पक्षी साइबेरिया से भरतपुर के घना पक्षी विहार में आते हैं।
फरवरी और मार्च में ये पक्षी वापस जाते हैं। मगर इस वर्ष खाड़ी युद्ध शुरू होने के कारण ये साइबेरिया वापस नहीं जा सकेंगे। वैसे भी इस बार ये कम संख्या में आए हैं।

नन्हे समाचार

☐ चीनी शहर हुजूहोड में कूड़े और कोयले के चूरे को मिलाकर एक ईंधन तैयार किया गया है। कूड़े का इससे अच्छा उपयोग शायद दूसरा नहीं हो सकता।

☐ बम्बई के निकट समुद्र में चार स्थानों पर तेल का पता चला है।

☐ दक्षिण अमरीका के देश पेरागुए में एक मुर्गे को १५ दिन की जेल हो गई। वह लड़ाकू था—पड़ोसियों के घर में घुसकर बच्चों को काट लेता था। बाद में लोगों के कहने-सुनने पर जज ने सजा माफ कर दी।

☐ पूना के पास एक घायल सारस देखा गया। उसके दाएं पैर की हड्डी टूट गई थी। उसका इलाज किया गया। पता नहीं कि सारस कहां से आया था।

☐ हाल ही में बालाघाट में एक मानवभक्षी तेंदुआ पकड़ा गया। उसे बेहोश करके जांच की गई,तो उसके शरीर से दो गोलियां निकलीं। वह घायल होने के कारण ही मनुष्यों को मारने लगा था।

☐ आइसलैंड के ज्वालामुखी हेकला में विस्फोट हुआ। उसका लावा आकाश में १२ किलोमीटर की ऊंचाई तक उछल गया।

☐ ब्रिटेन के रिचर्ड ब्रेंसन ने गुब्बारे में बैठकर प्रशांत महासागर को पार किया। वह जापान से उड़े और कनाडा में उतरे। वह १९८७ में इसी तरह अंधमहासागर को पार कर चुके हैं।

☐ विदर्भ में लोनार गांव के पास एक झील है। वैज्ञानिकों का कहना है पचास हजार वर्ष पहले एक उल्का के गिरने से वह झील बनी थी।

☐ एक मछुआरा मिस्र की नील नदी में मछली पकड़ने गया। उसके कांटे में फंस गया एक थैला,जिसमें बहुत सारे पत्र थे। पता चला एक डाकिया पत्रों को नदी में फेंक देता था। आखिर पकड़ा गया।

सचित्र समाचार

↑ डाक विभाग ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर डाक टिकट जारी किया।

← मोदीनगर में शहीद आशाराम त्यागी की जयंती : बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम किए।

↓ अलीगढ़ में महात्मा गांधी की पुण्य तिथि पर राष्ट्रीय एकता प्रदर्शनी लगी। सैकड़ों बच्चों ने इसे देखा।

↑ मशहूर क्रिकेट खिलाड़ी लाला अमरनाथ और जाने-माने चित्रकार श्री मकबूल फिदा हुसैन को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है।
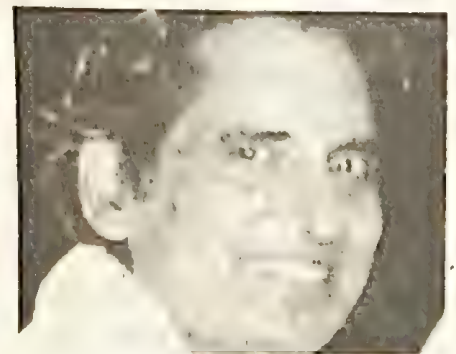
↑ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री गोपालदास नीरज को पद्मश्री।

← चित्तौड़ के सावा गांव में भैंसों और मेढ़ों की लड़ाई की प्रतियोगिता : सैकड़ों लोगों ने इसे देखा।

राजकुंवर की पहचान

एक राजा था । किसी साधु के आशीर्वाद से एक कन्या ने राजमहल में जन्म लिया । नाम रखा गया राजल । राजल बहुत सुंदर थी । राजा-रानी उसे बहुत प्यार करते थे । साधु ने कहा था —'एक दिन राजकुमारी दरबार में आएगी । उसके एक महीने के अंदर उसका विवाह कर देना, वर्ना अनिष्ट होगा ।'

राजकुमारी राजल युवा हो गई । सचमुच एक दिन वह परम्परा तोड़कर दरबार में पहुंची । राजा ने बेटी को दरबार में देखा, तो साधु की बात याद आ गई ।

दूसरे दिन राजा ने मंत्री से कहा —'राजल के लिए योग्य वर की तलाश करो । एक महीने में विवाह होना जरूरी है । तिथि पक्की करके ही आना और साथ ही हमारी ओर से राजकुमार को अंगूठी भी पहना देना ।'

मंत्री जाने लगा, तो राजकुमारी ने उसे बुलवाया । एक जोड़ी मरदाने कपड़े देते हुए कहा —'जो राजकुमार मेरी तरह मां-बाप की अकेली संतान हो और जिसके बदन पर ये कपड़े सही आ जाएं, मैं उसी के साथ विवाह करूंगी ।' वह विवाह नहीं करना चाहती थी, इसीलिए सोच रही थी —'ऐसा वर मिलना कठिन होगा । विवाह टल जाएगा ।' मंत्री ने कपड़े ले लिए ।
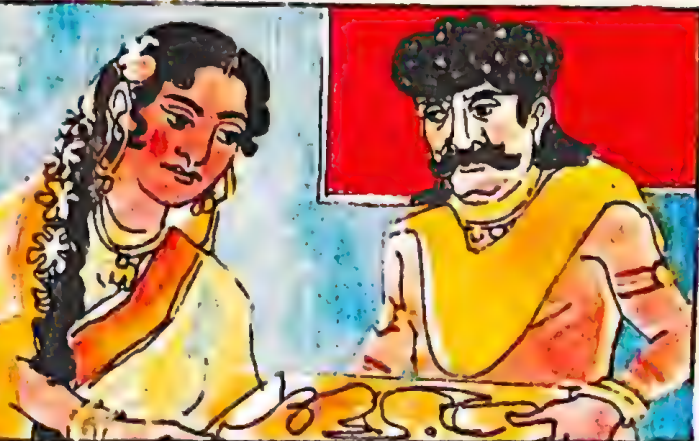
दो सेवकों को साथ ले, दूसरे दिन मंत्री चल पड़ा वर की खोज में। बहुत से राजकुमार देखे, मगर राजकुमारी की शर्त ही ऐसी थी —कहीं इकलौता राजकुमार मिलता, तो कपड़े ठीक न आते। कहीं कपड़े बदन पर ठीक आते, तो राजकुमार मां-बाप का इकलौता न होता। बेचारा मंत्री परेशान...

आखिर एक जगह दोनों बातें सही बैठ गईं। कुंवर कंचल मां-बाप की अकेली संतान था। राजकुमारी के भेजे कपड़े भी उसके बदन पर सही आ गए। बस, मंत्री ने उसके पिता से मिलकर शादी की तिथि निश्चित कर दी और अंगूठी भी दे दी।

वापस आ मंत्री ने राजा को सारी बात बताई। राजा-रानी खुश। महल में शादी की तैयारियां होने लगीं।
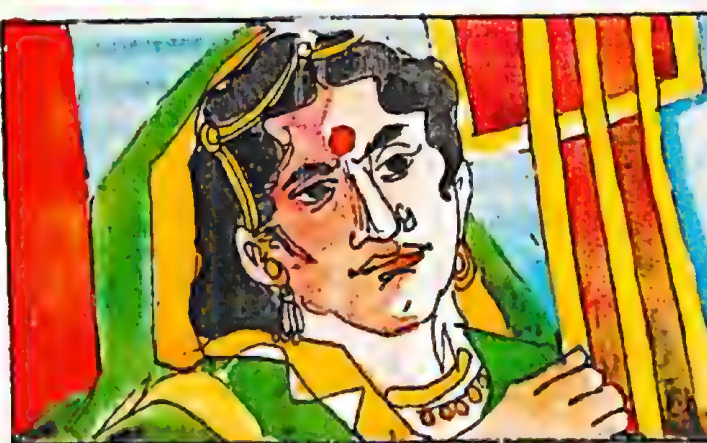
राजा की बहन इस रिश्ते से दुखी थी। वह कुंवर कंचल से अपनी बेटी का विवाह करना चाहती थी। बस वह षड्यंत्र की योजना बनाने लगी, ताकि शादी टूट जाए।

अगले दिन वह राजल के पास आई। बोली —"बेटी, तेरे साथ धोखा हुआ है। मैं कुंवर कंचल को जानती हूं। वह तो जन्म से ही आधा पागल है। मंत्री ने पूरी तरह उसे देखा-परखा नहीं। मगर तू यह राज अभी किसी को बताना नहीं।"

राजकुमारी थी भोली। बुआ की बातों में आ गई। उसने क्रोध में अपने बाल खोल लिए। कमरे में आकर लेट गई। खाना-पीना भी छोड़ दिया। राजा-रानी परेशान। पूछते, मगर वह कुछ बताती नहीं थी।

इसी बीच उसकी बुआ ने कुंवर कंचल के पास भी खबर भिजवा दी कि राजकुमारी पागल है। उसके साथ विवाह करना ठीक नहीं। मगर कुंवर था बुद्धिमान। उसने सोचा —'सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करना ठीक नहीं। चलकर देखना चाहिए।'

कुंवर कंचल सचाई जानने के लिए अपने पांच साथियों को ले चल पड़ा, राजल के पास। कुंवर और उसके मित्रों ने एक रंग के कपड़े पहन रखे थे। उनके घोड़े भी एक जैसे थे। कुंवर और साथी पहुंचे राजधानी में। किसी तरह राज उपवन के माली को भेंट देकर वहां डेरा डाल दिया।

दूसरे दिन मालिन के हाथ राजल के पास खबर भिजवाई कि राजकुंवर कंचल तुमसे मिलने आए हैं। पहले तो राजल तैयार न हुई, मगर दासी के समझाने पर वह मान गई। सोचा —'उसे देख ही लूंगी। पागल होगा, तो पता भी चल जाएगा।'
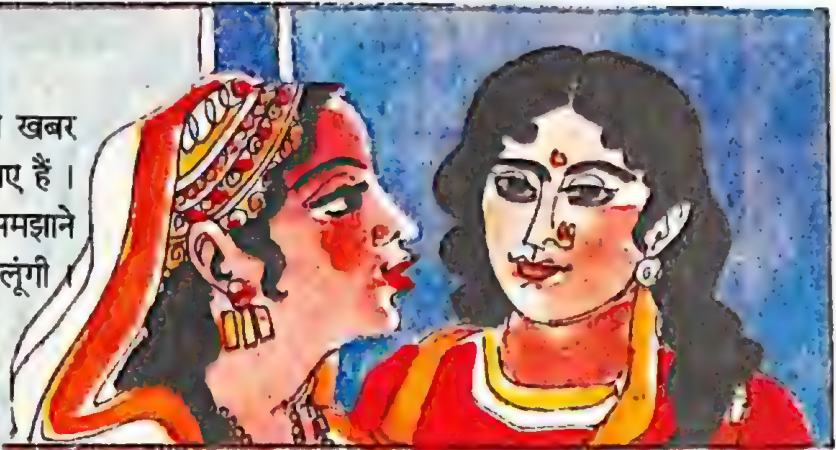
राजकुमारी बाग में गई। उन्हें देखकर आश्चर्य में रह गई। सभी सुंदर और सभ्य थे। राजकुमारी के साथ सभ्यता से पेश आए। कौन पागल है-दिखाई नहीं दे रहा था। उसने कहा —"आप में कौन है कुंवर कंचल ?" कुंवर ने कहा —"स्वयं पहचानो।" अब राजकुमारी परेशान।

फिर राजकुमारी ने ध्यान से देखा —छहों में से एक की अंगुली में उसके पिता द्वारा मंत्री के हाथ भेजी अंगूठी थी। राजकुमारी ने कुंवर को पहचान लिया। कुंवर भी समझ गया कि राजकुमारी पागल नहीं है। तभी राजा-रानी भी आ गए। भेद खुल गया, मगर तब तक राजा की बहन अपने घर चली गई थी।

राजा ने राजकुंवर के पिता के पास संदेशा भेजा। वह बारात लेकर आ गए। राजकुंवर तो यहां था ही। धूमधाम से राजकुमारी राजल और कुंवर कंचल का विवाह हो गया। विदा के समय पालकी के आगे कुंवर का घोड़ा था और पालकी के पीछे घोड़ों पर सवार होकर चल रहे थे उसके पांच मित्र।

हंस बोला

—हनुमंत राय नीरव

अरब सागर के तट पर था मछुआरों का गांव । उसके ऊपर आकाश में हल्के-हल्के बादल छाए हुए थे । मानसून आने वाली थी । गिरजाघर के आंगन में खड़े नारियल के पेड़ हवा में झूल रहे थे । मौसम सुहावना था । पर सिसली कुट्टी घर के बरामदे में उदास बैठी थी । उसका प्यारा हंस भी उसकी गोद में चुपचाप बैठा था ।

आज सुबह वह अपने पालतू हंस को गाना सिखा रही थी । हंस कोंऽ-कोंऽ की तेज आवाज में बोल रहा था । तभी गिरजाघर में से पादरी जोसेफ बाहर आए । बोले–"सिसली कुट्टी, शोर न मचाओ । क्या तुम्हें पता नहीं कि आज गिरजाघर में विवाह की तैयारी चल रही है ? क्या तुम अपने हंस को बंद करके नहीं रख सकतीं ? यह हमेशा रविवार की पूजा में भी विघ्न डालता है । अगर इसकी आवाज मेरे कानों में फिर आई तो मैं तुम्हारे पिता जी से शिकायत कर दूंगा । समझ गईं ?"

"हां फादर !"—सिसली सिर झुकाकर धीरे से बोली ।

सिसली के उदास होने का यही कारण था । वह सोच रही थी—'मेरा घर गिरजाघर के इतने पास क्यों है ? पिता जी दूसरी जगह भी तो घर बना सकते थे । मेरा हंस कितना सुंदर है ! वह आदमियों से भी ज्यादा बुद्धिमान है । लेकिन बेचारा अपनी आवाज का क्या करे ? भगवान ने इसे मधुर आवाज दी ही नहीं । इसमें इसका क्या कसूर !'

वह इन्हीं विचारों में डूबी हुई थी । तभी सामने से उसका भाई विक्टर और पादरी का बेटा पीटर आते दिखाई दिए ।

"सिसली, हमारे साथ मछली पकड़ने चलो ।"—पास आते ही पीटर बोला ।

सिसली ने कहा—"मैं चलूंगी, तो मेरा हंस भी साथ चलेगा ।"

"तुम हंस को क्यों साथ ले जाना चाहती हो ?"— पीटर ने पूछा । इस पर विक्टर ने पीटर की ओर घूरकर देखा । बात यह थी कि वह भी हंस से बहुत प्यार करता था, परंतु पीटर के सामने इस बात को स्वीकार करना नहीं चाहता था । बीच में बोल पड़ा—"अगर इसका दिल करता है, तो ले चलने दो । क्या फर्क पड़ता है ?"

वे चारों समुद्र की ओर चल दिए । पीटर की छोटी-सी नाव किनारे की रेत में धंसी खड़ी थी । वे नाव को धकेलकर पानी में ले गए । लड़कों ने चप्पू संभाल लिए । नाव समुद्र की ओर चल पड़ी । किनारे से एक मील दूर मूंगे की दीवार थी । किनारे से मूंगे की दीवार तक समुद्र सुरक्षित था । इस क्षेत्र में मछुआरों के बच्चे निर्भय होकर छोटी-छोटी डोंगियों में मछलियां पकड़ने जाते थे । मूंगे की दीवार में काफी लम्बा कटाव था । वह इसे खुले समुद्र से जोड़ता था । वे नाव खेते हुए कटाव के पास पहुंचे।

–"खुले समुद्र में चलते हैं । यहां अच्छी मछलियां नहीं मिलतीं ।"

"क्या तुमने अपने पिता जी से खुले समुद्र में जाने की आज्ञा ले ली है ?"—विक्टर ने पूछा ।

"नहीं । पर मौसम साफ है । आज कोई खतरा

नहीं ।"—पीटर ने कहा ।

सिसली जानती थी कि बच्चों का खुले समुद्र में जाना मना है । खुला समुद्र खतरों से खाली नहीं था । फिर भी वह चुप रही । वह नाव के पिछले भाग में हंस के साथ बैठी थी । दोनों लड़के चप्पू चलाते हुए नाव को खुले समुद्र की ओर खे रहे थे । अचानक सिसली की गोद में बैठे हंस ने अपना सिर उठाया । समुद्र की ओर देख, कोंऽ-कोंऽ करने लगा । उसकी आवाज में उत्साह की जगह उदासी थी ।

"क्या बात है ?"—सिसली ने पूछा—"क्या तुम्हें नाव की यात्रा पसंद नहीं ?"

हंस क्या उत्तर देता ! लोग उसकी बुद्धिमानी भरी बातों को समझते नहीं थे । वह लोगों की यह आदत जानता था । परंतु उसने कोंऽ-कोंऽ करना बंद नहीं किया । उसकी कोंऽ-कोंऽ से तंग आकर पीटर चिल्ला उठा—"अगर यह इसी तरह कोंऽ-कोंऽ करता रहा, तो हम मछलियां कैसे पकड़ेंगे ? वे डर जाएंगी । इसे चुप करो कुट्टी ।"

"पर यह तुम्हारे कुत्ते की तरह आधी रात को तो नहीं भौंकता । मैंने तो कभी शिकायत नहीं की ।"—सिसली ने पलटकर जवाब दिया । वह अपने हंस की बुराई सहन नहीं कर सकती थी ।

विक्टर झुंझलाकर बोला—"अगर तुम दोनों इसी तरह चीखते रहे, तो हम कैसे मछलियां पकड़ेंगे ?"

वे नाव खेते हुए खुले समुद्र में पहुंच गए थे । उन्होंने चारा फंसाकर बंसी की डोरी को पानी में लटका दिया । फिर धीरे-धीरे चप्पू चलाते हुए आगे बढ़ने लगे । अचानक हंस ने अपना सिर उठाया और जोर से कोंऽ-कोंऽ कर उठा । पीटर ने गुस्से में आकर कुंडे से चप्पू निकाला और हंस की ओर चला दिया । चप्पू लगने से पहले ही हंस समुद्र में कूद गया और सीधा किनारे की ओर तैरने लगा ।

"यह क्या किया ?"—सिसली चिल्लाई—"तुमने हंस को डराकर भगा दिया है !"

"ठीक ही हुआ, दोपहर तक इसकी कोंऽ-कोंऽ से जान छूटी ।"—पीटर बोला ।

सिसली परेशान हो उठी । उसे यकीन था कि हंस इतनी दूर तैरकर किनारे तक नहीं पहुंच सकता । "हमें डोरियां समेट कर हंस के पीछे जाना चाहिए ।"—वह हंस की ओर देखते हुए बोली ।

"कभी नहीं !"—पीटर चिल्लाया—"यह मेरी नाव है । मैं अपनी नाव हंस के पीछे नहीं ले जाऊंगा ।"

"क्यों नहीं ले जाओगे ? मेरे हंस की जान खतरे में है । वह डूब जाएगा ।"—सिसली रुआंसी हो गई ।

पीटर हंसते हुए बोला—"क्या बच्चों जैसी बात करती हो ? हंस भी कभी पानी में डूबते हैं !"

सिसली को उसका जवाब सुनकर गुस्सा आ गया—"अगर तुम वापिस नहीं चले, तो मैं फादर से कह दूंगी—तुम हमें मूंगे की दीवार के पार खुले समुद्र में ले गए थे ।"

यह सुन, पीटर सचमुच डर गया । वह जानता था कि उन्हें खुले समुद्र में नहीं आना चाहिए था । पर गुस्से में भिन्नाकर बोला—"याद रखना सिसली । इसके बाद हम तुम्हें कभी अपने साथ नहीं लाएंगे ।"

विक्टर ने डोरियां समेट लीं । पीटर ने गुस्से में भरकर नाव को किनारे की ओर खेना आरम्भ कर दिया । हंस तैरकर दूर चला गया था और एक धब्बे जैसा दिखाई दे रहा था । वे मूंगे की दीवार से थोड़ा ही दूर थे, तभी अचानक उन्हें अपने पीछे हल्की-सी गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी । दोनों ने समुद्र की ओर देखा । दूर क्षितिज में काले-काले बादल छा गए थे और गरज रहे थे । दोनों मछुआरों के बेटे थे । जानते थे कि इस गरज का क्या मतलब है ।

सिसली चुप रही । वह उस बादल को देख रही थी, जो समुद्र की छाती को छूता हुआ तेजी से उनकी ओर बढ़ा आ रहा था । अब दूर से आती धीमी आवाज तूफानी गड़गड़ाहट में बदलने लगी थी ।

वे मूंगे की दीवार की पहली पंक्ति के पार पहुंच गए । तभी अपने पीछे एक सफेद धारी समुद्र की सतह पर दिखाई दी । ये तूफान के तेज होने से पहले

की बौछारें थीं। फिर एक लहर ने नाव पर प्रहार किया। लहर ने पानी को इतने जोर से उछाला कि वे भीग गए।

किनारे पर हंस जोर से कोंऽ-कोंऽ कर रहा था। उसकी आवाज सुन, लोग गिरजाघर से बाहर निकल आए। उन्होंने काले-काले बादलों में घुमड़ती तूफान की गड़गड़ाहट सुनी। दूर नाव में बैठे बच्चे भी दिखाई दिए।

"हे भगवान, ये बच्चे किनारे नहीं पहुंच सकते।"—पादरी चिल्लाया।

"बड़ी नाव को समुद्र में डालो।"—कोई चिल्लाया —"जल्दी करो, नहीं तो बच्चे लहरों में खो जाएंगे।"

सिसली नाव में भर आए पानी को हाथों से उलीच रही थी। लहरें तेजी से ऊपर उठ रही थीं। संमुद्र किसी भी समय उनकी नाव को उलट सकता था। उन्हें नाव को मूंगे की दीवार से भी बचाना था। बच्चे जानते थे कि अगर नाव दीवारों से टकरा गई, तो टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी।

"तुम इस ओर सरककर बैठो!"—विक्टर ने चिल्लाकर सिसली से कहा। क्योंकि नाव एक ओर झुकने वाली थी। सिसली को बताने की जरूरत नहीं थी। वह भी तो मछुआरे की बेटी थी और अच्छी तरह जानती थी कि क्या करना है। वह हर पल नाव को सीधा रखने की कोशिश कर रही थी। साथ ही पानी भी उलीच रही थी। उसके हाथ ठंडे पानी में सुन्न पड़ने लगे थे। तभी एक ऊंची लहर ने उनकी नाव को हवा में उछाल दिया। उनके हाथों से चप्पू छूट गए। दोनों लड़के लहर के साथ समुद्र में बह गए।

सिसली पानी उलीचना भूल गई और नाव को पकड़कर बैठ गई। एक दूसरी लहर आई और उसने नाव को फिर हवा में उछाल दिया। एक धड़ाके की आवाज हुई और सिसली को कुछ भी होश नहीं रहा। नाव उछलने के कारण उसका सिर तख्ते से जा टकराया था।

"सिसली, तुम ठीक तो हो?"—आवाज सुनकर सिसली ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं। मां उसके ऊपर झुकी हुई थी। धीरे-धीरे उसे सब कुछ याद आ गया। जब आखिरी बार नाव उलटी थी, तो उसमें उसके साथी नहीं थे।

"पीटर और विक्टर कहां हैं?"—वह चिल्ला उठी। "वे ठीक हैं!"—मां ने समुद्र की ओर इशारा करते हुए बताया। एक बड़ी नाव किनारे की ओर आ रही थी। उसमें दोनों लड़के खड़े थे। मछुआरों ने उन्हें बचा लिया था। यह देख, सिसली लेट गई। उसके पैरों में खड़े होने की ताकत नहीं रह गई थी। किसी ठंडी चीज ने उसके गालों को छुआ, तो उसने आंखें खोलीं। उसका प्यारा हंस उससे सटकर खड़ा था। उसने हंस को प्यार से बांहों में भर लिया। वह जान गई थी कि अगर वे हंस के पीछे-पीछे वापस न आते, तो आज उनका जिंदा बचकर लौटना मुश्किल था।

तूफान थम जाने पर, पीटर और विक्टर सिसली के पास आए। वह बरामदे में बैठी रूमाल काढ़ रही थी। हंस उसके पास बैठा था।

"सिसली, हम हंस को धन्यवाद देने आए हैं। इसने ही हमारी जान बचाई है।"—दोनों बोले।

सिसली के चेहरे पर मुसकान दौड़ गई।

पीटर ने बताया—"पिता जी ने बहुत डांटा कि मैं खुले समुद्र में नाव को क्यों ले गया था? उन्होंने कहा कि हम तीनों से हंस ज्यादा बुद्धिमान है। उसने पहले ही भांप लिया था कि तूफान आने वाला है। पिता जी कह रहे थे कि वह हंस से कभी नाराज नहीं हो सकते। क्योंकि उसने तीन बच्चों के प्राण बचाए थे।"

सिसली ने प्यार से हंस को सहलाया। पीटर ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, तो हंस पीछे हट गया। उसकी ओर देखते हुए कोंऽ-कोंऽ करने लगा। पीटर ने हंस के गुस्से का बुरा नहीं माना। हाथ जोड़कर उससे माफी मांगने लगा। हंस ने एक बार जोर से कोंऽ की। मानो कह रहा हो—'जाओ, माफ किया!' उसका यह नाटक देख, तीनों बच्चे खिलखिलाकर हंस पड़े। ●

उस पार

— शांता ग्रोवर

जापान में किसी द्वीप पर एक खरगोश रहता था। वह अकेला ही था। जहां चाहे, जा सकता था। जो चाहे, खा सकता था। लेकिन उसे इस बात का बहुत दुःख था कि उसके साथ बात करने तथा खेलने वाला कोई नहीं था।

उसे मालूम था कि इस द्वीप के दूसरी ओर स्थित फूजीयामा पर्वत पर उसके और बहुत-से साथी रहते हैं। वह चाहता था कि वहीं जाकर रहे। लेकिन द्वीप के चारों ओर गहरा समुद्र था, जो उसे उस पार जाने से रोकता था। वह तैरना नहीं जानता था।

एक दिन की बात है, खरगोश समुद्र के किनारे-किनारे घूम रहा था। तभी उसकी नजर एक बड़े-से मगरमच्छ पर पड़ी। मगरमच्छ भी उसकी तरफ देख रहा था। खरगोश डरकर भाग गया।

अगले दिन उसी जगह पर खरगोश ने मगरमच्छ को फिर देखा। मगरमच्छ भी उसे देखने लगा। खरगोश को लगा, मगरमच्छ उससे दोस्ती करना चाहता है। वह धीरे-धीरे चलता हुआ उसके पास गया। बोला— "तुम कौन हो ?"

मगरमच्छ बोला— "मैं इस समुद्र का राजा हूं। यह समुद्र मेरा है। क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे ?"

खरगोश बोला— "हां, क्यों नहीं ? मैं तो यहां अकेला ही रहता हूं। तुम रोज आ जाया करो। तुमसे बातें करने से मेरा भी दिल बहल जाएगा।"

अब प्रतिदिन मगरमच्छ पानी से बाहर मुंह निकालकर खरगोश से ढेर-सी बातें करता रहता। वह खरगोश को बतलाता— "मेरे समुद्र में बहुत सारे मगरमच्छ रहते हैं। सब मगरमच्छों में से केवल मैं ही इतना हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा व लम्बा हूं। इसीलिए मैं यहां का राजा हूं।"

खरगोश मगरमच्छ की बातें बड़े ध्यान से सुनता था। एक बार वह रात में सोया हुआ था कि उसने सपने में अपने दादा जी को देखा। उन्होंने मुसकराकर कहा— "तुम फूजीयामा पर जाना चाहते हो, तो इस मगरमच्छ की ही सहायता लो।" सपना देखते ही खरगोश की नींद खुल गई। वह सपने की बात पर विचार करने लगा— 'मैं मगरमच्छ की सहायता से कैसे फूजीयामा तक पहुंच सकता हूं ?'

सोचते-सोचते सुबह हो गई। तभी खरगोश को एक तरकीब सूझ गई। वह तुरंत समुद्र की ओर चल पड़ा। मगरमच्छ पहले ही मुंह बाहर निकाले उसकी राह देख रहा था।

खरगोश थोड़ी देर तक मगरमच्छ की घमंड भरी बातें सुनता रहा। फिर बोला— "भैया मगरमच्छ, तुम रोज कहते हो, मैं इस समुद्र का राजा हूं। लेकिन राजा तो कभी अकेले नहीं घूमते। उनके आगे-पीछे तो कई नौकर-चाकर और सैनिक होते हैं। मैंने तो तुम्हें हमेशा यहां अकेले ही देखा है। कहीं तुम झूठमूठ तो नहीं कह रहे कि तुम यहां के राजा हो। तुम्हारी प्रजा भी मुझे कभी नजर नहीं आई।"

खरगोश की बात सुनकर मगरमच्छ को बहुत गुस्सा आया। बोला— "मित्र, तुम मुझे झूठा-मूठा राजा मत समझो। मैं कोई छोटा-मोटा राजा नहीं हूं। मेरी प्रजा में पूरे पचास हजार मगरमच्छ हैं।"
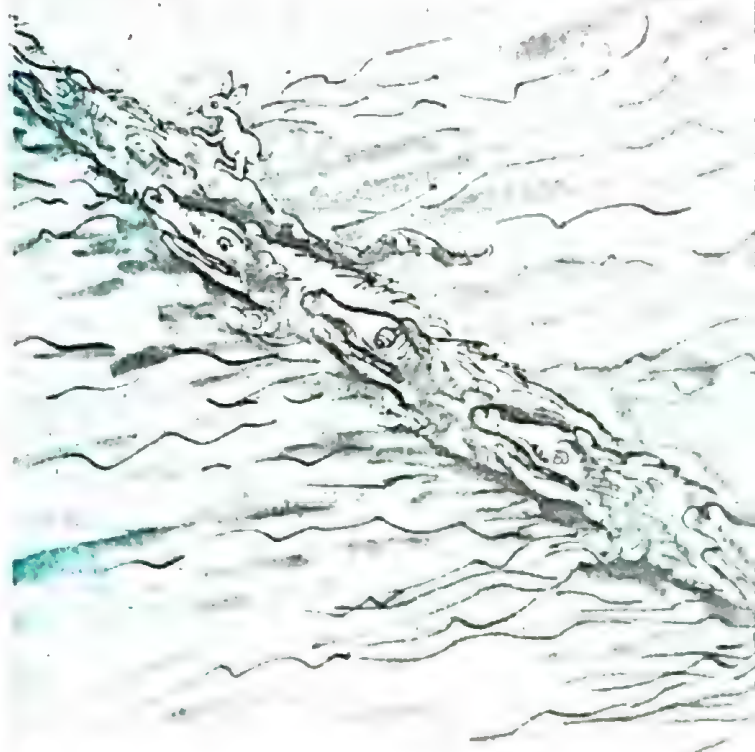
खरगोश ने मासूमियत से कहा— "लेकिन मुझे विश्वास नहीं आता कि पचास हजार मगरमच्छ इस सागर में हैं।"

मगरमच्छ बोला— "तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अभी सभी मगरमच्छों को बुलवाकर दिखा सकता हूं।"

खरगोश बोला— "नहीं दोस्त, तुम कल इसी समय सब मगरमच्छों को बुला लाना। मैं जब सबको देख लूंगा, तो मुझे विश्वास हो जाएगा कि तुम समुद्र के राजा हो।"

अगले दिन प्रातःकाल जब खरगोश समुद्र तट पर पहुंचा, तो उसने विचित्र दृश्य देखा। सचमुच हजारों मगरमच्छ समुद्र से सिर निकाले बाहर झांक रहे थे।

खरगोश को आता देखकर मगरमच्छों का राजा बोला— "आओ मित्र, देख लो मेरी प्रजा को। गिन लो, पूरे पचास हजार मगरमच्छ हैं।"

खरगोश थोड़ा घबराया, लेकिन निडरता से बोला— "मगरमच्छ भैया, ये सब तो झुंड में खड़े हैं। मुझे ये पचास हजार नहीं लग रहे। तुम ऐसा करो, इन सबसे कहो कि समुद्र के इस तट से लेकर फूजीयामा तक एक पंक्ति बना लें। मैं इनकी पीठों पर जाकर सबको गिन आऊंगा।"

मगरमच्छ ने आदेश दिया— "सब एक-दूसरे के साथ सटकर एक ही पंक्ति में खड़े हो जाओ।"

अपने राजा की बात सुनते ही सब मगरमच्छ सागर के इस कोने से फूजीयामा तक लहरों पर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। राजा मगरमच्छ बोला— "चलो मित्र, शुरू कर दो गिनना।"

खरगोश एक-एक की पीठ पर जा-जाकर गिनने लगा। मगरमच्छों का राजा भी खरगोश के साथ-साथ तैरता रहा, ताकि खरगोश से गिनने में गलती न हो जाए। खरगोश सबको गिनता-गिनता जब आखिरी मगरमच्छ पर पहुंचा, तब तक शाम हो गई थी। उसने देखा, एक गज की दूरी पर फूजीयामा सामने था। खरगोश ने एक छलांग लगाई और वह फूजीयामा पर पहुंच गया।

मगरमच्छों का राजा अपनी छाती फुलाते हुए बोला— "मित्र, अब तो तुम मान जाओ कि मेरी प्रजा में पूरे पचास हजार मगरमच्छ हैं।"

खरगोश जोर-जोर से हंसने लगा। बोला—"हां, मैं मान गया कि तुम्हारी प्रजा में पचास हजार मगरमच्छ हैं।" और फिर हंसने लग गया।

मगरमच्छ ने पूछा— "भई, तुम हंसे क्यों जा रहे हो ?"

खरगोश बोला— "मगरमच्छ भैया, मैंने यह सब तुम्हें इसलिए कहा था, क्योंकि मैं फूजीयामा पर पहुंचना चाहता था। यहां पर मेरे बहुत-से साथी हैं। बहुत दिनों से मेरी यहां आने की इच्छा थी, लेकिन यहां पहुंचने के लिए मेरे पास कोई साधन नहीं था जिससे मैं यह विशाल समुद्र पार कर सकता। तुमने अपने सभी मगरमच्छों को एक पंक्ति में खड़ा कर, मेरे लिए एक पुल-सा बनवा दिया। उनको गिनता हुआ मैं समुद्र पार कर अपने लक्ष्य तक पहुंच गया।"

यह कहते-कहते खरगोश फिर हंसने लगा। इतना हंसा कि उसका होंठ ही फट गया। उस दिन के बाद वह कभी भी खुलकर न हंस सका। इसलिए अक्सर वह चुप रहता है। कभी किसी से कुछ नहीं कहता।

सोना सूख गया

— अंशुकुमार गुप्ता

चीन में हुनसेन नाम का राजा शासन करता था। वह बहुत कंजूस था। दान-पुण्य तो दूर, जनता की जरूरतें पूरी करने के लिए भी सरकारी खजाने से धन नहीं निकालता था। राजा के पास सोने-चांदी का अपार भंडार था। लेकिन किसी को धन की कितनी ही जरूरत हो, वह मदद नहीं करता था।

राजा के महल से कुछ दूरी पर सिनचिन नामक एक वृद्ध की छोटी-सी झोंपड़ी थी। सिनचिन उस समय चीन का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था। राजा की आदतों से वह भी परेशान था। अतः उसने राजा को सबक सिखाने की ठान ली।

एक दिन वह अपने मित्रों से सोने के नन्हे-नन्हे चार टुकड़े उधार लाया। उसने सोने के उन टुकड़ों को पीली चमकती हुई एक बड़ी छलनी में रखा और पास बहती नदी के किनारे जा बैठा।

इस नदी पर राजा रोज स्नान करने आता था। सिनचिन ने दूर से ही राजा को आते हुए देखा। ऐसा अभिनय करने लगा, मानो छलनी में कुछ छान रहा हो। राजा उसके पास आया। बोला— "सिनचिन, यह क्या कर रहे हो ? तुम्हें सुबह-सुबह रेत छानने की क्या आवश्यकता पड़ गई ?"

सिनचिन ने बिना सिर उठाए ही कहा— "रुकिए महाराज, अभी देखिए क्या निकलता है ? मैं भला बिना वजह रेत क्यों छानता ? हुजूर, मैं तो इस रेत में छिपा सोना ढूंढ़ रहा हूं।"

राजा कुछ कहता, इससे पहले ही सिनचिन ने छलनी भर रेत निकाला और छान दिया। राजा ने देखा कि छलनी के ऊपर सोने के चार छोटे-छोटे टुकड़े चमक रहे थे।

राजा ने आश्चर्य से पूछा— "रेत में सोना ! अरे भाई, यह तुमने कैसे किया ?"

सिनचिन ने समझाते हुए जवाब दिया— "हुजूर, आज से महीना भर पहले मैंने सोने का एक छोटा-सा टुकड़ा इस जगह पर बोया था। आज मेरा मन नहीं माना, तो मैंने यहां खोदकर देख लिया। देखिए हुजूर, पूरे चार टुकड़े निकले हैं। यदि मैं कुछ और सब्र करता, तो यहां बहुत से टुकड़े मिलते।"

राजा ने चौंकते हुए कहा— "क्या बकवास करते हो ? भला क्या सोने की भी खेती की जा सकती है ?"

सिनचिन ने कहा— "क्यों नहीं हुजूर ? आप खुद ही देख लीजिए। मैं तो गरीब आदमी हूं। पिछले दस वर्षों से इसी प्रकार सोना बोता हूं और काट लेता हूं। इसी सोने से मेरा पेट पलता है।"

राजा ने नाराजगी भरे स्वर में कहा— "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? मेरे पास तो सोने का ढेर है। मुझे पता होता, तो मैं सारा सोना बो देता। आज तक तो मेरा महल सोने से भर गया होता।"

इस पर सिनचिन ने कहा— "हुजूर, अब भी देर नहीं हुई है। आप अब भी बो लीजिए। छह महीने बाद देखिएगा, तो फसल लहलहाती नजर आएगी।"

राजा ने सिनचिन के कंधे पर हाथ रखते हुए जवाब दिया— "देखो सिनचिन, तुम तो एक अनुभवी आदमी हो। मेरी ओर से तुम सोने की खेती करो। इसके लिए तुम्हें जितना सोना चाहिए, तुम ले सकते

हो। आज ही मेरे साथ महल में चलो। इस काम के लिए यदि तुम्हें आदमियों की आवश्यकता हो, तो तुम मेरे सेवकों को भी साथ ले सकते हो।"

सिनचिन तो मानो इस मौके की प्रतीक्षा में था। वह तुरंत राजी हो गया। वह महल में गया और सोने के ढेरों टुकड़े ले आया। राजा ने अपने दस सेवक भी सिनचिन को मदद के लिए दे दिए।

देखते ही देखते, नदी के किनारे खुदाई का काम शुरू हो गया। सिनचिन के कहे अनुसार, राजा के सेवकों ने वहां पर सोना बीज की तरह बो दिया। ऊपर रेत डाल दिया। सिनचिन ने राजा को आश्वासन दिया कि छह महीने बाद उसे बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिल जाएगा।

इस बीच सिनचिन रोज रात को नदी किनारे जाने लगा। वहां पर वह रोज थोड़ा-सा हिस्सा खोदता और वहां दबा सोना अपने झोले में रख लाता। अगले दिन सुबह ही वह सारा सोना गरीबों में बांट देता था।

धीरे-धीरे जनता की गरीबी मिटने लगी। चारों ओर सिनचिन का नाम गूंजने लगा।

इधर राजा इंतजार करता रहा कि कब छह महीने पूरे हों और उसे बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिले।

धीरे-धीरे छह महीने भी पूरे हो गए। राजा ने सिनचिन को दरबार में बुलाया। उसे आदेश दिया कि वह सारा सोना खोद लाए।

सिनचिन ने इस काम के लिए कुछ सेवकों की मांग की। राजा ने इस बार बीस सेवक उसके साथ कर दिए।

सेवकों ने उस स्थान पर काफी गहराई तक खुदाई की, रेत को छाना। लेकिन सभी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गए कि उस लम्बे-चौड़े खेत में सिवाय दो-चार सोने के टुकड़ों के कुछ नहीं था।

सिनचिन भागा-भागा राजा के पास पहुंचा। रोते हुए बोला— "हुजूर, आपकी किस्मत खराब थी। जमीन में सोने के दो-चार सूखे हुए टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं निकला है।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा— "सूखे हुए टुकड़े! तुम्हारा मतलब क्या है?"

सिनचिन ने जवाब दिया— "हां हुजूर, इस बार सारा सोना सूख गया है। आप तो जानते ही हैं, इस बार बारिश बिल्कुल नहीं हुई। भला बीजों को पानी न मिले, तो वे फूले-फलेंगे कैसे? यही हुआ। सारी फसल सूख गई। आपका बहुत नुकसान हो गया इस बार।"

हुनसेन ने डांटते हुए पूछा— "भला सोना सूख कैसे सकता है? यह तो ठोस चीज है।"

सिनचिन ने मुसकराते हुए कहा— "हुजूर, आपने इतनी बातों पर विश्वास कर लिया कि सोना बोया जा सकता है, सोने की फसल लहलहा सकती है, सोना काटा जा सकता है। फिर भला इतनी-सी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते कि सोना सूख गया?"

राजा निरुत्तर हो गया। मंत्रियों से सलाह ली, तो उन्होंने कहा— "सिनचिन ठीक कहता है। वाकई यदि सोना बोया जा सकता है, तो सूख भी सकता है।"

अब तो राजा से कुछ कहते नहीं बना। वह सिर पकड़कर बैठ गया। चारों ओर सिनचिन की बुद्धिमत्ता के चर्चे होने लगे। उसने कंजूस राजा को अच्छा सबक सिखा दिया था। ●

चटपट

● बब्बू—दादा जी, आपके दांत तो हैं नहीं, फिर चने कहां गए ?
दादाजी—दांत न सही, जेब तो है।

● ग्राहक—मुझे जल्दी से दो अमरूद, तीन संतरे, पांच अंगूर और...
दुकानदार—बस, बस, मैं समझ गया। आपको लेना-देना कुछ नहीं, सिर्फ गिनती गिननी है।

● अजय—वह आदमी दौड़ता हुआ कहां जा रहा है ?
विजय—तुम भी दौड़कर जाओ और पूछ लो।

● अमर—सेब पेड़ से गिरा, तो फिर क्या हुआ ?
अजीत—भैया, मैं जमीन पर गिरी हुई चीज कभी नहीं उठाता ! मुझसे क्यों पूछते हो ?

● गप्पू—बारिश में बुरी तरह भीग गया मैं तो....
शामू—कभी-कभी सिर से पैर तक नहाना ठीक रहता है।

● एक आदमी—आम के पेड़ पर संतरे क्यों लटक रहे हैं ?
दूसरा आदमी—चश्मा बदलवाओ। आम और संतरे क्या, यहां तो पेड़ भी नहीं हैं।

● मुन्नी—अभी-अभी मेरी गुड़िया हंसकर बोली थी।
चुन्नी—और तुमने रोकर जवाब दिया होगा—क्यों ?

● अमित—मैंने सुना है, कभी इस गुफा में राक्षस रहता था।
विनय—इस समय तो मैं उसे गुफा से बाहर खड़ा हुआ देख रहा हूं।

● एक व्यक्ति—दो बौने आदमी न जाने क्यों आपस में लड़ रहे थे ?
दूसरा व्यक्ति—इसलिए कि एक ने दूसरे को बौना कह दिया था।

● सुभाष—अरे, तुम्हें क्या हो गया ! पहचान में ही नहीं आ रहे हो।
नीरव—मैं आजकल रूप बदलने का अभ्यास कर रहा हूं।

● रेखा—एक बंदर ने केला खाया और दूसरे ने छिलका—क्यों भला ?
विभा—बंदर आदमी से ज्यादा समझदार है। वे कोई चीज बेकार नहीं करते।

● रमेश—चलो, मछलियों से बात करें।
विजय—क्या पानी में घर बनाने का इरादा कर लिया है ?

● मुन्नी—हे भगवान, यह क्या कर दिया तुमने !
निशा—वही, जो तुम्हारी समझ से बाहर है।

● एक मुसाफिर—रेल की पटरी पर एक चिड़िया बैठी थी। ऐसे में अगर गाड़ी आ जाती तो ?
दूसरा मुसाफिर—शायद चिड़िया गाड़ी को अपनी चोंच में दबाकर उड़ जाती।

● दुकानदार—भैंस पानी में चली गई – इसका मतलब ?
दूधवाला—यही कि दूध पतला हो गया।

Cyan

चलो ढूंढे टॉफियां

इस चित्र में पैरीज़ की 11 टॉफियां हैं.
देखें तो तुम इन्हें ढूंढ पाते हो या नहीं?

ये टॉफियां है - कॉफी बाइट, कैरामिल्क, ट्राई-मी, लैक्टो-किंग, इलायच्यू, मून ड्रॉप, टैंगो, चॉकलेट एक्लेअर्स, कोकोनट क्रीम, चॉकोटॉफ और पिक्सीज़.

खेल चिकनी गोली का

एक कटोरे में एक कप आटा, ¼ कप नमक और ⅓ कप पानी लेकर उसे लकड़ी के चम्मच से अच्छी तरह मिला लो (देखें चित्र 1). अब गुंधे हुए आटे की लोई को उंगलियों में दबाकर देखो (देखे चित्र 2). लोई अगर गाढ़ी लगे तो और थोड़ा पानी मिला लो. और अगर बहुत ही पतली लगे तो थोडा आटा मिला लो. अब आटे की बनी इस चिकनी गोली से तो तुम बिल्ली या अपने मनचाहे खिलौने बना सकते हो. इस चिकनी गोली की मौज को संजोकर रखने के लिए इसे एक प्लास्टिक की थैली में भरकर फ्रिज में रख दो (देखें चित्र 3). दुबारा इस्तेमाल करने के लिए इसे थोड़ी देर पहले फ्रिज से निकालकर रखना होगा ताकि इसका तापमान बाहर के तापमान का सा साधारण बन जाय

Fig.2

Fig.3

खेलें खेल तरापे का

इसे बनाने के लिए चाहिए:
रंगीन कार्डबोर्ड, कैंची, अखरोट के छिलके, शरबत पीने की स्ट्रॉ या नन्ही टहनी, सफेद कागज, गोंद या फेविकोल और चिकनी मिट्टी.

करना बस यह है:
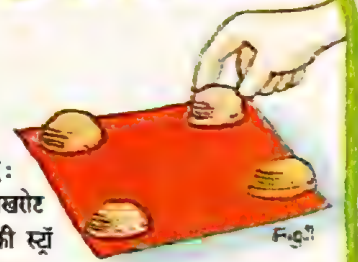
1. तरापा बनाने के लिए अखरोट के चारों छिलके रंगीन कार्डबोर्ड के आयताकृति टुकड़े पर चिपका दो (जैसा कि चित्र 1 में बताया गया है).

Fig.2

2. फिर सफेद कागज़ में से पाल काट लो.
3. पाल में एक स्ट्रॉ या नन्ही टहनी फंसा दो (देखो चित्र 2).
4. चिकनी मिट्टी की ज़रा-सी लेई से यह पाल तरापे से चिपका दो (देखो चित्र 3). अब इस तरापे को बाथ टब में या बहते पानी में छोड दो. देखो कैसा तैरता चला जा रहा है.

Fig.3

तेनालीराम (२७५)

हाथ पर नाम

होली से एक सप्ताह पूर्व राजा कृष्णदेव राय ने आदेश निकाला—'किसी पर जोर जबरदस्ती रंग न डाला जाए। जो ऐसा करेगा, दंड मिलेगा।'

सुनकर पुरोहित परेशान हो गया। वह तो इस बार तेनालीराम को छकाने की योजना बनाए बैठा था। अचानक उसके दिमाग में एक नई योजना आई। बस, पक्के रंग का इंतजाम कर वह मौके की तलाश में रहने लगा।

धुलैंडी से एक दिन पहले की बात है। तेनालीराम किसी से मिलने गया था। लौटा, तो रात हो गई। पुरोहित को अवसर मिल गया। अपने दो चेलों के साथ एकांत में उसने तेनालीराम को घेर लिया। दोनों हाथों पर पक्का रंग लगाए, वे तीनों उस पर झपट पड़े। ऊपर से नीचे तक बुरी तरह रंग दिया। तीनों वेश बदले हुए थे। तेनालीराम उन्हें पहचान न सका। हां, गुत्थम-गुत्था हुई, तो एक के सिर से पगड़ी गिर गई। उसके सिर की मोटी चोटी ही तेनालीराम देख सका।

अगले दिन तेनालीराम दरबार में आया, तो सब हंसने लगे। राजा ने हंसी दबाकर पूछा—"तेनालीराम, तुम्हारी यह हालत किसने की ?"

—"अन्नदाता वह तो पुरोहित जी के हाथ ही बता सकते हैं ?"

सुनते ही पुरोहित का रंग पीला पड़ गया। उसके हाथों पर पक्का रंग अभी भी लगा था। राजा सारी बात समझ गए। पुरोहित अपना सिर खुजलाने लगा। अब सारा भेद खुल गया। राजा ने पुरोहित से कहा—"दंड स्वरूप तुम मेरे दरबार में होली गाकर सुनाओ।"

बेचारे पुरोहित का बुरा हाल था। किसी तरह स्वर साधकर गाने लगा। सुनकर सारे दरबारी ताली बजा-बजाकर हंसने लगे।

बादलों के पार

— रश्मि बिंदल

गरीब बीरू अपनी मां के साथ गांव में रहता था। जितना सुंदर, उतना ही साहसी था। वह सबके सुख-दुःख में काम आने को हमेशा तैयार रहता। इसलिए गांव वाले भी उससे स्नेह करते थे।

एक दिन बीरू जंगल में लकड़ी काटने गया हुआ था। मां घर पर उसका इंतजार कर रही थी। अचानक मां ने देखा कि बीरू हाथ में कोई चमकती हुई चीज लेकर आ रहा है।

"मां, मां, देख।"— बीरू ने खुशी से चिल्लाकर कहा —"मैं आज जंगल से क्या लाया हूं?"

मां ने देखा, उसके हाथ में एक सुनहरी कबूतर था।

— "अरे, यह तो बहुत ही सुंदर है। इसे परसों हाट में बेच देंगे। अच्छे दाम मिल जाएंगे।"

—"नहीं मां। मैं सोच रहा हूं, इसे राजा के पास ले जाऊं। वह खुश हो गया, तो बहुत सारा इनाम देगा।"

मां के मना करने पर भी बीरू कबूतर को दरबार में ले गया। राजा के सभी मंत्रियों ने कबूतर की प्रशंसा की। कहा— "इस नौजवान को अच्छा-सा इनाम मिलना चाहिए।"

लेकिन राजा लालची और कंजूस था। बीरू से बोला— "यह कबूतर निस्संदेह मेरे महल की शोभा बढ़ाएगा। किंतु यह अकेलापन महसूस करेगा। बीरू, तुम इसके लिए एक साथी और लाकर दो। यदि नहीं लाए, तो सिर कटवा दूंगा।"

बीरू ने यह सुना, तो सकते में आ गया। पर राजा का हुक्म तो मानना ही था।

सुनहरी कबूतर की खोज में कई दिन जंगल में भटकता रहा। लेकिन काम न बना। आखिर थककर एक पेड़ के नीचे लेट गया। अचानक उसे लगा कि उसके पास कोई खड़ा है। उसने मुड़कर देखा, तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। एक सुंदर लड़की मुसकराती हुई उसे देख रही थी। "तुम कौन हो ?"— बीरू ने पूछा।

लड़की ने कहा— "मुझे कोई एक पक्षी पकड़कर ला दो।"

बीरू के लिए यह काम क्या मुश्किल था ! वह तुरंत एक पक्षी ले आया। लड़की ने पक्षी पर हाथ फेरा, और चमत्कार ! वह सुनहरी कबूतर बन गया। इससे पहले कि बीरू कुछ कहता, लड़की गायब हो चुकी थी।

बीरू दूसरा सुनहरी कबूतर लेकर राजा के पास पहुंच गया। लेकिन इनाम देना तो दूर, राजा ने नया हुक्म सुना दिया— "इन खास कबूतरों के लिए बगीचा भी खास ही होना चाहिए। जाओ, कबूतरों के लायक एक बगीचा बनवाओ, नहीं तो जिंदा गड़वा दूंगा।"

बीरू के लिए एक नई मुसीबत थी। अपनी किस्मत को कोसता हुआ, बीरू घर आ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि राजा को कैसा बगीचा चाहिए और वह कैसे बनेगा ?

उसी रात की बात है— दरवाजे पर दस्तक हुई। बीरू ने दरवाजा खोला, तो वही लड़की थी। बोली— "अपने बगीचे से एक टहनी ला दो।"

बीरू ने तुरंत फूल-पत्तों वाली एक टहनी ला दी। लड़की ने उसे छुआ, तो टहनी चांदी की बन गई, पत्ते सोने के, और फूल हीरे-मोती के। टहनी की चमक से बीरू चौंधिया गया। जब तक अपने-आपको संभालता, लड़की जा चुकी थी।

'वह कौन है ? कहां से आती है ?' — सोचता हुआ बीरू फिर राजा के पास पहुंचा। वह टहनी उसने राजा के बगीचे में गाड़ दी। बस, फिर क्या था ! पूरा बगीचा सोने-चांदी और जवाहरात का बन गया। राजा ने जानना चाहा कि बीरू यह सब कैसे करता है। बीरू ने उस विचित्र युवती के बारे में बता दिया। राजा झट बोला— "मैंने सुना है, परियों की राजकुमारी बहुत सुंदर है। तुम उसे पकड़कर मेरे पास ले आओ। याद रखना, अगर यह काम न हुआ तो सूली पर टंगवा दूंगा।"

यह सुन, बीरू को लकवा मार गया। समझ न पाया कि क्या करे। रात को बीरू इसी उलझन में था। तभी उसने उस लड़की को अपने घर में घुसते देखा। पास आते ही उसने बीरू की अंगुलियों को छुआ। बोली— "पूर्णिमा की रात को, चांद की किरणों के सहारे तुम परियों के देश पहुंच सकते हो।"

बीरू उस लड़की से बात करना चाहता था, मगर इस बार भी कुछ न पूछ पाया। लड़की मुसकराई और गायब हो गई।

पूर्णिमा की रात आई। बीरू का आंगन चांद की किरणों से भर गया। अचानक बीरू को लगा कि वह किरणों को छू सकता है। फिर लगा, जैसे किरणों के सहारे वह ऊपर उठता जा रहा है। उसे पता ही न चला कि कब वह बादलों के पार पहुंच गया। वहां उसने जो दृश्य देखा, तो उसका मन झूम उठा। चारों ओर हल्की-हल्की रोशनी थी। सामने एक आलीशान महल था— मानो दूध में नहाया हुआ। तभी उसकी नजर, झिलमिल कपड़े पहने, एक परी पर पड़ी। वह पास आई, तो बीरू अवाक् रह गया। वह परी वही

थी, जिसने धरती पर कई बार उसकी मदद की थी।

परी कुछ न बोली। बीरू का हाथ पकड़कर महल के अंदर ले गई। अंदर एक बड़े कक्ष में, सिंहासन पर एक और परी बैठी थी। उसने बीरू को पास बुलाया। कहा—"मैं परियों की रानी हूं। और यह, जो तुम्हें यहां तक लाई है, राजकुमारी चंद्रमुखी है।"

बीरू आश्चर्य से चंद्रमुखी की ओर देखने लगा।

परी रानी ने आगे कहा— राजकुमारी चंद्रमुखी ने तुम्हें वर के रूप में चुना है। क्या तुम इससे विवाह करोगे?"

आश्चर्य पर आश्चर्य! कहां तो वह राजा के लिए परी को पकड़ने आया था और कहां यह प्रस्ताव! पर बीरू तो कब का उस पर मोहित हो चुका था। उसने तुरंत हामी भर दी।

चंद्रमुखी और बीरू का विवाह हो गया। समय पंख लगाकर कैसे उड़ा, बीरू को पता ही न चला। एक दिन चंद्रमुखी ने कहा— "अब हमें धरती पर चलकर रहना चाहिए।"

धरती का नाम सुनते ही बीरू उदास हो गया। उसने सारी बात चंद्रमुखी को बताई। चंद्रमुखी ने कहा— "आप चिंता न करें। बस, मुझे अपने घर ले चलें।"

वे वापस धरती पर आ गए। मां इतने दिन बाद अपने खोए हुए बेटे तथा सुंदर बहू पाकर फूली न समाई। पल भर में यह खबर आग की तरह फैल गई कि बीरू वापस आ गया है। अपने साथ परियों की राजकुमारी को लाया है।

खबर राजा के कानों तक भी पहुंची। राजा ने सुना, तो तुरंत सिपाहियों सहित बीरू के घर जा पहुंचा। चंद्रमुखी को देखते ही बोला— "चलो, मेरे साथ! हम तुम्हें अपनी महारानी बनाएंगे।"

इस पर चंद्रमुखी ने कहा— "महाराज, मेरी शादी तो बीरू के साथ हो चुकी।"

यह सुनते ही राजा की आंखों से अंगारे बरसने लगे। उसने सिपाहियों को हुक्म दिया— "बीरू को खत्म कर दो। राजकुमारी को पकड़कर महल में ले चलो।"

इतना सुनना था कि बीरू ने तलवार खींच ली। लेकिन चंद्रमुखी ने इशारे से मना किया। उसने अपना रूमाल निकालकर जमीन पर बिछा दिया। फिर जैसे ही चंद्रमुखी ने उस पर पैर रखा, वह कालीन जितना बड़ा हो गया। चंद्रमुखी ने झट बीरू को भी उस पर बैठा लिया। बीरू के बैठते ही, कालीन उन दोनों को लेकर हवा में उड़ चला।

यह देख, क्रूर राजा ने उन पर तीरों की बौछार शुरू कर दी। लेकिन उन्हें एक भी तीर न लगा। सब तीर कालीन से टकराकर वापस राजा की ओर मुड़ गए। यह देख, राजा घबराकर भागने लगा।

गांव वाले यह सब देख रहे थे, लेकिन कोई भी राजा की सहायता के लिए न बढ़ा। यहां तक कि राजा के सिपाही भी चुपचाप खड़े रहे, क्योंकि उसके अत्याचारों से परेशान थे।

राजा का अंत आ गया था। उसके चलाए गए तीर उसी को आ लगे। राजा का काम तमाम हो गया।

लोग बीरू व चंद्रमुखी का जय-जयकार करने लगे। अब कालीन नीचे आ गया। कुछ बुजुर्गों ने कहा— "बीरू में एक अच्छा राजा बनने के सभी गुण हैं। यदि यह हमारा राजा बने, तो देश खुशहाल होगा।"

बीरू धूमधाम से सिंहासन पर बैठकर शासन चलाने लगा। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. ये — तो सचमुच लाजवाब हैं! (कड़े/घड़े)

२. आखिर — ने बदला ले ही लिया। (भाई/भालू)

४. इंतजार करो, शायद अच्छे — आ जाएं। (दिन/पैन)

६. गोपाल बाबू, जरा — दिखाओ तो सही। (घर/कार)

९. यकीन मानिए, मैं अभी — पर चित्र बना सकता हूं। (ढाल/बाल)

११. ऐसा — तुमने न खाया होगा। (मावा/मेवा)

१२. कवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना।

ऊपर से नीचे

३. मंच पर उस — लड़के को देख, मैं ताज्जुब में पड़ गया। (छोटे/नाटे)

५. **सुना है, इस भारतीय मिसाइल का नाम ?**

७. सुनिए महाराज, — तो बस आप ही है! (दानी/दाता)

८. चिंता न करो, मैंने उसे खूब अच्छी तरह— दिया। (खिला/सुला)

१०. इस तरह टकटकी लगाए आकाश में क्या देख रहे हो — ? (देबू/साबू)

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २६७

नाम ——————

आयु—— पता——————
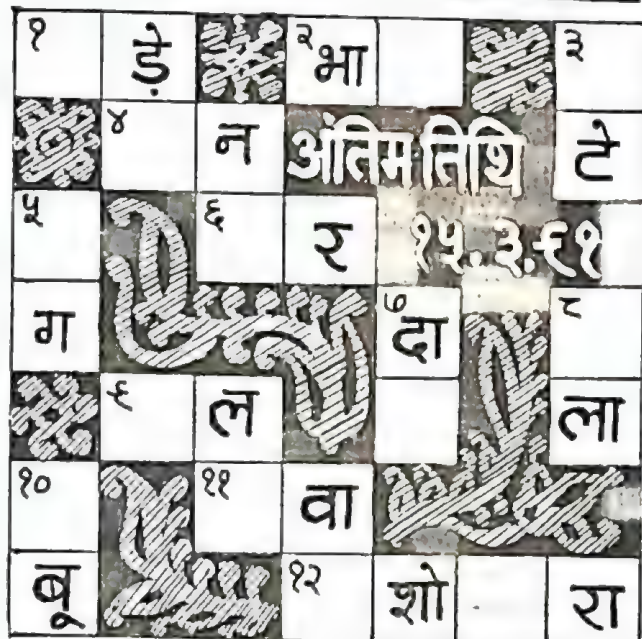
१	ड़े		२ भा			३
	४	न	अंतिम तिथि			टे
५		६	र	१५.३.९१		
ग				७ दा		८
	९	ल				ला
१०		११	वा			
बू			१२	शो		रा

नं. ज्ञा. प. २६७

गुरु कौन

—कमला चमोला

सुधाकर नाम का एक व्यापारी नदी किनारे बैठा था। तभी उसकी नजर एक जटाधारी साधु पर पड़ी। उसने साधु को प्रणाम किया। पूछा—"आप इतने चिंतामग्न-से क्यों बैठे हैं महात्मा जी ?"

साधु बोला—"मैं एक त्यागी संन्यासी हूं। पिछले पंद्रह वर्ष से तपस्या में लीन था, पर फिर भी मुझे भगवान के दर्शन नहीं हुए। लगता है, यह जीवन मैंने व्यर्थ ही गंवा दिया। सोच रहा हूं —मैं न तो भगवान को ही पा सका और न जीवन का सुख ही भोग सका। अब मैंने निर्णय कर लिया है कि तपस्या छोड़कर शेष जीवन आराम से व्यतीत करूंगा। कुछ धन का जुगाड़ करना होगा। तभी यह हो सकता है। लेकिन तुम भी उदास लगते हो। तुम्हें क्या परेशानी है ? लगते तो धनवान हो ?"

—"हां, महाराज ! मैं अमीर आदमी हूं। मेरे परिवार में माता-पिता, पत्नी और दो पुत्र हैं। मेरे पास ढेर सारी सुख-सुविधा है। फिर भी मैं सुखी नहीं हूं। मेरा मन सदा अशांत रहता है। अब मैं संन्यास लेना चाहता हूं, ताकि शेष जीवन प्रभु भजन में लगा सकूं।"

साधु हंसकर बोला—"यह कैसी विडम्बना है। मैं संन्यासी जीवन से असंतुष्ट हूं। तुम अपने सांसारिक जीवन से असंतुष्ट हो। यह भी संयोग की बात है कि हमें एक-दूसरे का साथ मिल गया। अब हम एक दूसरे के अनुभव से लाभ उठा सकते हैं।"

सुधाकर बोला—"आप मुझे संन्यास के गुर तथा जप और ध्यान की विधि समझा दीजिए। मैं आपको धन कमाने की तरकीब समझा दूंगा।"

इसके बाद साधु और सुधाकर नगर की ओर चल पड़े। साधु ने देखा कि एक गरीब भिखारी सड़क के किनारे ठंड से थर-थर कांप रहा है। साधु को उस पर

दया आ गई। उसने अपनी भगवा चादर उतारकर भिखारी को ओढ़ा दी। कुछ दूर जाकर दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गए।

सुधाकर बोला—"महाराज, बड़े जोर की भूख लगी है। इस समय मेरे पास बस चांदी की एक अंगूठी है। इसे बेचकर मैं कुछ भोजन ले आता हूं।"

कुछ देर में सुधाकर एक दोने में कुछ मिठाई व फल ले आया। उसने इसका आधा भाग साधु को दे दिया। साधु जैसे ही मिठाई खाने को हुआ, उसे एक भूखा लड़का नजर आया। वह लालच भरी नजरों से उन्हें ही देख रहा था। साधु ने अपने हिस्से का भोजन उस लड़के को दे दिया। लड़का खुश होकर वहां से चला गया। सुधाकर नाराजगी भरे स्वर में बोला—"यह क्या महाराज ! आपने तो अपना भोजन उसे दे दिया। अब आप क्या खाएंगे ? तन पर एक ही चादर थी, वह भी आपने एक भिखारी को दे दी। आप जा तो रहे हैं सांसारिक बनने, पर आदतें तो आपकी संन्यासियों वाली हैं।"

—"सांसारिक बनने का यह अर्थ तो नहीं कि हम दया-धर्म ही छोड़ दें। भूखे को अन्न और गरीब को वस्त्र तो देने ही चाहिएं। इससे स्वयं को भी संतोष मिलता है। पर तुम्हें यह बुरा लगा।"

सुधाकर साधु की बातें सुनकर साधु के चरणों में गिर गया। बोला—" महात्मन, आज मुझे अपनी

अशांति और असंतोष का कारण समझ आ गया है। मैंने इतना धन कमाया, पर कभी किसी को एक कौड़ी भी नहीं दी। बस, अपनी तिजोरियां ही भरता रहा। आज आपने मुझे संतोष का मार्ग दिखा दिया। अब मैं संन्यास नहीं लूंगा। पहले की तरह काम करूंगा और अपने धन का एक हिस्सा परोपकार में लगाऊंगा।"

सुधाकर की बात पर साधु मुसकरा दिया। सुधाकर बोला—"महात्मा जी, आप मेरे साथ मेरी दुकान पर चलिए। मुझे दुकान में काम करते देख, आप भी व्यापार के गुर समझ जाएंगे। फिर आप अपना काम शुरू कर सकते हैं। आपको व्यापार आरम्भ करने के लिए मैं धन उधार दूंगा। जब आपका व्यापार चल निकले, तब मेरे पैसे आप लौटा देना।"

सुधाकर के साथ साधु उसकी दुकान पर आया। कपड़े की दुकान बहुत बड़ी थी। वहां आठ-दस नौकर थे। साधु आसन पर बैठा, सुधाकर को काम करते देख रहा था। वह अपने काम में बहुत व्यस्त था। दोपहर का भोजन घर से आ गया था, पर उसे भोजन करने की भी सुध नहीं थी। शाम तक सुधाकर की तिजोरी पैसों से भर चुकी थी। वे सारे पैसे उसने एक थैले में डाले और साधु के चरणों में रखकर बोला—"लीजिए महाराज! इस धन से अपना व्यापार शुरू कीजिए।"

—"इसकी अब आवश्यकता नहीं।"

—"क्यों महाराज?"

—"क्योंकि अब मुझे वह गुर मिल गया है, जिसने मुझे मेरे अंदर की उन कमियों के बारे में बता दिया। इसी के कारण मेरा मन अशांत था।"

"किसने दिया वह गुर?"—सुधाकर ने पूछा।

—"तुमने। तुम ही मेरे गुरु हो। मैं सुबह से ही तुम्हें दुकान में काम करते देख रहा हूं। तुम अपने व्यापार में ऐसे डूबे थे कि तुम्हें नींद, भूख, थकावट कुछ भी नहीं थी। तुम्हें देखकर मुझे ज्ञान हुआ कि मेरी साधना में इसी एकाग्रता की कमी थी। अच्छा वत्स, मैं चलता हूं। अब मैं अवश्य अपने आराध्य को पा लूंगा।"●

फार्म-4 (नियम 8 देखिये)

नंदन

1. प्रकाशन स्थान	: नई दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि	: मासिक
3. मुद्रक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
4. प्रकाशक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
5. सम्पादक का नाम	: जयप्रकाश भारती
क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001

मैं, राजेन्द्र प्रसाद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)
प्रकाशक

दिनांक : 28 फरवरी, 1991

एक से बढ़कर एक

—लंका सुंदरम

एक था रामलाल । बहुत ही चालाक और चापलूस । लोगों को अपने जाल में फंसाता । उनसे धन ऐंठता । फिर मौज से रहता ।

एक दिन रामलाल बाजार जा रहा था । तभी उसने देखा कि ककड़ियों से भरी एक बैलगाड़ी आ रही है । गाड़ीवान बाजार में ककड़ियां बेचने जा रहा था ।

रामलाल ने हरी-हरी ककड़ियां देखीं, तो तुरंत उन्हें हड़पने की योजना बना डाली । वह गाड़ीवान के पास गया । मीठी-मीठी बातें बनाता हुआ बोला—"भाई, तुम्हारी ककड़ियां बहुत जायकेदार लगती हैं । ऐसी ककड़ियां मैंने देखी तक नहीं ।" कहते हुए उसने एक ककड़ी उठाकर खा ली । गाड़ीवान कुछ न बोला ।

रामलाल फिर बोला—"मित्र, तुम बेकार में ककड़ियां बेचने इतनी दूर जा रहे हो । चाहो, तो मैं तुम्हें इस परेशानी से बचा सकता हूं ।"

"वह कैसे ?"—गाड़ीवान ने कहा ।

—"अरे, मुझे ही गाड़ी भर ककड़ियां खाने के लिए चाहिएं । बोलो, बेचोगे ?"

गाड़ीवान यह सुनकर चकराया । वह सोचने लगा—'भला एक आदमी इतनी सारी ककड़ियां कैसे खा सकता है ?' उसने रामलाल से यह बात पूछी ।

"हां, मैं सारी ककड़ियां खा सकता हूं ।"—रामलाल बोला ।

गाड़ीवान जोर से हंसा । बोला—"तुम इतनी ककड़ियां खा सकते हो ! मुझे यकीन नहीं होता ।"

रामलाल बोला—"यदि मैं ये सारी ककड़ियां खा लूं, तो तुम मुझे क्या दोगे ?"

गाड़ीवान भी ताव में आ गया । उसने कहा—"यदि तुमने ककड़ियां खा लीं, तो मैं तुमसे कोई पैसा न लूंगा ।" तभी उसके मन में कुछ शंका पैदा हुई । बोला—"मगर एक शर्त और भी है ।"

"वह क्या ?" —रामलाल ने पूछा ।

—"ककड़ियां खाने के बाद तुम्हें एक लड्डू भी खाना पड़ेगा । यदि ऐसा न किया, तो तुम्हें ककड़ियों की कीमत चुकानी पड़ेगी । बोलो, शर्त मंजूर है ?"

इस बीच दो-चार आदमी और इकट्ठे हो गए । उनके सामने दोनों की शर्त पक्की हो गई । रामलाल आगे बढ़ा । वह गाड़ी में से ककड़ियां उठा-उठाकर उन्हें थोड़ी-सी खाता । फिर गाड़ी में रख देता । इस तरह उसने बहुत सारी ककड़ियां जूठी करके गाड़ी में रख दी । फिर गाड़ीवान से बोला—"अब लाओ, लड्डू भी दो ।"

गाड़ीवान आश्चर्य में था । बोला—"अरे, तुमने ककड़ियां खाई कहां हैं ? जूठी करके गाड़ी में फेंक दी हैं ।" "मैंने सारी ककड़ियां खा लीं ।"—कहते हुए रामलाल जिद पर अड़ गया ।

दोनों में कहा-सुनी हो गई ।

रामलाल ने कहा—"चलो, बाजार में चलते हैं । तुम वहां ककड़ियों का ग्राहक ढूंढ़ना, तभी मेरी बात प्रमाणित हो जाएगी ।"

दोनों बाजार में चले गए । गाड़ी में ककड़ियां देखकर एक-दो खरीददार आगे बढ़े । उन्होंने ककड़ियां देखीं । बोले—"अरे, ये तो खाई हुई ककड़ियां हैं । हमें नहीं चाहिएं ऐसी ककड़ियां ।"

रामलाल बोला—"अब तो तुम्हें पता चल गया कि मैंने ककड़ियां खा ली हैं । अब सारी ककड़ियां मेरी हैं ।" गाड़ीवान ने कहा—"चलो, मान लिया । अभी तुम्हें लड्डू भी तो खाना है ।"

"एक लड्डू क्या, दो-तीन लड्डू खा सकता हूं । जल्दी लाओ लड्डू ।"—रामलाल हंसकर बोला ।

गाड़ीवान बोला—"मैं अभी लेकर आता हूं ।" कहकर चला गया । थोड़ी देर बाद गाड़ीवान लड्डू लेकर लौटा । उसने लड्डू रामलाल को दे दिया । रामलाल ने लड्डू देखा । फिर गुस्से में बोला—"यह लड्डू नहीं है । तुमने तो मुझे बालू का पिंड थमा दिया ।"

—"है तो लड्डू ही । चाहे बालू का हो या मोतीचूर का । मैंने तुम्हें लड्डू खाने को कहा था ।"

अब रामलाल चकराया । वह बालू का लड्डू कैसे खाता ? उसे हार माननी पड़ी । फिर सारी ककड़ियों की कीमत चुका दी । अब उसे पता चला कि दुनिया में सेर को सवा सेर भी मिल जाता है । ●

चार लाख रुपए

—राजेन्द्र परदेसी

रामपुर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। धन के अभाव से परेशान था। परिवार का पालन-पोषण करना मुश्किल हो गया था। एक दिन वह राजा के दरबार में उपस्थित हुआ। अपनी समस्या राजा के सामने रखी। गरीबी से छुटकारा दिलाने के लिए उनसे प्रार्थना की। ब्राह्मण की बात सुनकर राजा कुछ देर मौन रहे। फिर बोले—"गरीब ब्राह्मण देवता, आप पहले मेरे पड़ोसी राजा के पास जाएं। वहां जो आपको मिलेगा, उससे दोगुना मैं आपको दूंगा।"

यह सुनकर ब्राह्मण दुखी हुआ, लेकिन हताश नहीं। साहस जुटाकर पड़ोसी राजा के दरबार में उपस्थित हुआ। अपनी समस्या बताई। पड़ोसी देश के राजा ने ब्राह्मण से कहा—"आप एक बार फिर अपने राजा के पास जाएं। उनसे कहें कि वह जितना देंगे, मैं उसका चार गुना आपको दूंगा।"

ब्राह्मण को पड़ोसी राजा के पास भी निराशा ही हाथ लगी। वह कर भी क्या सकता था ? आधे मन से पुनः अपने राजा के दरबार में आया। पड़ोसी राजा ने जो कहा था, वह दुहरा दिया। इस पर राजा ने अपने मंत्री से कहा—"ब्राह्मण को कुछ देना चाहिए, इसलिए इन्हें एक तोता लाकर दे दें।" आदेश पाते ही मंत्री ने एक तोता लाकर ब्राह्मण को दे दिया।

ब्राह्मण तो इस आशा में था कि उसे धन की प्राप्ति होगी, लेकिन उसके स्थान पर तोता देखकर वह कुछ सोचने लगा। राजा ने सोचा, शायद ब्राह्मण की इच्छा अभी पूरी नहीं हुई है। उन्होंने अपने मंत्री को ब्राह्मण को एक बंदर देने का भी आदेश दिया।

ब्राह्मण को अपना ही भरण-पोषण मुश्किल था, ऐसे में तोता और बंदर लेकर वह क्या करे ? वह यही सोच रहा था कि राजा ने मंत्री को पुनः आदेश दिया—"ब्राह्मण की स्थिति को देखते हुए एक दासी और एक दास भी दे दिए जाएं।" राजा का आदेश होते ही मंत्री ने उस ब्राह्मण को एक दासी और एक दास भी लाकर दे दिए।

ब्राह्मण सोचने लगा कि वह जितनी देर राजा के सामने खड़ा रहेगा, उसकी मुसीबत बढ़ती ही जाएगी। इसीलिए तोता, बंदर, दासी और दास ले, पश्चात्ताप करते हुए पड़ोसी राजा के पास गया।

पड़ोसी राजा ने ब्राह्मण के पास एक तोता देखा, तो उसने अपने मंत्री को चार तोते लाकर देने का आदेश दिया। मंत्री चार तोते लाकर देता, इसके पहले ही ब्राह्मण के साथ आया तोता बोला—"महाराज, लेकिन यह ध्यान रहे कि आपका तोता मेरी तरह वेद और उपनिषद पढ़ने वाला हो।"

तोते की बात सुनकर पड़ोसी राजा को आश्चर्य हुआ। सच्चाई जानने के लिए उसके सामने एक वेद खोलकर रख दिया। तोता उसे पढ़ने लगा। उसके गुण से प्रभावित होकर वह एक लाख रुपए देने पर विचार कर रहा था। तभी तोते के द्वारा पूरा पृष्ठ पढ़े जाने पर बंदर ने उसे पलट दिया। बंदर के लिए भी एक लाख की राशि राजा देने की सोच रहा था कि ब्राह्मण ने पीठ पर कोई चीज रेंगती अनुभव की। ब्राह्मण के कहने से पहले ही दासी ने उसे निकालकर बाहर फेंक दिया। ब्राह्मण के बिना बताए ही दासी ने जान लिया कि उसकी पीठ पर कोई चीज रेंग रही है। राजा सोचने लगा कि ऐसी गुणवान दासी के लिए भी एक लाख रुपए दिए जाने चाहिएं। अब राजा मन में सोचने लगा कि इस दास में क्या गुण है, यह भी तो जानना चाहिए। यह सोचकर राजा दास से कुछ पूछने की सोच ही रहा था, तभी दास स्वयं बोल पड़ा—"राजन, सोच क्या रहे हैं ? कुल चार लाख हुए। एक लाख आपने तोते का लगाया है, एक लाख बंदर का तथा एक लाख दासी का। अब एक लाख मेरा भी हुआ, यानि कुल चार लाख रुपए।"

पड़ोसी राजा के बिना बताए ही दास द्वारा उनके मन की बात जान लेना ही दास की विशेषता थी। राजा सभी के गुणों के आगे नतमस्तक हो गया। उसने ब्राह्मण को चार लाख रुपए के साथ अनेक उपहार देकर विदा कर दिया। ●

आंटी, चीटू कहां है? एक बड़ा-सा बर्तन चाहिए

चीटू तो सुबह से गायब है। बर्तन चाहिए तो यह ड्रम ले जाओ

सारा रंग इसी ड्रम में जमा कर लेते हैं। चीटू के आते ही पूरे का पूरा ड्रम...

अरे, यह कौन है?

पहले तो चीटू था... लेकिन अब हुलिया इतना बदल गया है कि नाम भी बदलना पड़ेगा

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके कई शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० मार्च १९९१ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम- मई '९१ अंक
चित्र- एम.के. सिक्का

पुरस्कृत चित्र

सुषमा शर्मा, १४ वर्ष, द्वारा श्री सत्येन्द्र शर्मा, यूको बैंक, कांधला-२४७७७५

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—मनोज गौड़, अमझेरा, धार (म.प्र.); महिमा शाह, नई दिल्ली; गापेश कुमार नई दिल्ली; अशोक महली, रांची; एन.के. फुल्लन, गोहाटी (असम)

पुरस्कृत कथा :

मिल गया मुकुट

बहुत समय पहले चमनगढ़ राज्य में राजा सूर्यप्रताप सिंह राज्य करता था। वह अपनी प्रजा को अपनी संतान की तरह समझता था। उसके दुःख-सुख में हमेशा भागीदारी करता था। उस राज्य की प्रजा भी राजा को बहुत सम्मान देती थी।

नगर में एक विशाल मंदिर था। राजा व नगर की जनता को उस मंदिर की मूर्ति पर अटूट विश्वास था। राजा सुबह उठकर स्नान आदि करके पहले उस मंदिर में आकर पूजा करके ही भोजन करता। उसके बाद दरबार आता था। एक सुबह राजा उठा, तो उसे सूचना मिली कि मंदिर से मूर्ति के सिर का मुकुट चोरी हो गया है। राजा को इस घटना से बड़ा दुःख हुआ। उसने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो व्यक्ति उस पवित्र मुकुट को लाकर देगा या उसका पता बताएगा, उसे बड़ा इनाम दिया जाएगा।

मुकुट की चोरी को एक महीना बीत गया। लेकिन मुकुट का पता नहीं चला। राजा ने अन्न-जल त्याग दिया। अपने को महल में नजरबंद कर लिया। इस तरह राजा दिन पर दिन कमजोर होता गया। पूरे नगर में इस खबर से हर व्यक्ति को दुःख पहुंचा। सभी ईश्वर से राजा की दीर्घायु की प्रार्थना करने लगे। एक शाम एक व्यक्ति महल में आया। उसके हाथ में मुकुट था। उसने वह मुकुट राजा को दिया और अपने को चोरी के अपराध के रूप में दंड देने की प्रार्थना की। राजा ने उससे इस चोरी का कारण पूछा। उस व्यक्ति ने कहा-"गरीबी के कारण मैंने यह घिनौना कार्य किया। लेकिन जब यह पता चला कि इसकी वजह से आप स्वयं को दंड दे रहे हैं, तो मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा। अब आप मुझे दंड दें, जिससे मैं इस पाप का प्रायश्चित कर सकूं।"

राजा ने हर तरह से सोच-विचार कर, उसे माफ कर दिया। यही नहीं, उसे अपने यहां नौकरी भी दे दी।

—अनुराधा शर्मा, नागालैंड

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : सुमन, विशाखापत्तनम; रोहितकुमार, दीनानगर (पं.); मनोजकुमार ओझा, दुमदुमा (असम)।

क्या बच्चों !
तुम यह खुद बना सकोगे ?
जी हाँ !
कोरस के जादू से
यही कुशल तरीका है, और साफ़ भी.
कोरस जादू के साथ मौज मनाओ. कितना आसान और स्वच्छ तरीका. और तुरन्त भी. बहनेवाले गोंद से भी साफ़ सुथरा.
सिर्फ़ रंगीन कागज़ के टुकडे और कोरस प्रिट ग्लू स्टिक के साथ तुम खूबसूरत चीज़ें बना सकते हो. स्कूल प्रोजेक्टस, हस्तकाम और मम्मी डॅडी और दोस्तों के लिये भेंट-वस्तुयें.
Pritt
SUPER
Glue Stick
kores
मुफ्त ! यह ड्रॅगन कैसे बनाना, यह हमारे सूचना-पत्रक से जानने के लिये हमें आज ही लिखो.
वितरक :
कोरस कोरस (इंडिया) लि.,
पोस्ट बॉक्स क्र. 6558, वरली, बम्बई 400 018.
AKA/459/A/Hin

होनहार बच्चे

अभिषेक जैन आठवीं कक्षा का छात्र है। बम्बई में हुई 'राष्ट्रीय टाइपराइटिंग चैम्पियनशिप' में उसे प्रथम स्थान मिला। इस प्रतियोगिता में बच्चे-बड़े सभी भाग लेते हैं। अभिषेक सात वर्ष की उम्र से टाइप सीख रहा है। वह अंग्रेजी, हिंदी और पंजाबी भाषा में टाइप कर सकता है। अपनी कक्षा में प्रथम आता है। वह पंजाब के गुराया कस्बे का रहनेवाला है। क्रिकेट और बैडमिंटन भी खेलता है। अभिषेक 'टाइपराइटिंग' का विश्व चैम्पियन बनना चाहता है। पता है— **श्री विमलकुमार जैन, जैन कमर्शियल कालेज, गुराया (पंजाब)।**

बातें रंग-बिरंगी

दादा जी के हाथ में बल्ला : यह दादाजी कभी हाथ में बल्ला लिए दिख जाएं, तो चौंकिए मत। इन्होंने अपने बल्ले से खूब चौके-छक्के लगाए हैं। इनका नाम है दिनकर बलवंत देवधर। देवधर अब सौ वर्ष के हो गए हैं। यह भारतीय क्रिकेट के भीष्म पितामह हैं। इस बार इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है। महाराष्ट्र की जानी-मानी क्रिकेट एसोसिएशन के वह निर्माता हैं। देवधर जी ने अपने जमाने में खेल के कई कीर्तमान स्थापित किए। उनके नाम पर क्रिकेट की मशहूर प्रतियोगिता 'देवधर ट्राफी' की जाती है। इस उम्र में भी उन्हें क्रिकेट का खेल देखना बहुत पसंद है। रनजी ट्राफी में खेलते हुए उन्होंने एक सौ छियानवे रन बनाए थे।

रेगिस्तान में पानी : ऊंचे-ऊंचे उठते धूल के अंधड़, ऊंटों की सवारी लेकिन दूर तक पेड़ और पानी का नाम नहीं—ऐसे होते हैं रेगिस्तान। सऊदी अरब तथा अन्य कई अरब देशों में पीने का पानी नहीं है। इसलिए वहां समुद्र के पानी को साफ कर पीने योग्य बनाया जाता है। लेकिन उपग्रहों ने हाल ही में कुछ चित्र खींचे हैं। पता चला है कि मिस्र के रेगिस्तान में रेत के नीचे पानी ही पानी है। दरअसल यह पानी उन नदियों का है, जो कभी इस रेगिस्तान को हरा-भरा बनाए रखती थीं। उनका बहता पानी धरती ने सोख लिया होगा। यह वही पानी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यहां नील नदी से भी बड़ी नदी बहती होगी। शायद वह दिन दूर नहीं, जब रेगिस्तान में कोई प्यास से परेशान न होगा।

ठंड का करिश्मा : जाड़े में दूध, दूध से बनी मिठाइयां तथा दूसरी खाने की वस्तुएं कई दिन तक खराब नहीं होतीं। गर्मी में ये वस्तुएं कुछ ही घंटों में खराब हो जाती हैं। फ्रिज में भी खाने का सामान कई दिन तक खराब नहीं होता।

लगभग २०० वर्ष पहले—नार्वे के कुछ आविष्कारक उत्तरी साइबेरिया में लेना नदी के किनारे तम्बुओं में ठंड से बचने के लिए बैठे थे। उनके साथ कुछ कुत्ते भी थे। तभी अचानक उन्होंने अपने कुत्तों की आवाज सुनी। बाहर आकर उन्होंने देखा कि कुत्ते अपने पैरों से बर्फ खुरच रहे हैं। उन्होंने देखा कि बर्फ के नीचे मरा हुआ हाथी दबा था। हाथी का शरीर भी बर्फ की तरह जमा था। शरीर सड़ा नहीं था। यह हाथी हजारों वर्षों से बर्फ में दबा था। यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इससे उन्होंने जान लिया कि कम तापमान पर रखकर खाने की चीजों को सुरक्षित रखा जा सकता है। इसी घटना के आधार पर फ्रिज का आविष्कार हुआ।

बाल पाइंट पेन : बाल-पाइंट पेन का विकास आम जनता के लिए नहीं,बल्कि वायुयान कर्मचारियों के लिए सौ वर्ष पहले किया गया था। उड़ते हुए हवाई जहाजों में दाब परिवर्तन के कारण फाउंटेन पेन की स्याही बाहर आ जाती थी, इसलिए एक ऐसे पेन की आवश्यकता हुई,जो स्याही न छोड़े। तभी बाल-पाइंट पेन का विकास हुआ। बाल-पाइंट पेन में धातु या प्लास्टिक का एक खोल होता है। इसमें एक टोपी, स्प्रिंग, स्याही की रिफिल और रिफिल में लगी धातु की छोटी-सी एक गोली होती है। स्प्रिंग द्वारा लिखने वाले बिंदु को ऊपर-नीचे किया जाता है। इस पेन के कई लाभ हैं। इसमें बार-बार स्याही नहीं भरनी पड़ती। इससे तेजी के साथ लिखा जा सकता है। इसकी स्याही कागज पर फैलती नहीं। इसकी लिखावट पर पानी का असर नहीं पड़ता।

पत्र मिला

☐ जनवरी '९१ अंक में 'चार बेटों की गली', 'हार गया राजा', 'गूंगी राजकुमारी' विशेष रूप से अच्छी लगीं। 'बातें रंग-बिरंगी' में 'वेस्ट इंडीज' कोई देश नहीं, जानकर आश्चर्य हुआ। हम तो 'वेस्टइंडीज' को एक देश ही मानते थे। इतनी अच्छी जानकारी के लिए धन्यवाद।

—प्रवीण भंसाली, जसोल (राज.)

☐ श्रीराम का कैलेंडर आकर्षक लगा। सभी रचनाएं अच्छी थीं। **—मित्रमधु उपाध्याय, जामोरोड (असम)**

☐ नए वर्ष के अंक में 'आओ बात करें' की कथा काफी रोचक थी। साथ में श्रीराम का कैलेंडर, 'हयग्रीव' चित्र-कथा, कहानियों में 'चार बेटों की गली', 'किले का जादू', 'कंजूस बाप' विशेष उल्लेखनीय हैं।

—राजीव दीक्षित, लखनऊ

☐ 'रंग बिरंगे गुब्बारों' के साथ हम भी आकाश में उड़ लिए। हमने कैलेंडर अपने घर में लगा लिया है।

—अनुराग मना, गुड़गांव

☐ रंगों में सराबोर कविताएं दिलचस्प थीं। 'चित्र-कथाएं' 'तेनालीराम' तथा 'चीटू-नीटू' भी क्या खूब दमक रहे थे।

—अजितकुमार, पटना

☐ एक बार मैं रेलगाड़ी में जा रही थी। एक बुजुर्ग ने कहा कि अच्छी पत्रिका पढ़ना चाहती हो, तो 'नंदन' पढ़ो।

—अस्मत खातून, सिजूआ (बि.)

☐ बालाजी भगवान का चित्र अत्यंत सुंदर था। मेरा अनुरोध है कि आप स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का भी एक चित्र छापें। **—मनोहरलाल सिन्हा, धमधा (म.प्र.)**

☐ नए साल के प्रथम अंक का बड़ी बेसब्री से इंतजार था। सच्ची बधाई तो आपने मर्यादा पुरुषोत्तम राम का कैलैंडर छापकर ही दे दी।

—नारायण पंडित, सीहिजाम (सं.प.)

☐ विदेशों में धाक तुम्हारी, भारत की शान हमारी, रंग-बिरंगी 'नंदन' प्यारी, हमको प्यारी, सबको प्यारी।

—दीनानाथ महावर, लाड़पुरा (राज.)

☐ यह एकमात्र ऐसी पत्रिका है, जिससे ज्ञान के शिखर पर पहुंचा जा सकता है। इस पत्रिका को सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया जाए, जिससे हिंदी न जानने वाले भी इसे पढ़ सकें। **—रामायणजी सिंह, कलकत्ता**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : विकास वर्मा, पटियाला; राकेशकुमार गुप्ता, भरतपुर; अर्चना त्यागी, हरिद्वार।

नई पुस्तकें

अंतरिक्ष : कितना जाना कितना अनजाना—लेखक : जयप्रकाश भारती, रचना कुमार; प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, नई दिल्ली-५; मूल्य : १५ रुपए!

अचानक एक दिन मानव ने एक चांद बनाया और उसे उछाल दिया। वह पृथ्वी के चक्कर लगाने लगा। इसी तरह के नए किस्म के यान में यूरी गागरिन ने उड़ान भरी। उसने अंतरिक्ष के अंधेरे को चीर डाला। इसके बाद उड़ानें होती रहीं। उपग्रह उड़ते रहे। एक दिन मानव चांद पर जा पहुंचा। उसने अंतरिक्ष में लम्बे समय तक रहना भी सीख लिया। दूसरे ग्रहों के लिए यान भी छोड़े जा चुके हैं। अंतरिक्ष में स्टेशन बन गया है।

पुस्तक में अंतरिक्ष में मानव की रोमांचकारी सफलताओं का लेखा है। उसकी चर्चा भी है, जो इस सदी में या अगली सदी के शुरू में होगा। पुस्तक की भूमिका अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष प्रो. यू. आर. राव ने लिखी है। 'एलिस के आश्चर्यलोक' से भी अधिक अनोखा है अंतरिक्ष। उसी की रोचक और प्रामाणिक जानकारी दी गई है। अनेक चित्र भी इसमें हैं।

अंतरिक्ष को जो जटिल मानते हैं, वे भी कथा-कहानी की तरह पुस्तक को पूरा पढ़ जाएंगे।

गीतों भरी पहेलियां; कवि : घमंडीलाल अग्रवाल; प्रकाशक : पंकज प्रकाशन, सी-८/१५८ ए,लारेंस रोड, दिल्ली-३५; मूल्य : ८ रुपए।

पुस्तक में बीस कविताएं हैं। ये कविताएं 'गिलहरी', 'गुलगुला', 'जलेबी', 'झाड़ू', 'दांत', 'स्वेटर', 'रोटी बेलने का चकला' आदि विषयों पर हैं। चित्र अच्छे हैं, लेकिन छपाई साधारण।

अजगर से मुठभेड़; कवि : रामवचनसिंह आनंद; प्रकाशक : साहित्य भंडार, ५० चाहचंद, इलाहाबाद; मूल्य : १० रुपए।

आठ लम्बी कविताएं हैं। आमतौर पर बच्चों के लिए लम्बी कविताएं कम लिखी जाती हैं। इनमें रवानगी है। हर कविता में एक कहानी छिपी है। क्या ही अच्छा होता,यदि पुस्तक की छपाई और कागज भी अच्छा होता।

टेसूजी की भारत यात्रा; राष्ट्रबंधु; प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मूल्य १२ रुपए।

पुस्तक में छब्बीस कविताएं हैं। टेसूजी की यात्रा के बहाने भारत के सभी पचीस प्रदेशों की यात्रा हो जाती है। छोटी-छोटी कविताओं में सरल भाषा में उस प्रदेश के रहन-सहन, रीति-रिवाज,त्यौहार आदि का वर्णन है। प्रदेश का नक्शा भी है। पुस्तक के चित्र भी अच्छे हैं।

शिब्बू पहलवान; लेखिका : क्षमा शर्मा; प्रकाशक : ईशान प्रकाशन, सी-३, से. १५, नोएडा-२०१३०१; मूल्य : ८ रुपए।

एक थे शिब्बू पहलवान। पहलवानी के साथ-साथ उनके हाथ भी खुजलाते थे। जब भी किसी पर जोर-जुल्म होता देखते, तुरंत ताल ठोक कर मैदान में कूद पड़ते। —शिब्बू पहलवान के ऐसे ही रोचक प्रसंगों की कहानी पुस्तक में है।

बड़े अक्षरों में छपी पुस्तक में दो रंग के चित्र हैं। भाषा सरल है। बच्चे पुस्तक पसंद करेंगे।

मां की सीख : कवि : शिवबचन चौबे; प्रकाशक : गरिमा प्रकाशन, ४/३ बाई का बाग, इलाहाबाद; मूल्य : १० रुपए।

एक दर्जन कविताओं में 'कौवा और कबेलवा', 'देसी कुतिया', 'स्कूल की छुट्टी' अच्छी कविताएं हैं। लेकिन कहीं-कहीं ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है, जिसे बच्चों को अपने बड़ों से बोलने की सीख नहीं दी जा सकती। पुस्तक के चित्र आकर्षक और छपाई अच्छी है।

शीर्षक बताइए : परिणाम

जनवरी '९१ अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

मित्रों का मुझको इंतजार, फूलों का मैं लाया उपहार ।
—हरीश बजाज, द्वारा चुनीलाल नथमल, पो. हिमतसर, बीकानेर (राज.) ।

नए वर्ष का यह संदेश, फूलों-सा महकाओ देश ।
—संजय बंसल, ४/१, साउथ एंड पार्क, कलकत्ता-२९ ।

नया साल खुशियां लाया, फूलों बीच मैं मुसकाया ।
—समीर, ५/८, सैक्टर-१, पुष्प विहार, साकेत, नई दिल्ली-१७ ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : शिव भगत राम, २४ परगना (प. बं.); नीलमकुमारी गुप्ता, तुलसीपुर (उ.प्र.); लोपमुद्रा महांति, भुवनेश्वर (उड़ीसा); विनोदकुमार, मोहाली (चंडीगढ़) ।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर टंगे बोर्ड की ऊपरी चौखट चौड़ी है ।
२. डाक्टर के कोट का पिछला एक बटन गायब है ।
३. उसके पीछे रखी मेज की एक टांग कम चौड़ी है ।
४. उसके जूते का डिजाइन बदल गया है ।
५. तिपाई पर रखे गिलासों में से एक में भरी दवा काली है ।
६. रिंग मास्टर के हंटर में अधिक बल हैं ।
७. उसका मुंह खुला है ।
८. एक्सरे मशीन के पाइप पर एक डायल नहीं है ।
९. शेर की पूंछ पर बालों का गुच्छा बड़ा है ।
१०. उसके पिछले पैर का पंजा बाहर निकला हुआ है ।

पुस्तक पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. सचिन श्रीवत्स, १३ वर्ष, द्वारा नरेंद्र श्रीवत्स, ग्रा.+पो. सियालना, जम्मू-कश्मीर; २. पप्पू, १६, द्वारा एस.सी. साहू, अनुमंडलीय कृषि पदाधिकारी, गढ़वा, पलामू (बि.); ३. संजय शर्मा, १६, सैक्टर ९, म.नं. ८५७, फरीदाबाद; ४. प्रेमचंद, १६, द्वारा ईश्वरसिंह, पो. दौराला, मेरठ; ५. सुबोधकुमार दवे, १४, को-आपरेटिव बैंक, माहिदपुर रोड (म.प्र.); ६. मनोजकुमारसिंह, १२, पो. भवराजपुर, सिवान (बि.); ७. कौशाम्बी कुमारी, १५, बिहार रोड, हिलसा, नालंदा; ८. विशाल तिवारी, १६, मीरा, दातार कम्पाउंड, शंकरनगर, रायपुर; ९. कंवरजीतसिंह, १५, ३९२९/२, पटेल रोड, अम्बाला; १०. विनयकुमार, १५, राजेंद्र भवन, मेनरोड, हिलसा, नालंदा ।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. अनुराधा मोहन, १६ वर्ष, २४१, आर.एल. माडल टाउन, जब्बी गुरुद्वारा रोड, यमुनानगर (हरि.); २. रेणु जैन, १६, ए-२६७, शास्त्रीनगर, जोधपुर; ३. राहुल जैन, १६, ४, रावरपुरा, ललितपुर (उ.प्र.); ४. प्राणनाथ पाठक, ११, म.नं. १, बस डिपो के सामने, पूर्णियां; ५. स्मिता शाह, १३, सीरी विद्या मंदिर, पिलानी (राज.); समीर जोशी, १०, ३४/२, रामजे रोड, तल्लीताल, नैनीताल; ७. स्मिता गर्ग, १६, ३८५, राधा दामोदर गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर; ८. राजेश मनचंदा, १६, ई-२३०, अर्जुन गेट, करनाल; ९. करुणा हेम्ब्रम, १३, पो. मोहुल पहाड़ी, जि. दुमका (बि.); १०. कुलप्रीतसिंह, १४, एल/१०८, शिवालिकनगर, बी.एच.ई.एल. हरिद्वार; ११. राजीव गोस्वामी, १६, ५-बी, केदारनाथ, अणुशक्ति-नगर, बम्बई; १२. प्रमोदकुमार रोहिला, १५, पो. सनवाड़, उदयपुर (राज.); १३. पवनकुमार पाल, १०, ग्रा.+पो. राजगंज, धनबाद; १४. कृष्णमोहनमणि त्रिपाठी, १३, जामबाद कोलियरी, पो. बहुला बाजार, बाटा चौक, कटिहार (बि.); १६. नीलेशकुमारसिंह, १२, धतूरी टोला, बलिया; १७. विजेंद्रकुमार, १०, ग्रा. बाच्छुसर, पो. मंदरपुरा, श्रीगंगानगर; १८. जितेंद्र, १०, सैक्टर ४० सी. म.नं. २७५१, चंडीगढ़; १९. भास्कर मिश्र, १०, ग्रा.+पो. खउर कोठी, रीवा; २०. राहुल अग्रवाल, ९, के-२३/७० दूध विनायक, वाराणसी ।

डाक टिकट संग्रह तथा भ्रमण में रुचि :

१. नम्रता भूषणिया, १२ वर्ष, महासती मंदिर मार्ग, भाटापार (बि.); २. रमनीश गुप्ता, १६, गली ६, म.नं. १८०१/बी, नई बस्ती, भटिंडा; ३. रचनाकुमारी, १३, द्वारा डा. छोटेलाल दास, मसकंद बरारीपुर, चम्पानगर, भागलपुर; ४. विनोदकुमार, १३, मुरारीलाल भगवानदास, नयागंज, रायगढ़; ५. पवन कालरा, १५, २०, कुमारन स्ट्रीट, कामराजनगर, पांडिचेरी; ६. धर्मराजकुमार, १३, दिरावर चौक, मंगल तालाब के सामने, पटना; ७. शशि सिन्हा, १६, सैक्टर-१४, बी/३७३, राउरकेला; ८. अनुरागकुमार, १०, वशिष्ठ पांडेय, रामनगर, प. चम्पारण; ९. संजीवकुमार, १४, के.यू. १४३, पीतमपुरा, दिल्ली; १० समसाद अहमद, १२, द्वारा वसीरउद्दीन, बी.एस. लेन, पटना ।

नंदन ज्ञान-पहेली : २६५

परिणाम

इस बार पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया । दो सर्वशुद्ध हल आ गए । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

सर्वशुद्ध : दो : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. अभिरेंद्रकुमार सिंह, कुलटी (बर्दवान); २. मुकेशकुमार गुप्ता, सबलगढ़ (म.प्र.) ।

एक अशुद्धि : बारह : प्रत्येक को पचास रुपए

१. राजूकुमार, पटना; २. सुनीलकुमार, जवारामगढ़ (राज.); ३. अभिषेक द्विवेदी, मुंगेर; ४. संतोषकुमार झा, समस्तीपुर; ५. राजाराम गुप्ता, दतिया; ६. प्रमोदकुमार, सहरसा; ७. आशीष उनियाल, देहरादून; ८. शशिभूषण प्रसाद, पटना; ९. महेंद्रसिंह रावत, जयपुर; १०. गौतम चौधरी, सीतामढ़ी; ११. रमेशकुमार तिवारी, सिगरा, वाराणसी; १२. संदीपकुमार घोष, भागलपुर ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४